* श्री गणेशाय नमः *

भक्त-तुलसीदास

नाटक ।

लेखक व प्रकाशक,

पुरुषोतमदास मारवाड़ी

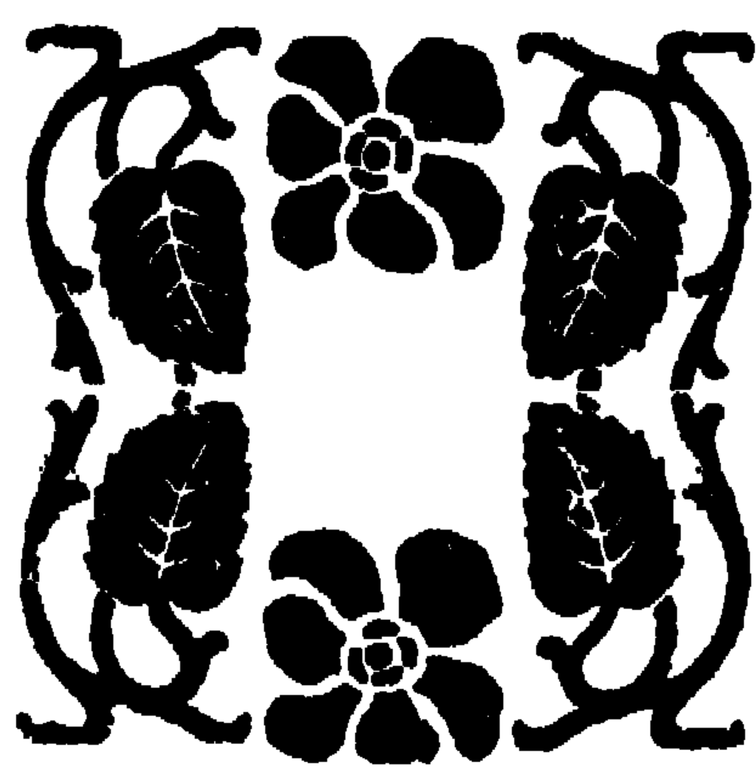
जिला सारन निवासी (हाल मुकाम)

छपरा ।

प्रथम वार १००० } सर्वाधिकार रक्षित { बढ़िया कागज १।) न्योछावर
घटिया कागज १) न्योछवर

सं० १९७८

प्रकाशक,
पुरुषोतमदास मारवाड़ी ।
जिला सारन निवासी (हाल मुकाम)
छपरा ।



मुद्रक,
हरीहरलाल ।
श्रीहरी प्रेस, २०१ हरीसन रोड,
कलकत्ता ।

नाटकके पात्र ।

—::※::—

पुरुष ।

१—सूत्रधार	...	खेलके प्रबन्ध कर्त्ता ।
२—श्रीतुलसीदासजी	.. ...	एक सच्चा ईश्वर भक्त ।
३—आत्माराम	.	श्रीतुलसीदासके पिता ।
४—श्रीरामचन्द्र	..	भगवान ।
५—नरसिंहदास	.	श्रीतुलसीदासजीके गुरू ।
६—दीनबन्धु	..	श्रीतुलसीदासजीके ससुर ।
७—श्यामसुन्दर	.	,, साला ।
८—भूत	. .	,, हनुमानजोका पता ब०
९—पण्डित	. ..	रामकथा बांचनेवाले ।
१०—मधुशूदनाचारी	... .	शास्त्रियोंके गुरू ।
११—अकबर बादशाह	.. .	देहलीके सम्राट ।
१२—तानसेन	.	प्रसिद्ध गायक ।
१३—श्रीहनुमानजो	.	महाबीर पवन पुत्र राम से० ।

वजीर, सिपाही, नौकर, भेषधारी, संत, पण्डा, आडम्बरी, भिखमंगा, ब्राह्मण, नांदी, योगी, शास्त्री चोर, भांड़, सूबेदार, राही, साधू, बैष्णव, राजकुमार, शिव ।

स्त्री ।

१—कलावती	. . .	आत्मारामकी स्त्री ।
२—चन्द्रावती	... .	दीनबन्धूकी स्त्री ।
३—कमलावती	.	श्रीतुलसोदासकी स्त्री ।

श्री शारदा, श्रो गङ्गाजी, नटी ।

दासी, वेश्या नाचने गानेवाली, मंदाकिनी इत्यादि ।

प्रेसके भूतोंकी गलतीसे प्रथम अङ्कका दूसरा दृश्य
नहीं छप सका यह दृश्य १४ वें पेजकी ११ वीं लाइनके
आरम्भ होता है, पाठकगण सुधार लें।

श्रीशारदा देव्यै नमः ।

तुळसी दास

नाटक ।

प्रथम अंक

—:※※:—

वन्दना

—:०:—

गायन

आवो मिल सद्गुरको तनमनसे प्यार करें ।
सुन्दर सूरत मोहनी मूरत लखि २ नाम येही
उचार करें ॥
सुन मृदु बचना देखके रचना हिय दृढ़ धरि
फिर विचार करें ।
कर यह कामहिं सटि सब जामहीं लगा अर्जी
गलेका निज हार करें ॥
बिगड़ी बनावें इन्हहिं मनावें हितु अपने यह
हरदम सम्हार करें ।
हरित लताहो कहत चेताही लपटि चरनोंमें
इनके बिहार करें ॥

(नटी और सूत्रधारका प्रवेश]

नटी०—प्राणेश! कहिये, आज इन दर्शक वृन्दोंके लिये कौनसा अति उत्तम अभिनय दिखलानेका निश्चय हृदयमें ठहराया है, क्या कुछ बिचारमें आया है?

सूत्र०—प्यारी! अभी तो कुछ भी मनमें नहीं समाया है, क्या तुम्हारे कुछ समझमें आया है? हृदयमें बुद्धिका प्रकाश छाया है?

नटी०--जी हां मेरे ती यह मनमें भाया है जिसका यह तात्पर्य्य है कि कोई सा नाटक वा चरित्र क्यों न हो, परन्तु वह आदिसे अन्ततक प्रेम रसके स्वादोंसे भरा हो और साथ २ जिसमें आनन्ददायक भक्तोका सत्सङ्ग सुखका भी प्रभाव पड़ा हो क्यों मेरा कहना आपके ध्यानमें आया?

सूत्र०—हाँ प्यारी। तुम्हारे यह सुखद शब्द सुनके अत्यन्त हर्षको पाया! परन्तु अभीतक मेरे ख्यालमें यह नही आया कि कौनसा अभिनय इन दर्शक वृन्द प्रेमियोंकी सेवामें अर्पण करूं? जिससे कि इनके हृदयमें अपूर्व आनन्दको भरूं भला कुछ तुम भी तो बतावो, और अपनी अक्लको दौड़ाओ, कि कौनसा खेल खेलना समयानुसार आजके दिनके लिये इन लोगोंको दिखलाना ठीक होगा जो कि लोक परलोक दोनोंहीमें नीक होगा?

नटी०—स्वामीनाथ? सुनिये मैं निज बुद्धिके अनुकूल कहती हूं, यदि आपको अच्छा लगे तो कीजियेगा और यदि सुयोग्य

समझियेगा तो अपने हृदयमें उसे स्थान दीजियेगा, वैसे तो एकसे एक प्रभुके भक्त इस संसारमें, बढ़े चढे हो गये हैं जो कि विख्यात हैं जिनको चर्चा भी दिन रात है, परन्तु मेरे ख्यालमें तो श्री १०८ संतरसवन्त श्री ६ पंडित जानकी वर शरणजी अवध लक्ष्मण किला निवासी थे, उनके शिष्य, हाल मुकाम छपरा निवासी पुरुषोत्तम शरण मारवाड़ीके लेखनीसे लिखा हुआ भक्त श्रीमद्गोस्वामी तुलसीदासजीका नाटक मन भाया हैं, क्यों कि उन्होंने अपूर्व ही आदिसे अन्ततक प्रेमका दृश्य उसमें दिखाया है, स्वामी! मुझे तो वही बहुत प्रसन्न आया है।

सूत्र०—वाह वाह प्यारी! तुमने तो यह खूव अच्छे समयपर याद दिलाया है, तुम्हारी बुद्धि धन्य है जो तुमने ऐसा विचार पाया हैं।

नटी०—पर स्वामी! अब इस उत्तम कार्य्यके करनेमें विलम्ब होना नहीं चाहिये, क्यों कि इस अमूल्य समयको पाकर व्यर्थ नहीं खोना चाहिये।

सूत्र०—प्यारी! ठीक है, पर कुछ सोचके साथ बिचार है।

नटी०—हैं? क्या कोई चीज़की दरकार है?

सूत्र०—देखो प्यारी? इस समय किसका ज़वर अधिकार हैं?

नटी०—स्वामी? समझाकर कहिये, किसलिये आपकी तबियत लाचार है?

सूत्र०—प्यारी ! क्यों तुम भूलती हो, देखो आज कल कितना भारी कलयुग दुःखदाईका सरोकार है ?

नटी०—हां स्वामी ! यह आपका कहना ठीक है, पर आपने इसका क्या इन्तजाम करनेका अपने दिलमें ठहराया है ?

सूत्र०—प्यारी यही कि हमारे शीशके उपर किसी रक्षक जबरदस्तकी शाया रहे, जो कि विघ्नको हटाकर यह उत्तम कार्य्य निरविघ्न समाप्त करानेकी भी साथ साथ दाया करे।

नटी०—ठीक है स्वामी, पर कहिये इसके लिये किसको मनाओगे?

सूत्र०---प्यारी ! तुम अपनी सम्मति प्रगट करो कि किसे मनाया जाय ? जिससे अपने रुचिके अनुकूल उससे सब कुछ पाया जाय ? फिर इन सभाके दर्शक वृन्दको खूब हरषाया जाय और सुख पानेका मार्ग भी बताया जाय ?

नटी०—(नखरासे) प्यारे ! आप तो बार बार मुझसे ही पूंछते हैं भला कुछ अपनी बुद्धिसे भी तो काम लीजिये लो मैं चलीजाती हूं, अब जीमें सोच समझ करके कार्य्यकर संसारमें अपना नाम कीजिये, परमार्थकी तरफ़ भी ध्यान दीजिये (जानेको पैर बढ़ाती है ।)

सूत्र०—(झपटके पकड) प्यारी ? भला कहां जाती हो इसका हेतु सुनो पुरुष माया रूपी स्त्रीपर मोहित हो रहा है, इसलिये उसका बुद्धि बिचार सब सोकर खोरहा है इसलिये हीतुमसे सम्मति लेता हूं और तुम्हें बड़ाई अर्थात प्रशंसा पत्र भी देता हूं।

नटी०—खैर प्यारे जब यह हाल है, तो सुनिये सुनाती हूं, सब बताती हूं, बुद्धिको मालिक, श्री १०८ स्वामी जानकी बरजीने श्री शारदाजीको बनाया है उनको जिसने रिझाया है वही तो जानिये कवियोंमें शिरो मणि कवि कहलाया है, और प्रभुको भी उनको अनुग्रहके प्रतापसे पाया है, निरविघ्न कामकर इस दुःखदाई असार संसारमें हरषाया है अब उन्हींको कर जोड़कर मनाना चाहिये विनय सुना कर ढिगमें आनेके लिये उनसे अर्जको लगाना चाहिये। मेरी तो यही सम्मति है और यही उत्तम रास्ता ध्यानमें आया है।

सूत्र०—प्यारो तुम्हारो समझ बहुत ही अच्छी सराहने योग्य है। उस प्रभुको धन्य है जिनकी कृपाकी बदतौल तुमने ऐसा विचार पाया है इस तुम्हारी सम्मति ने मेरा रोम रोम हरषाया है। अच्छा अब श्रीशा रदाजीको मनाया जाय और हमलोगोंके ढिग आनेके लिये उनसे शीघ्र अर्ज लगाया जाय।

नटी०—हां स्वामी! मैं तैय्यार हूं, उनका गुण गाया जाय।

[दोनोंका हाथ जोड़कर श्रीशारदाजीके
आनेके लिये प्रार्थना करना]

गायन

सुनहु मातु यह अर्ज हमारी।
करहु हियेमें बुद्धि प्रकाशहि सब दुख दोष बिदारी॥

सुन्दर अतिशय मन भाये।
प्रभुने किये समय सुहाये॥
दीजिये मोहींको अब जो मेरे हिये माहिँ समाई।
सब विधि बाजे बजवाओ॥
भिक्षुकको दान दिवाओ।
हरदम अब हिय हरषाओ॥
कीजिये सेवा पूजा अपने हितु प्रभुहिँ मनाई॥
आशा लगाके आवें।
दीजै सो वह सुख पावें॥
तुम्हरो दुख दोष नशावें।
पुरुषोत्तम प्रभुसे यह बार बार मैं अर्जा लगाई॥

आत्मा०—(इनाम दे) अच्छा तुम महलमें जाकर पूरी तरहसे बालक एवं स्त्रीका निगाह रखना।

दासी०—(इनामले खुश हो) बहुत अच्छा जो आज्ञा।

(दासीका प्रस्थान)

(राम टहल नौकरका गायकोंको साथ लिये हुये आना)

राम०—स्वामीको मैं प्रणाम करता हूं। आपकी आज्ञाके मुताबिक यह सब नाचने गानेवाली हाजिर हैं।

आत्म०—(नाचने गानेवालियोंकी ओर घूमकर) आप सब लोग नाचकर मंगल गान करो, और सबको प्रसन्नकर सन्मान करो।

सब गानेवाली—(सर झुकाकर) बहुत अच्छा जो आज्ञा।

(सबका नाचना)

गायन

कैसी खुशीकी घड़ी आई ॥
सुनकरके सब मन भाई।
होरहा आनन्द घर २ में बड़े भाग हम सब पाई ॥
सदा जियें तुम्हरो बालक, प्रभुसे कहें हम शिर नाई।
पुरुषोत्तम प्रभु प्यारे सदा अस सुख देवें हरषाई ॥

[आत्मारामका गानेवालियोंको इनाम देना उनका सर झुकाकर प्रस्थान और भांड़ोंका आना]

भांड़०—महाराजकी सदा जै होय, हमलोग, आपके पुत्र हुआ ऐसा सुनकर बहुत दूरसे दौड़ते हुये चले आते हैं, आपकी जै बनी रहे वो आनन्द घनी रहे, यही मनाते हैं।

दू० भांड़—दाताकी दूर बलाय रहे, सब कोई चहे।

ती० भांड़—हम सदा मनाया करें, खूब माल पाया करें।

चौ० भांड़—अजी खाया करें, मुटाया करें; लुटाया करें, बचा करके बहुत कुछ, घरमें भी धर आया करें, क्यों कैसी कही, जो सबके मन भाया करें हँसकर सर हिलाया करें।

आत्मा०—(हँसकर) साहब! आपलोग कौन हैं? और क्या करते हैं?

१ भांड़—क्या आप हमें पहिचानते नहीं।

२ भांड़—क्यों साहब जानते नहीं।

ती० भांड़—(मुंह बनाकर) अजो भाई इस समय यह कैसे जानेंगे, क्योंकि इन्हें हमलोगोंको जानकर कुछ देना होगा, देना"'।

चौ० भांड़—साहब हमलोग भांड़ कहलाते हैं, पर मयफलोंके सांड़ कहलाते हैं जहां जाते हैं तहां खूब सन्मान पाते हैं, मनमानी वस्तु लेकर तब कदम आगेको बढ़ाते हैं झूठको सच और सचको झूठ करके दिखाते हैं क्यों! अब तो आपके समझमें आया?

आत्मा०—हां समझमें तो आया, पर आपने अपना कुछ हुनर तो नहीं दिखाया।

प० भांड़—(सब भांड़ोंसे) भाई! अब हमलोगोंका जो काम है, उसे करना चाहिये जैसे हो तैसे इनसे खूब मालको लेकर (पेट दिखा) इसको भरना चाहिये।

सब भांड़—(पेटको ऊँचाकर) हां पाकर इसीमें धरना चाहिये।

(सबका गाना)

आये हम सुनि बालक तेरे, जै जै कार मनाते हैं।
बिना लिये मन भाई चीजें कहींसे कभी न जाते हैं॥
गाना नाचना काम हमारा नकलहु खूब बनाते हैं।
हुशियारोंको उल्लू करके उनसेहुं पैसा लाते हैं॥
जहँ तहँ ठगना काम हमारा इसीसे पेट चलाते हैं।
पुरुषोत्तम प्रभु आनन्द होवे हरदम अर्ज लगाते हैं॥

आत्मा०—अरे रामटहल इधर तो आना।

राम०—(आकर) कहिये सर्कार क्या दर्कार।

आत्मा०—इन भांड़ोंको इनाम देकर विदा करो।

राम०—बहुत अच्छा।

सब भांड़—दाताकी सदा जै जै कार बनी रहे।

(रामटहलके साथ भाड़ोंका प्रस्थान)

आत्मा०—अरे रामटहल इधर आ।

राम०—(आकर) कहिये महाराज।

आत्मा०—तुम यहाँसे शीघ्र जावो और एक अच्छे ज्योतिषी पंडित, कुण्डली बनानेके लिये अपने साथ बुलालाओ।

राम०—बहुत अच्छा जो आज्ञा।

(रामटहलका शीस नवाकर प्रस्थान करना और रास्तेमें स्वयं विचार करते नजर आना)

राम०—(स्वयं) अब मैं क्या करूं! किससे पूछूं जो पता पाऊं कि, अच्छा विद्वान ज्योतिषी कहाँ रहता है, क्योंकि मालिकका काम करना मेरा धर्म्म है और उत्तम कर्म्म है।

[श्रीसीताराम नाम रटते हुये एक वैष्णवका आना और रामटहलको उदास देख पूंछना]

वैष्णव—क्यों भाई आप कौन हैं, और किस बातकी चिन्तामें आपका जी उदास है।

राम०—(प्रणामकर) भाई हमें एक विद्वान ज्योतिषी पंडित कुण्डली बनानेवालेकी दर्कार है पर बिना जाने कहाँ जावें जो उसे पावें। इसी बातकी चिन्तासे हतास हो उदास हैं।

वैष्णव—अच्छा अब चिन्ताको हटाओ ओर श्रीसीतारामजी महाराजके नामको रटकर उनको मनाओ, और सीधे तीर्थ श्रीप्रयाग राजको जाओ, वहाँ नामी पंडित ब्रह्मानन्द ज्योतिषी प्रसिद्ध हैं, उन्हे बुला लाओ और अपना काम बनाओ।

रामटहल—(प्रणामकर) परमात्मा आपका सदा भला करें, हमको आपने बड़ेभारी दुःखसे बचाया जो विद्वान ज्योतिषीका नाम और पता बताया। जै जै श्री सीताराम महाराजकी।

वैष्णव—जै २ श्रीसीताराम महाराजकी।

[दोनोंका श्रीसीताराम २ कहते हुये दो ओरको प्रस्थान]

स्थान श्रीतीर्थ राज प्रयाग ब्रह्मनन्दका मकान

तहाँ ब्रह्मानन्द, ज्योतिषीका बैठे हुए

नजर आना और रामटहल

नौककरका उनसे मिलाप

राम०—श्रीपंण्डितजी महाराज मैं आपको प्रणाम करता हूं

(प्रणाम करना)

ब्रह्मा०—आनन्द रहो, हाल कहो, कहाँसे आये हो और हमारे लिये क्या लाये हो ?

राम०—राजापुरसे आया हूं, आत्मारामके पठाया हूं, आपके लिये चलनेकी खबर लाया हूँ।

ब्रह्मा०—तुम्हारा क्या नाम है और हमसे क्या काम है ?

राम०—मुझे लोग रामटहलके नामसे पुकारते हैं, हम आपको अपने स्वामीके पास ले जानेके लिये आये हैं।

ब्रह्मा०—क्या कोई जरुरी काम है?

राम०—जीहाँ उनके घर पुत्र पैदा हुआ है, उसकी जन्मकुण्डली बनाना है, और फूल कहकर उन्हें जनाना है।

ब्रह्मा०—(खुश हो ऐसा)?

राम०—जीहाँ शीघ्र चलिये।

ब्रह्मा—पर इस काम करनेके लिये क्या परतोषिक मिलेगा?

राम०—जैसा काम करके खिलाइयेगा, और यदि फल बढ़ियाँ कहकर सुनाइयेगा तो पारतोषिक पाकर खुश हो जाइ-येगा।

ब्रह्मा०—अच्छा तोतुम सवारीका इन्तजाम करके शीघ्र लाओ।

राम०—यह तो आपका कहना ठीक है, पर हमको हमारे स्वा-मीने सवारीका भाड़ा नहीं दिया है तब हम गरीब आदमी कहाँसे खर्च पावें जो आपके लिये सवारीका इन्तजाम करके लावें?

ब्रह्मा—तब भला कहो तो सही कि किस तरहसे चलना होगा?

राम—हम क्या कहें, यदि आपको द्रव्यकी दर्कार होतो पैरों पैरों चलिये या जैसे आपकी रुचि हो।

ब्रह्मा—भइया हमसे तो बिना सवारीके नहीं चला जायगा।

राम—आप अपने सवारीका इन्तजाम कर लीजिये।

ब्रह्मा—तो जो खर्च लगेगा वह कौन देगा?

वैष्णव—अच्छा अब चिन्ताको हटाओ ओर श्रीसीतारामजी महाराजके नामको रटकर उनको मनाओ, और सीधे तीर्थ श्रीप्रयाग राजको जाओ, वहाँ नामी पंडित ब्रह्मानन्द ज्योतिषी प्रसिद्ध हैं, उन्हे बुला लाओ और अपना काम बनाओ।

रामटहल—(प्रणामकर) परमात्मा आपका सदा भला करें, हमको आपने बड़ेभारी दुःखसे बचाया जो विद्वान ज्योतिषीका नाम और पता बताया। जै जै श्री सीताराम महाराजकी।

वैष्णव—जै २ श्रीसीताराम महाराजकी।

[दोनोंका श्रीसीताराम २ कहते हुये दो ओरको प्रस्थान]

स्थान श्रीतीर्थ राज प्रयाग ब्रह्मनन्दका मकान
तहाँ ब्रह्मानन्द, ज्योतिषीका बैठे हुए
नजर आना और रामटहल
नौककरका उनसे मिलाप

राम०—श्रीपण्डितजी महाराज मैं आपको प्रणाम करता हूं
(प्रणाम करना)

ब्रह्मा०—आनन्द रहो, हाल कहो, कहाँसे आये हों और हमारे लिये क्या लाये हो ?

राम०—राजापुरसे आया हूं, आत्मारामके पठाया हूं, आपके लिये चलनेकी खबर लाया हूँ।

ब्रह्मा०—तुम्हारा क्या नाम है और हमसे क्या काम है ?

राम०—मुझे लोग रामटहलके नामसे पुकारते हैं, हम आपको अपने स्वामीके पास ले जानेके लिये आये हैं।

ब्रह्मा०—क्या कोई जरुरी काम है?

राम०—जीहाँ उनके घर पुत्र पैदा हुआ है, उसकी जन्मकुण्डली बनाना है, और फूल कहकर उन्हें जनाना है।

ब्रह्मा०—(खुश हो ऐसा)?

राम०—जीहाँ शीघ्र चलिये।

ब्रह्मा —पर इस काम करनेके लिये क्या परतोषिक मिलेगा?

राम०—जैसा काम करके खिलाइयेगा, और यदि फल बढ़ियाँ कहकर सुनाइयेगा तो पारतोषिक पाकर खुश हो जाइयेगा।

ब्रह्मा०—अच्छा तोतुम सवारीका इन्तजाम करके शीघ्र लाओ।

राम०—यह तो आपका कहना ठीक है, पर हमको हमारे स्वामीने सवारीका भाड़ा नहीं दिया है तब हम गरीब आदमी कहाँसे खर्च पावें जो आपके लिये सवारीका इन्तजाम करके लावें?

ब्रह्मा —तब भला कहो तो सही कि किस तरहसे चलना होगा?

राम —हम क्या कहें, यदि आपको द्रव्यकी दर्कार होतो पैरों पैरों चलिये या जैसे आपकी रुचि हो।

ब्रह्मा —भइया हमसे तो बिना सवारीके नहीं चला जायगा।

राम —आप अपने सवारीका इन्तजाम कर लीजिये।

ब्रह्मा —तो जो खर्च लगेगा वह कौन देगा?

राम —जो माल लेगा वह।

ब्रह्मा —तो क्या उसी दक्षिणामें यह भी जोड़ा जायगा ?

राम —जी हाँ, वल्कि इसके साथ साथ कुछ मेरा भी हिस्सा जुड़ाके यह पायगा।

ब्रह्मा —क्या तुम भी लोगे रुपैया और पैसा ?

राम —तब आप चाहते हैं कैसा ?

ब्रह्मा —तो यदि हम नहीं जायेंगे ?

राम —तब हम दूसरेको ले जायेंगे, तब आप क्या पाएगें।

ब्रह्मा —(स्वयं) क्या कहूं लालचने हर तरहसे जानेके लिये मजबूर किया, क्योंकि जब यह दूसरेको ले जायगा तो मेरे क्या हाथ आयेगा। हमारी यही जीविका ठहरी, इस लिये जो कुछ मिल जाय वही अच्छा है।

(प्रकट) अच्छा भाई तुम दूसरेको मत लेजाओ हम बहुत शीघ्र अपने सवारीका इन्तजाम करके अते हैं सो तुम जाकर अपने स्वामीसे हमारे आनेकी सूचना कर देना।

राम —परन्तु मेरी हैरानी तो मुझे दीजिये।

ब्रह्मा —कैसी हैरानी ! क्या माँगना है ?

राम —सुनिये जो कुछ आप वहाँ पाइयेगा सो तो बगलमें छिपाकर आप अपने घरपर लाइयेगा, तो क्यो ? मुझे सूखे टरकाइयेगा।

ब्रह्मा०—अच्छा तो बताओ कि तुम क्या चाहते हो ?

राम०—हमनें आपको रोजी बताई, द्रव्य पानेकी आपके लिये तर-

कौन लगाई, ऐसी खुशखबरी सुनाई, उसका इनाम और बधाई क्या पाई।

ब्रह्मा०—भाई हमलोगोंका तो इनाम और बधाई देना आशीर्वाद है, आनन्द रहो खुश रहो।

राम०—तो क्यों पण्डितजी महराज! जब क्षुधा सतायेगी तो क्या वह आपके इस आशीर्वादसे मान जायगी? तब हम क्या खाकर उसे बुझायेंगे? या उस समय आपके नामको लेकर चिल्लायेंगे? सो तो आप दिलमें अपने विचार कीजिये फिर जो कुछ आपके उचित समझमें आवे वही मुझे शीघ्र कृपाकर दीजिए।

ब्रह्मा०—अच्छा तो तू पेट भरकर भोजन करले अपने उदरको भरले।

राम०—पण्डितजी महराज यह सब आप अपने पासमें ही रहने दीजिये, नगद रुपैया देकर अनुग्रह करना हो तो कीजिये, नहीं तो लो मैं जाता हूं (जानेको पैर बढ़ाता है।)

ब्रह्मा०—सुनो सुनो जाओ मत लो यह एक रुपैया।

(एक रुपैया देनेको चाहता है)

राम०—(गुस्सेसे) क्यों मैं इसीके लायक हूँ, रखिये मैं जाता हूँ।

जाना (ब्रह्मानन्दका उसे पकड़कर लाना)

ब्रह्मा०—(गिड़-गिड़ाकर) सुनो भाई गुस्सा मत करो जरा हमारे तरफ भी तो गौर करो, हम भी गरीब ब्राह्मण हैं,

यह विचारकर जो कुछ देते हैं उसे स्वीकार करो, व्यर्थकी तकरार मत करो अच्छा लो यह दो ही रुपया लो।

(दोनोंका प्रस्थान)

तीसरा दृश्य

—(*:-:*)—

[स्थान आत्मरामका मकान]

—*—

(आत्मारामका बैठे हुए नजर आना सवारीपर चढ़े पण्डित ब्रह्मानन्दका रामटहलके साथ प्रवेश।)

आत्मा०—श्री पण्डितजी महाराजको मैं सर झुकाकर सादर प्रणाम करता हूं।

(सर झुकाकर प्रणाम करना)

ब्रह्मा०—महाराज मैं भी आपको नमस्कार करता हूं। (हाथ जोड़ना।)

आत्मा०—महाराज आज मेरे अहो भाग्य है, जो आपने मुझे दर्शन दिया।

ब्रह्मा०—धन्य उस कृपानिधान ईश्वरकी अनुग्रह है, जो आपने मुझे याद किया और बड़ाई दी, पर इसका क्या कारण है।

आत्मा०—मेरी स्त्रीने बालक जाया है, इस कारण आपको बुलाया है, सो उस लड़केको आप जन्मकुण्डली बना दीजिये

और सुयोग्य फल कहकर हमें सुना दीजिये, यही हमारी आपसे विनय है।

ब्रह्मा०—वाह वाह तब तो बड़े उत्साह और आनन्दकी बात है। जो ऐसा समय प्रभुने दिखाया है, अब आप शीघ्र कागज और कलमदवात मगाइये।

आत्मा०—बहुत अच्छा। (रामटहलको पुकारना) रामटहल ! इधर आ।

राम०—(आकर) कहिये स्वामी क्या हुक्म है।

आत्मा०—तू जल्द जा और कागज, कलम, दवात लाकर पण्डितजीको दे।

राम०—बहुत अच्छा। (रामटहलका कागज कलम दवात लाकर रखना।)

आत्मा०—लीजिये श्री पण्डितजी महाराज, कलम दवात कागज़ हाजिर है।

ब्रह्मा०—(लेकर) अच्छा अब आप मुझे बालक उत्पन्न होनेका समय तिथि, बार सब अच्छी तरहसे बताइये।

आत्मा०—आज ठीक दस दिन भये हैं, समय दिनको ठीक तेरह बजे थे, जब बालक उत्पन्न भया है, बादलका अन्धड़का बहुत जोर था दिन था लेकिन रात मालूम होती थी शनिवारका दिनथा इसीहिसाव से आप बालककी जन्म कुण्डली बनाइये और उत्तम रीतिसे विधान पूर्वक कार्य्यको सुफल करके इसके फल सब सुनाइये शंसय नशाइये।

ब्रह्मा०—बहुत अच्छा, पर थोड़ी देरके लिये आप यहांसे हट जाइये क्योंकि यह काम बिना एकान्तके बनाना कठिन है।

आत्मा०—अच्छा तो मैं एक काम करनेको जाता हूं, आप अपना काम कीजिये (आत्मारामका प्रस्थान।)

(ब्रह्मानन्द ज्योतिषीका जोड जोड़कर कागजपर लिखना सब कुछ लिखकर गणित कर जानके एकदम निराश और उदास हो स्वयं कहना)

ब्रह्मा०—(स्वयं हाथ मलकर पछताते हुए) हाय हाय यह क्या! अब मैं क्या करूं। इस बालककी कुण्डली क्या बनाई अपने इस अमूल्य समयको व्यर्थ गवांया, हाय यह बालक अपने माता पिताके लिये आठ वर्ष तक प्राण घातक और दुखदाई है, यदि मैं ऐसा कहता हूं, कि इसकी कुण्डली मुझसे नहीं बनती है तो दो बातोंकी भारी हानि होती है पहिले तो झूठ बोलनेका पाप लगता है, दूसरे मेरे नामकी ऐसी भारी प्रतिष्ठा है सो भी जाती है, और यदि अट पट फल कहकरके सुनाऊं तो आत्माराम और उनकी स्त्री दोनोंहीको कष्टके मुहमें पहुचाता हूं और जान करके भी उन्हें आफ़तमें फंसाता हूं! हाय ईश्वर अब कौनसा बहाना है? किस प्रकार संतोष पाना है? दो रुपया रामटहल नौकरको देकर हाथसे गंवाया, सवारीका भाड़ा भी अपने पाससे लगाया। लालच अपनी तरफ़ खींचता है, धर्म अपनी तरफ झुकाता है, क्या करूं और क्या न

करूं, सब विचार भुलाया ऐसी आफत आजतक सिरपर कभी नहीं आई, हाय हाय हमने किसे सताया। (थोड़ी देर सोचकर) हां याद आया मैंने बड़ी भूल की जो घरसे यात्रा करते समय परमात्माको नहीं मनाया वो रास्तेमें और यहां आकर भी उस हितकारी हरीको विनय नहीं सुनाया जन्मकुण्डली आरम्भ करते वक्त भी न मुझे ही याद आई और न किसीने याद दिलाई, उसी भूलका यह परिणाम है। वेद, शास्त्र, पुराण, संत सबहीका यही वाक्य है। (दुखी होकर) हे परमात्मा अब मेरे इस अपराधको क्षमा करो और अपनी दयालुताको याद करके मेरे दुःखोंको हरो हृदयमें आनन्द भरो॥

परमात्माको याद करते जो कहीं जाते हैं नर।
सो ही सदा निज कामको सब तौरसे पाते हैं नर॥
कैसे हूं हितु हरी भुलाना सबसे भारी पाप है।
उसीको घेरे रहते हैं जान लो सब ताप हैं॥

(आत्मारामका प्रवेश उनका पण्डितजीको उदास देखकर कहना)

आत्मा०—कहिये श्रीपण्डितजी महाराज क्या कुण्डली बनाई ?

ब्रह्मा०—जी हाँ, कुछ बनाई है और जो बाकी है वह बना रहा हूं।

आत्मा०—पर यह तो बताइये कि आपके मुखारविन्दपर ऐसी उदासी क्यों छाई है ?

ब्रह्मा०—(स्वयं) कबतक छिपाऊंगा अन्तमें तो कहनाहीं पड़ेगा (चुप रहना)

आत्मा०—आप बोलते क्यों नहीं हैं? चुप होनेका क्या सबब है?
बतलाइये बतलाइये।

ब्रह्मा०—महाराज क्या बताऊं दुःखदाई हालको किस प्रकार
सुनाऊं?

आत्मा०—श्रीपण्डितजी महाराज, दुःख और सुख तो अपने कर्मके
अनुसार है, इसमें भला क्या कुछ आपका अख्तियार है?

ब्रह्मा०—सो तो नहीं है।

आत्मा०—तो फिर बताइये क्या सोच विचार है

ब्रह्मा०—अच्छा आप प्रथम मुझे यह सुनाइये कि पुत्र प्रकट भये
प्रथम या उसके बाद कभी आपने अपने हित कर्ता श्री
जानकी बरजीको मनाया रहा? प्रसन्नताके साथ उनको
विनय सुनाया। रहा? उनका गुण गाया रहा?

आत्मा०—कभी नहीं।

ब्रह्मा०—तो बस उसीका यह फल है जो आनन्दके हटानेके लिये
उपस्थित तैयार दुःखका दल है।

आत्मा०—श्रीपण्डितजी महाराज आपकी कही हुई बात मेरे कुछ
समझमें नहीं आई।

ब्रह्मा०—भला समझमें क्योंकर आती इस समय आपकी बुद्धि
तो मंद है, इसी लिये ज्ञान होनेका दर्वाजा बन्द है।

आत्मा०—खैर तो आप ही कह करके समझाइये व्यर्थ देरकर
प्रपञ्चोंमें डाल तबियतको मत घबड़ाइये।

ब्रह्मा०—अच्छा समझिये समझाता हूं जन्म कुण्डलीके फलको

सुनिये सुनाता हूं, इस कुण्डलीवाले बालकके गुण तो बहुत अद्भुत है, पर वह आठ वर्षके बाद, प्रथम आठ वर्षतक बड़ा भारी अवगुण है, हे ब्राह्मण देवता यह बालक मूल नक्षत्रके प्रथम चरणमें उत्पन्न भया है, इस लिये तुमलोगोंके लिये अत्यन्त दुखदायी है क्यों कि मूल नक्षत्रकी आदिकी आठ घड़ी और जेष्ठाके अन्तकी तेरह घड़ी अभुक्त मूल है इसमें जो बालक उत्पन्न हो वह निज माता पिताके लिये आठ वर्ष प्राण घातक है इस लिये उसका मुख नही देखकर त्यागकर देनेहींमें माता पिताकी भलाई है!

आत्मा०—(व्याकुल होकर) हाय हाय यह आपने क्या सुनाया? हे विधाता अब कं धीरज धरूं! मौत भी नहीं आती क्योंकर मरूं!

बृह्मा०—हे ब्राह्मण देवता धैर्य धारण करो, विधिनाका लिखा हुआ किसी तरहसे भी मिटनेवाला नहीं, यह समझकर अपने शोकको निवारण करो अब घबड़ानेसे क्या होगा?

आत्मा०—हाय ईश्वर मैंने ऐसी क्या बुराई की जिसकी यह सजा दी,

किसको दुखाया हाय मैंने जिसका फल यह पा रहा।
सुखसे इकदम दुख हुआ इससे ही जी घबरा रहा॥
क्या करूं किस तौरसे अपना यह दिल समझाऊं मैं।
सियारामको मैंने भुलाया इस लिये दुःख पाऊ मैं॥

ब्रह्मा०—महाराज अब सोचको परित्यागन कीजिये, जो कुछ होनहार होता है वह होकर रहता यह निश्चय ही जान लीजिये और श्रीसीतारामजी महाराजके नाममें अभी मन दीजिये।

आत्मा०—क्या करना है किसी तरह तो धीरजही धरना होगा।

ब्रह्मा०—अच्छा, मेरा अब प्रणाम लीजिये और मुझे जानेकी आज्ञा दीजिये, क्योंकि मुझे आये हुये बहुत देर हो गयी है

आत्मा०—अच्छा, मैं आपको प्रणाम करता हूं, दया बनाये रखना।

ब्रह्मा०—बहुत अच्छा (ब्रह्मानन्दका थोड़ी दूर जाकर) (स्वयं) क्या कहूं गया तो कुछ कमानेके लिये, पर घरका भी रुपया गवाँ आया, घरपर पहुचनेसे स्त्री रुपैया मांगेगी उसे क्या जवाब दूंगा। वह जब नहीं मानेगी तो कैसे मनाऊंगा ?

(पछताते हुए पण्डितजीका प्रस्थान)

(आत्मारामकी स्त्रीका प्रवेशकर स्वामीको उदास देख व्याकुल हो पूंछना)

स्त्री०—स्वामीनाथ प्रणामकरके पदवन्दन करती हूं। कहिये यह आपके चेहरेपर कैसी उदासी छाई है ? और किस लिये तबियत घबराई है ? आजका दिन तो अत्यन्त सुख-दायी है, जो सब घरभरके आदमियोंके दिलमें बड़ी भारी खुशी समाई है, बड़े भाग्यसे सुन्दर पुत्र पाया है क्यों ?

क्या यह आपके मन नहीं भाया है जो कुछ हाल हो वह साफ साफ कहकर सुनाइये।

आत्मा०—प्यारी क्या कहूं! कहा नहीं जाता दुखसे व्याकुल हो कलेजा मुंहको आता हैं! हाय बड़े हो शोककी बात है, इस आनन्दके समयमे कष्टके समूहने आकर घेरा हैं, यह पुत्र दुखदायी है इस कारण मेरा है न तेरा है! कष्टका पहाड़ टूटा हाय हाय प्यारे पुत्रसे नाता छूटा।

स्त्री०—हैं प्राणनाथ। यह कैसी बातें सुनाई! पर मेरी समझमें अच्छे प्रकारसे नहीं आई? सो बिधिपूर्बक कहकर जना। दीजिये, और सारे दुखको अपने दिलसे भुला दीजिये।

आत्मा०—हां प्यारी। ईश्वरकी लीलामें क्या चारा। न कुछ जोर हमारा न तुम्हारा। तब सन्तोषसे ही किसी तरह करना गुजारा।

(रोकर गाना)

कहूं क्या हाल हाय मैं, न दुखका वारापार है।
यह पुत्रका बिछोह होना, बहुत दिलपै खार है॥
है त्यागना अवश्य ही, संकटका भारी भार है।
जो बात थी न होने की, करना पड़े लाचार है॥

स्त्री०—स्वामी! यह आपको किसने बहकाया, जो ऐसे सुखके अवसरमें दुःखोंमें डालकर रुलाया? और बेकार बनाया सो सब बातोंको बुद्धिके द्वारा विचारमें लाइये। व्यर्थ सोच न करके जीको चिन्ता रूपी अग्निमें न जलाइये।

ब्रह्मा०—महाराज अब सोचको परित्यागन कीजिये, जो कुछ होनहार होता है वह होकर रहता यह निश्चय ही जान लीजिये और श्रीसीतारामजी महाराजके नाममें अभी मन दीजिये।

आत्मा०—क्या करना है किसी तरह तो धीरजही धरना होगा।

ब्रह्मा०—अच्छा, मेरा अब प्रणाम लीजिये और मुझे जानेकी आज्ञा दीजिये, क्योंकि मुझे आये हुये बहुत देर हो गयी है

आत्मा०—अच्छा, मैं आपको प्रणाम करता हूं, दया बनाये रखना।

ब्रह्मा०—बहुत अच्छा (ब्रह्मानन्दका थोड़ी दूर जाकर) (स्वयं) क्या कहूं गया तो कुछ कमानेके लिये, पर घरका भी रुपया गवाँ आया, घरपर पहुचनेसे स्त्री रुपेया मांगेगी उसे क्या जवाब दूंगा। वह जब नहीं मानेगी तो कैसे मनाऊंगा ?

(पछताते हुए पण्डितजीका प्रस्थान)

(आत्मारामकी स्त्रीका प्रवेशकर स्वामीको उदास देख व्याकुल हो पूंछना)

स्त्री०—स्वामीनाथ प्रणामकरके पदवन्दन करती हूं। कहिये यह आपके चेहरेपर कैसी उदासी छाई है ? और किस लिये तवियत घबराई है ? आजका दिन तो अत्यन्त सुख-दायी है, जो सब घरभरके अदमियोंके दिलमें बड़ी भारी खुशी समाई है, बड़े भाग्यसे सुन्दर पुत्र पाया है क्यों ?

क्या यह आपके मन नहीं भाया है जो कुछ हाल हो वह साफ साफ कहकर सुनाइये।

आत्मा०—प्यारी क्या कहूं! कहा नहीं जाता दुखसे व्याकुल हो कलेजा मुंहको आता हैं! हाय बड़े हो शोककी बात है, इस आनन्दके समयमें कष्टके समूहने आकर घेरा हैं, यह पुत्र दुखदायी है इस कारण मेरा है न तेरा है! कष्टका पहाड़ टूटा हाय हाय प्यारे पुत्रसे नाता छूटा।

स्त्री०—हैं प्राणनाथ। यह कैसी बातें सुनाई! पर मेरी समझमें अच्छे प्रकारसे नहीं आई? सो बिधिपूर्बक कहकर जना। दीजिये, और सारे दुखको अपने दिलसे भुला दीजिये।

आत्मा०—हां प्यारी। ईश्वरकी लीलामें क्या चारा। न कुछ जोर हमारा न तुम्हारा। तब सन्तोषसे ही किसी तरह करना गुजारा।

(रोकर गाना)

कहूं क्या हाल हाय मैं, न दुखका बारापार है।
यह पुत्रका बिछोह होना, बहुत दिलपै खार है॥
है त्यागना अवश्य ही, संकटका भारी भार है।
जो बात थी न होने की, करना पड़े लाचार है॥

स्त्री०—स्वामी! यह आपको किसने बहकाया, जो ऐसे सुखके अवसरमें दुःखोंमें डालकर रुलाया? और बेकार बनाया सो सब बातोंको बुद्धिके द्वारा विचारमें लाइये। व्यर्थ सोच न करके जीको चिन्ता रूपी अग्निमें न जलाइये।

आत्मा०—प्यारी । मैंने प्रसिद्ध ज्योतिषी पं० ब्रह्मानन्दको श्री तीर्थ राज प्रयागसे बुलवाया, उनसे बालककी कुण्डलीको बनवाया उन्होंने अच्छे प्रकारसे लिखा बहुत आग्रहकर पूछनेपर अति उदास होकर फल को दुखितहो सुनाया कि आठ वर्ष तक यह बालक माता पिता को बहुत दुखद और प्राण घातक है इसलिये इसको घर में रख कर इसका मुख देखना अति कष्ट दायक है, हाय हाय क्या कहा जाय ।

जानसे जहान है, यह भी कैसा आफतका समान है ।

स्त्री०—स्वामी ! हाय हाय यह कैसा दुखदायी हाल सुनाया ।

गायन

कैसी यह विपत्तिकी बात सुनाई तुमने ।
सुख अवसरमें दुःख हाय जनाई तुमने ।
ये भला कुण्डली क्यों बनवाई तुमने ।
आनन्द समय यह कष्ट बुलाई तुमने ॥
खुशी गंगामें सब धोय बहाई तुमने ।
मोहि हंसती हुईको हाय रुलाई तुमने ॥

(वार्ता) हाय हाय ! ऐसे प्यारे पुत्रको किस तरहसे त्यागा जायगा !!

(स्त्रीका गिरकर बेहोश होना अत्मा-रामका मूर्छासे उसे जगाना)

आत्मा०—प्यारी इस प्रकार अधीर होनेसे क्या होगा ? सुनो ! होनेवाली बात होकर रहती है ।

जानेवाली वस्तु क्या बिन खोये रहती है ॥
जो अपनी चीज है नहीं रोकरके क्यों मरे।
जो विधिने लिखे अंक है तुमसे नहीं टरे ॥
जानलो इस बातको धीरज ही कीजिये।
हितू अपने सियावर जानि, उनका नाम लीजिये ॥

स्त्री०—स्वामी! क्या करना होगा? जब त्यागना लाचारी है, तो त्यागा ही जायगा, हाय इसकी दवाही नही यह भी ऐसी असाध्य बीमारी।

आत्मा०—प्यारी! अब शीघ्र बालक को लेकर यहांसे टरो, देर नहीं करो।

स्त्री०—बहुत अच्छा जो आज्ञा

[स्त्रीका बालकको लिये हुए आत्मारामके साथ प्रस्थान]

——

चौथा दृश्य

—:-*-:—

(स्थान जंगल)

—*—

एक झोपड़ेमें नरसिंहदासका बैठे हुए दिखलाई देना और कईएक साधुओंका आकर उन्हें प्रणाम करना तथा उनसे वार्तालाप करना

सिया०—क्यों महाराजजी! आज तो आप बड़ी चिन्तामें उदास

दिखाई देते हैं भला बतलाइये तो सही कौनसी ऐसी चिन्ता आपको कष्ट दे रही है ।

नर०—भाई क्या बतावें! बुढ़ापा आया पर रुचिके अनुकूल कोई सुन्दर सुशील शिष्य नहीं कर पाया ।

सिया०—क्यों ? क्या कोई आपके मन नहीं भाया ?

नर०—जी नहीं बल्कि यों समझिये कि उस योग्य मेरे कोई देखनेमें नहीं आया ।

सिया०—श्री महाराज जी ! परमात्माके घरमें कोई बातका टोटा नहीं, यदि श्रद्धारूपी पासमें दाम खरे हैं तो ईश्वरका भजन जो माल है वह भी खोटा नहीं । इसलिये प्रेमसे प्रभुको विनय सुनाई जाय अर्ज लगाई जाय तब हमें दृढ़ विश्वास है कि अवश्य ही अपनी मनोकामना सिद्धि हो जाय और हृदय प्रफुल्लित हो जाय ।

नर०—हां यह कहना बहुत ही सत्य है, अच्छा तो अब आपलोग आइये और सब कोई मिलकरके उस हितकारी परमात्माको विनय सुनाइये और मेरी मनोकामना सिद्धि होनेकी अर्ज लगाइये ।

सब साधु—हां लीजिये, आप भी इसमें शामिल हो गान कीजिये ।

नर०—बहुत अच्छा ।

गायन ।

मानो कहा मेरा, सियाराम गुण गाओरे ।

झूठा नाता जगका भ्राता, मात्र साथ वह मेरी बाता,

त्याग सब काम हरी नाम मन लाओरे ॥
दो दिनका है मेरा तेरा, जागो मूरख हुआ सवेरा ।
एकही प्रभु हितु तेरा, उन्हें पलना झुलाओरे ॥
सब दिनके साथीको हेरो सीताराम नाम,
मुख टेरो हरितलता हरिके चरण लपटाओरे ॥

नर०—(सब साधुओंसे) महाराज ! आप लोगोंको रहना हो तो आनन्दसे रहकर मेरी इस झोपड़ीको पवित्र बनाइये, क्योंकि रात्रि अधिक हो गयी है, इसलिये भीतर चलके सो जाइये, यदि आपका कोई हर्ज न हो तो स्वीकार कीजिये ।

सब साधू—नहीं, महाराजजी हमलोग रात्रिमें अपने अपने स्थानों-को सूना नहीं छोड़ना चाहते हैं, इसलिये आप हम सबको जानेकी आज्ञा दीजिये और सदा अनुग्रह कीजियेगा सुधि लीजियेगा ।

नर०—बहुत अच्छा जाईये, पर मुझे भूल न जाइयेगा फिर कभी सावकाश पाकर मिलने अवश्य आइयेगा ।

सब०—बहुत अच्छा हमलोग फिर शीघ्र ही आवेंगे ।

(सब साधुओंका नरसिंहदासको प्रणामकर
सीताराम सीताराम रटते हुए प्रस्थान)

(आत्मारामका स्त्री सहित बालकको लिये हुये प्रवेश)

आत्मा०—(स्त्रीसे पेड़को लक्षकर) प्यारी । इसी पेड़के नीचे बालकको छोड़ देना चाहिये और इसके मोहको तोड़ देना चाहिये ।

स्त्री०—(व्याकुल हो) हाय प्राणनाथ ! ऐसे कुटिल कर्म्मको छोड़ देना चाहिये ।

(दोनोंका बालकको पेड़के नीचे छोड़कर प्रस्थान)

(बालकके समीप भगवानका धनुषबाण लिये प्रगट होना एवं उनका बालकको उठा छातीसे लगाना और प्यारकर मुंहसे लगाना)

भगवान०—धन्य हो भक्तराज धन्य हो ! तुम्हारे ही ऐसे प्रेमियोंके प्रेम बंधनमें बंधकर मुझको नही करने योग्य सभी कार्य्य सुयोग्य समझकर करने पड़ते है, जिस प्रकार होता हैं सेवकके दुखको अवश्य हरते हैं, यह हमारी प्रतिज्ञा है, अहा यह बालक मेरा पूरा भक्तराज है, इसलिये इसकी रक्षा करना हमारा प्रथम काज है, इसीलिये आया हूं ।

(बालकको कंठी पहिराकर कुछ कानमें कहना)

जो है मेरे दास सर्व्व उनके हरदम पास हूं
सब तौरसे मुझको वह माने इसमें मैं वही खास हूं ।
भूलता उन्हें पल नहीं रखता हूं हरदम ध्यानमें ।
मेरे जो हियेमें रहे त्यों जानकीके जानमें ॥
रक्षा करते हैं सदा सब मेरा उसको जानकर ।
कोई न दुख देता कभी प्रेमी मेरा मानकर ॥

अब इस बालकको दुःखोंसे बचाना है और सन्त नरसिंह दासके घर पहुंचाना है जो कोई शरणमें आया वह इस दुखद संसारको भली प्रकार जानकर इसकी



ओरसे अपने मनको हटाता है। यही कारण है कि इसको लोग दुःखदायी समझ छोड़कर भाग गये।

प्रस्थान

(सन्तनरसिंह दासका सोते हुए दिखाइ देना और भगवानका वहां पहुंच उनसे कहना)

भगवान–सन्तराज! क्यों सो रहे हो अपने इस अमूल्य समयको व्यर्थ क्यों खो रहे हो, जागो सम्भलो, अबसे भी विचार कर उत्तम कार्यके करनेमें लगो। जिस चिन्तामें आप रात दिन परेशान थे, वह प्रभुके अनुग्रहसे सब खतम हो गई, अब यह सुखका समय आया है, पासके पेड़के नीचे एक सुन्दर बालक शिष्य होनेके लिये भगवानने पठाया है ईश्वरने आपकी मनोकामनाको पुराया है। उसे शीघ्रही उठाकर लाइये, अपने सब दुःखोंको नशाइये। उसे देखकर हृदयको प्रफुल्लित कीजिये।

(प्रस्थान)

(नरसिंहदासका चिहुंककर उठना और चारों ओर देख विस्मित हो स्वयं कहना)

नर०—(स्वयं) हैं! मैने यह क्या सुना। यह सब सुन्दर शब्दोंको किसने कहा। जो सुनके मेरा सब दुखदहा। है! आस पास तो कोई नहीं है, हे भगवान यह क्या बात है कुछ समझमें नही आया खैर जो हो यह जो अमृत मयी बानी साफ सुनाइ दी उसको कभी भूल नहीं

सकता हूं । इन शब्दोंसे ऐसा प्रतीत होता है कि परमात्माने मेरी विनतीको स्वीकार किया है अब मैं जाता हूं अपने भाग्य और प्रभुकी दयालुताको अजमाता हूं ।

(थोड़ी दूर जंगलमें जाना और बालकके रोनेका शब्द सुनाई देना और उसी ओर जा बालकको देख गोदमें उठाकर कहना)

नर०—हे प्रभु, धन्य हो ! धन्य हो !! आपकी दयालुतापर बार बार बलिहार हूं (बालक को रख ईश्वरकी प्रार्थना करना)

गायन

किया ईश्वर तुम हमपर दाया ।
सुख सर साया बिपत नशाया,
प्रभु मन भल फल पाया,
सदा रहो जै जय मनाया ॥
गुन आगर हो सुख सागर हो ।
कीर्ति अपार छाई संसार,
मुझे खुशी का यह समय दिखाया ॥
सेवकका रखते हो मान
यांसे उनकी होती न हानि
रक्षा करते अपना जान
सदा रहत तुममें ही ध्यान

(श्यामदास,) सियारामदास संतोंका परस्पर मिलाप होना तथा उनकी वार्ता।)

सियाo—क्यों संत जी, आपकी मनोकामनाको तो प्रभुने सब प्रकारसे पूर्ण किया, और आपको सुख दिया।

श्यामo—कहिये कहिये ?

नरo— (बालकको दिखाकर) जीहां, यह देखिये आपके अनुग्रह और प्रभूकी कृपासे यह सुन्दर बालक मेरे पास आया। अब इसे पढ़ाऊं लिखाऊं कुटीके रखवारी योग्य बनाऊं तो तीर्थ-यात्रा करने जाऊं, इस संकल्पको पूराकर हृदय-को हरषाऊं !

सियाराo—प्रभू तो अपने सेवककी इच्छाओंको सब प्रकारसे पूर्ण करते हैं, इसलिये यह अभिलाषा भी आपकी पूर्ण होगी।

श्याo—जी हाँ ! प्रभुको न भुलाइये, उनके गुणको गाइये, जिस प्रकार हो यत्नकर उनको रिझाइये, तब कठिनसे कठिन कार्य्यको सहजमें ही कर डालिये।

नरo—जी हां, आप लोगोंका यह कहना सत्य है, मनुष्यका शरीर पाकरके जिसने ईश्वरसे ध्यान लगाया है, और उनको मनाया है, बिधिपूर्वक उनके गुणको गाया है, वही इस असार संसारमें श्रेष्ठ कहाया है, और उसने बहुतसे दुखियोंको दु.खसे छुड़ा सुखिया बनाया है, उसके मिलनेका सुगम रास्ता बताया है और :—

मनुष्य तन पाकरके जिसने हितू प्रभु जाना नहीं।

पशुसे भी अति खाम वह जो हरि हिये लाया नहीं॥
जो काम है करना आवश्यक सो ही सब करता नहीं।
मूर्ख है सब तौर वह स्वप्नेहुं हर्षाना नहीं॥

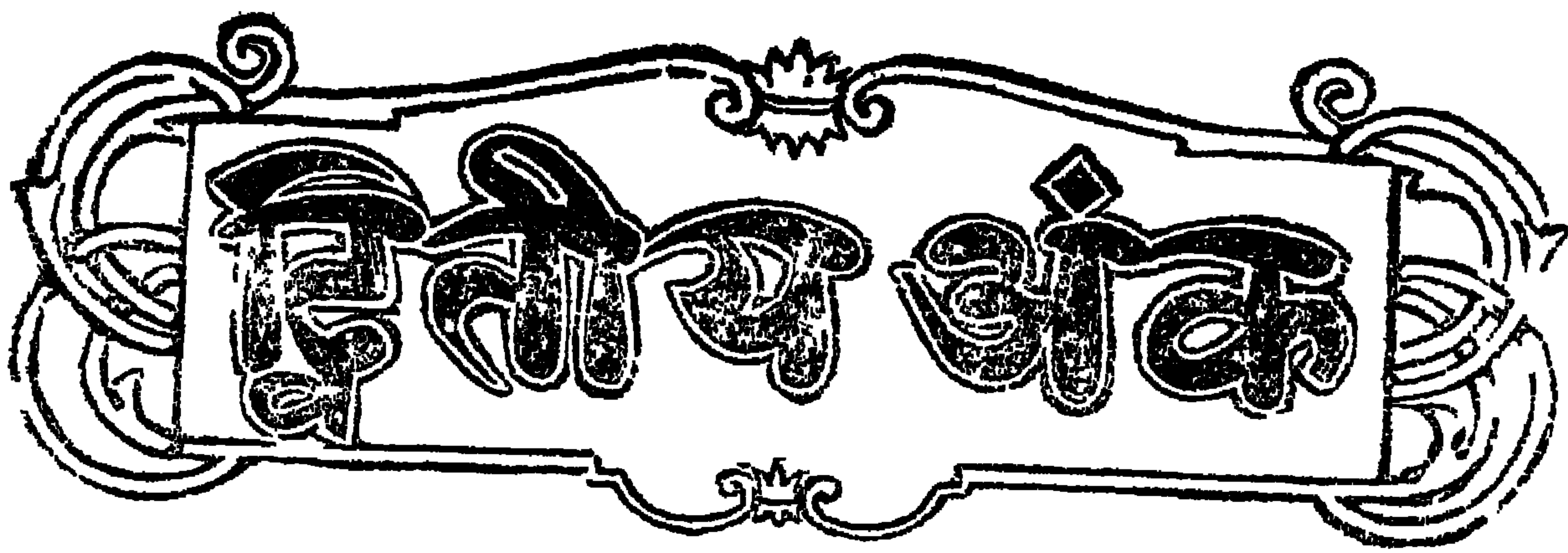
सिया०—धन्य हो संतराज, धन्य हो आपके विचार और बुद्धि सराहनीय है।

सत्संगके प्रतापहीसे शठ बहुत अच्छे भये।
पायके गुण ज्ञान उनके दोष दुख सबही गये॥
पुन्यके प्रतापसे मिलते हैं संत जहानमें।
रघुवर कृपासे मूर्ख भी अच्छे हो एक जवानमें॥

नरसिंह०—(बालकसे) बच्चा अब तुम श्रीसीताराम श्रीसीताराम कहो।

बालक—(खड़ा हो हाथ जोड़) श्री सीताराम, सीताराम, सीताराम सीतराम जै सीताराम।





पहला दृश्य

—:-*-:—

(स्थान जंगल)

(एक मन्दिरमें नरसिंहदासजीका श्रीतुलसीदासजीसे वार्तालाप करते दिखाई देता।)

नर०—बच्चा ! देखो अब तुम सब कुछ करने योग्य हो गये और हमने तुम्हारे ही सुखके लिये इस जङ्गलमें झोपड़ेके स्थान पर श्री ठाकुरजीका पक्का मन्दिर और तुम लोगोंके रहने योग्य यह मकान बनाया है और हमसे जहाँतक हो सका तहाँतक सब विद्या भी तुम्हें पढ़ा दी और यथा शक्ति सब कुछ तुम्हें सिखाया अब मुझे तीर्थ-यात्रा करनेके लिये जानेकी छुट्टी दो तुम आनन्दपूर्वक रहकर सब कामको भली प्रकार चलाओ। मैं तीर्थ-यात्राकर शीघ्रही तुमसे आ मिलूंगा।

श्रीतुलसी०—(उदास हो) श्री स्वामीजी ! आपका हमें बहुत ही सहारा है। आपके जानेके पश्चात्, आप ही विचार करिये, कि इस स्वार्थ भरे संसारमें कौन हमारा है ?

आप ही बताइये कि मैं आपको अपनेसे कैसे अलगकर धैर्य्य धारण करूं । इस लिये जब आप जानेका नाम लेते हैं तो मैं बहुत ही घबड़ाता हूं, इस लिये मुझे अपना लघु सेवक जानकर मेरी विनयको स्वीकार कीजिये। क्योंकि, सुनिये !

सद्गुरकी सेवा करनाही सियाबर रिझाना है ।
सद्गुरकी सेवाहीसे निज बिगड़ी बनाना है ॥
सद्गुरकी सेवाहीको जो निज कार्य्य माना है ।
इस तौर जो किया वही जग प्रभुको पाना है ।

इससे अब आप मुझको त्यागिये नहीं, छोड़ करके भागिये नहीं ।

नर०—तुम्हारा यह कहना बहुत सत्य है, पर तुम देखते, हो कि मैं बूढ़ा हो गया परन्तु अभीतक कहीं तीर्थ-यात्रा करनेको नहीं गया, अब तुम्हारे ऐसे सुन्दर, सुशील, बुद्धिमान, समझदार शिष्यको पाकर भी तीर्थ–यात्राको न जाऊं तो फिर मेरे ऐसा अभागा कौन होगा, इस लिये मुझे जाने दो, और अपना धर्म बनाने दो, और मनुष्य तन पानेका मुझे लाभ उठाने दो, मुझे रोको नहीं, क्यों कि सुनो।

धर्म यह तुम्हारा मम आज्ञाको मानना ।
मनुष्य तनका काम है अपनेको जानना ॥
दुख सुख दोउमें धीर धर दृढ़ हिये हरि आवना ।
सबमें मिले रहकरके निज स्वामी पहिचानना ॥

श्रीतुलसी०—स्वामीं ! अब तो मैं आपकी यह बातें सुनकर लाचार हूं, अब जो कुछ आज्ञा करिये सब प्रकारसे मानने-को तैयार हूं, पर मेरी प्रार्थनाको सुन लीजिये

पर भूलियेगा हमको नहीं अपना जानके ।
उर लाइयेगा शीघ्र आ यह विनय मानके ॥
कमठका अण्डो पै नेह त्यों हियेमें आनके ।
वरदान दीजिये न रहूं खाक छानके ॥

नर०—हाँ, हम तुम्हें भुलायेंगे नहीं जहाँतक होगा शीघ्र आयेंगें, पर तुम ध्यान द्वारा हमको सदा अपने समीपहीमें जानना, दूर नहीं मानना ।

श्रीतुल०—वह कैसे ?

नर०—जिस प्रकार काष्ठमें अग्नि छिपे तौरपर रहती है, पर उसके प्रगट करने वाले उसे युक्तिके साथ प्रगट करलेते हैं, प्रेममें एक ऐसी अपूर्व शक्ति है जिसको करके उसनिर्गुण ब्रह्मको लोग सगुण शरीरधारी बना लेते हैं, तुम भी इसी प्रेमसे काम लो तब मन लगाके भगवानका और मेरा नाम लो ।

श्रीतुल०—हाँ आपका यह कहना मेरे ध्यानमें भली प्रकार आ गया पर अब यह बतलाइये कि आप मुझे किसीके अवलंब छोड़कर जाते हैं या योहीं निरावलंब ?

नर०—मैं तुम्हे विना अवलंबके नहीं प्रभूके अवलंब पर छोड़कर जाता हूं और बर्दान सहित आशिर्वाद देता हूं कि तुम्हारी मनोकामनाओंको प्रभू सब प्रकार पूर्ण करे और तुम्हारे

हृदयको अपने प्रेमसे भरें इसके लिये मैं उस परब्रह्म परमात्मासे प्रार्थना करूंगा और तब मैं यहांसे जाऊंगा—

(ईश्वरकी प्रार्थना करना)

हे हरी दयालु दया रखियो तुलसी दास पे ।
आपके भरोसे छोड़ जाता हूं सब आस पे ॥
बनाये रखना दया यही जानके निज खास पे ।
चलती है श्रृष्टी यह सारी आपके विश्वास पे ॥
इससे कहूं कर जोड़ यही कल्याण कीजियो ।
सब दिन जपाके नाम निज सुबुद्धि दीजियो ॥

(श्रीतुलसीदासजीका साष्टांग दण्डवत करना श्रीनरसिंहदासजीका उठाकर छातीसे लगा, आशीर्वाद देकर प्रस्थान)

श्रीतुलसी०—(स्वयं) अब जो ग्रन्थ पढ़े हैं उन्हें अवलोकन करके विचार करूं और अपनी तबियतको सम्हालूं, बुद्धि द्वारा मनको समझाके धैर्य्य धरूं यही उचित प्रतीत होता है ।

(एक पुस्तक लेकर देखना)

(श्रीतुलसीदासजीके ससुरालके दाई नौकरका पत्र लिये हुए प्रवेश ।)

नौकर०—(श्रीतुलसी दाससे) महाराज आपका क्या नाम है ?

श्रीतुलसी०—इस शरीरको लोग तुलसीदासके नामसे पुकारते हैं, क्यों तुम्हें किससे काम है ?

नौकर०—हमको आपहीसे काम, है हम आपको प्रणाम करते हैं।
(हाथ जोड़ना)

दाई०—महाराज मैं भी आपको हाथ जोड़ती हूं (हाथ जोड़ना)

तुलसी०—तुमलोग आनन्द रहो ? कहो कहांसे आये हो और मुझसे क्या काम है ?

नौकर०—आपकी स्त्रीको, यानी उनने अपनी पुत्रीको बुलवाया है।

श्रीतुलसी०—क्या तुमलोग कोई पत्र भी लाये हो, या योंहीं लेजानेके लिये आये हो ?

नौकर०—हाँ पत्र लाये हैं।

श्रीतुलसी०—इस समय शीघ्रतामें इतनी जल्दी हमसे प्रवन्ध नहीं हो सकता है, इस लिये आपलोग जाइये फिर जब आना हो तब दस पंद्रह दिन प्रथम पत्र द्वारा हमें खबर भेजिये और जब हमारा जवाब तुम्हारे पास जाये तब आइये। और आनन्दसे ले जाइये।

नौकर०—भला जरा आप दिलमें विचारिये तो सही कि हमलोग कितनी दूरसे, कैसे २ परिश्रम और कष्टोंको उठाकर इनको लेजानेके लिये यहां आये हैं। सो यदि विना इनके लिये जायगें तो स्वामी हमलोगों पर बहुत नाराज होंगे, इस लिये आपसे हाथ जोड़ करके कहते हैं कि दया करके भेज दीजिये।

श्रीतुल०—तुमलोग बड़े नासमझ आदमी हो, जो समझाके कह देनेपर भी बकबाद करते हो, क्या यह अच्छा काम है।

सुनो। क्या हम भूखों मरें, जाओ इस वक्त नहीं भेजेगें।

नौकर०— तो क्यों महाराज हमलोग जैसे आये वैसे खाली ही लौट जांये। अपने परिश्रम करनेका लाभ भी न पायें।

श्रीतुल०—बिना बिचारे परिश्रम करनेका यही फल है, जो कि तुमलोग पाओगे, खाली नहीं बल्कि पत्र लेकरके आये थे पर यहांसे खाली ही जाओगे।

नौकर०—तो क्यों क्या आप हमलोगोंको पत्र भी नहीं दीजियेगा?

श्रीतुल०—नहीं।

नौकर०—क्यों?

श्रीतुल०—मुझे पत्र लिखनेका अवकाश नहीं है।

नौकर०—क्या काम है?

श्रीतुल०—लेना ईश्वरका नाम है।

नौकर०—अच्छा तब हमलोग जाँय?

श्रीतुल०—हां हमारा उन लोगोंको प्रणाम कह देना।

(नौकर दाईका उदास होकर प्रस्थान करना और रास्तेमें वार्तालाप करते दिखाई देना)

दाई०—यदि पहिले मैं जानती कि आकरके खाली ही लौटना पड़ेगा तो क्यों आती।

नौकर०—ठीक है पर नहीं मालूम कि आज सवेरे हमने किस सूम का मुह देखा है जो काम भी नहीं हुआ और पेटमें एक

अन्नका दाना भी नहीं गया और वहां पहुचने पर मालिक भी बहुत गुस्सा होंयगे।

दाई०—इसमें मालिकके गुस्सा होनेकी कौन सी बात है। जब स्त्रीके स्वामी अपनी स्त्रीको नहीं भेजे तो हमलोग जबर-दस्ती कैसे लावें।

नौकर०—यह बात तो सही है, पर यदि कहेगें कि तुमलोगोंसे यह अदनासा काम नहीं हुआ।

दाई०—क्या वह यह नहीं सोचेगें कि कहने समझानेके सिवा इनका जोर ही क्या है जितना समझाना था उससे ज्यादा समझाया, प्रार्थना किया अपना परिश्रम तक सुनाया। पर क्या किया जाय, उनके मनमें जरा भो खयाल नहीं आया।

नौकर०—तुम्हारा कहना ठीक है देखो जिस हर्षके साथ हमलोग यहां आये हैं क्या कोई आसकता है और फिर ऐसा आदमी क्या इस तरह कभी विफल लौट कर जाता है?

दाई०—कभी नही, क्या कहैं, देख रहे हो कि मैं यही सोचकर बेहाल हो रही हूं, होश हवास सब खो रही हूं।

गायन

व्यर्थ मैं तो आई दिक्कत उठाई

पहिले जो जानती केडुको न मानती प्रभूसे रहती लव लाई

आब जावमें समत गई बहु हरिकी भक्ति भुलाई।

पुरुषोत्तम प्रभु हाय मिले नहीं आपहि मोही नशाई।

(पछताते हुये दोनोका प्रस्थान)

दूसरा दृश्य

—:*:—:*:—

(स्थान दीनबन्धुका मकान)

[दीनबन्धु और उनकी स्त्रीका बैठे हुए दिखाई देना नौकर दाईका उदास चित्तसे प्रवेश करना ।]

नौक०—स्वामीको मैं प्रणाम करता हूं। (प्रणाम करना)

दाई०—स्वामिन, स्वामीको मैं भी हाथ जोड़ती हू । (हाथ जोड़ना)

दीनबन्धु०—(नौकर दाईको आशीर्वाद देकर) क्यों तुमलोग प्यारी पुत्रीको नहीं लाये ! कैसे खाली लौट आये ?

नौक०—महाराज ? श्रीतुलसी दासजीने नहीं भेजा ।

दीन०—तो उनने भला क्या कहा ?

नौक०—यह कहा, कि पहिले मेरे पास कोई पत्र आया नहीं इससे हमने कोई भेजनेका प्रबन्ध नहीं, कर पाया विना प्रबन्धके किस तरहसे भेज दें ?

दीन०—इसपर तुमने कुछ कहा या नहीं ?

नौक०—जी हाँ हमने यह कहा कि अब प्रबन्ध कर लीजिये क्या करेंगे हमलोग दो चार दिन और ठहर जायेंगे ।

दीन०—तब इसका जवाब उन्होंने क्या दिया ?

नौक०—जवाब क्या देना रहा, भेजनेसे एकदम इनकार किया ।

दीन०—तो क्या तुम लोगोंने समझाकर नहीं कहा । (गुस्सासे) यह अदना सा काम तुमलोगोंसे न हुआ ।

नौक०—(अधीनतासे हाथ जोड़) अजी महाराज सिरताज बहुत कुछ समझाया दुःख सुनाया प्रार्थना की, खाली लौट कर जानेसे आपका नाराज होना भी जनाया, परन्तु क्या कहें उन्होंने हमारे कहे हुए कोई शब्दोंको कानों तकसे न सुना ! तब क्या करें ! लाचार होकरके हमलोग खाली लौट आये ।

दीन०—खैर ऐसा हाल है तो जाने दो बेटा श्यामसुन्दरको आने दो ।

(श्यामसुन्दरका प्रवेश)

श्याम०—पिताजी प्रणाम करता हूं । (हाथ जोड़ना)

दीन०—बेटा आनन्द रहो ।

श्याम०—कहिये पिताजी आज आप किस लिये चिन्तित वो उदास हैं ?

दीन०—बेटा योंही कुछ निरास हैं !

श्याम०—नहीं, नही मुझे बता दीजिये जो हाल हो वह साफ साफ कहके समझा दीजिये, वो शीघ्र जना दीजिये ।

दीन०—अच्छा सुन, दाई नौकर जो तेरे बहिनको लानेके लिये भेजे गये रहे, वह खाली ही लौटकर चले आये ? तेरी बहिनको नहीं लाये ।

श्याम०—हैं, खाली ही लौटकर चले आये ! मेरी बहिनको नहीं

लाये ? पर इसका कारण कुछ बताया कुछ कहा भी तो होगा ?

दीन०—हाँ यह कहा, कि श्री तुलसीदासजीने नहीं भेजा।

श्याम०—क्या कहा !

दीन०—कहा कि इस समय नहीं भेजेंगे।

श्याम०—तब कब भेजनेको कहा ?

दीन०—कहा कि आदमीके भेजनेके पन्द्रह दिन पहिले पत्र द्वारा खबर दें, उसके बाद भी जब हम लिखें तब आकरके ले जावें, हमारे विना लिखे नही आवे ? भला विचारो तब वह क्यों लिखेंगे आते समय नौकर दाईको एक अपने हाथका पत्रतक लिखकर नहीं दिया, दाईको तुम्हारी बहिनसे मुलाकात भी नही कराया नौकर दाई विचारोंको भूखे हो लौटाया खानेको भी नहीं पूछा ?

श्याम०—खैर ऐसी बात है, पर क्या कहूं अभी रात है ? कल दिनको खूब सबेरे ही उठकर जाऊंगा, जैसे होगा तैसे जरूर जरूर अपनी बहिनको साथ लाऊंगा, (जोर देकर) और श्री तुलसीदासजीको खूब ही छकाऊंगा, इस कर्त्तव्यका मजा चखाऊंगा ?

दीन०—हाँ बेटा, अवश्य इस कामको बनाना चाहिये, अपने बहिनको यहाँ युक्ति लगाकर लाना चाहिये।

श्याम०—बहुत अच्छा, ऐसा ही होगा, अब मैं सैन करनेको जाता हूं, प्रणाम। (हाथ जोड़ना)

दीन०—चिरंजीव रहो बेटा। (सबका प्रस्थान)

दृश्य तीसरा

-:—*—:-

[स्थान श्रीतुलसीदासका मकान और मन्दिर]

(जहाँपर तुलसीदासजीका श्री सीताराम नाम रटते हुये दिखाई देना)

[श्यामसुन्दरका प्रवेश करके कहना]

श्याम०— (श्रीतुलसीदाससे) जीजाजी नमस्कार करता हूं।

(हांथ जोड़ना)

श्रीतुल०—नमस्कार महाराज ? नमस्कार, (आसन देकर) आइये इसपर विराजिये।

(श्यामसुन्दरका बैठना, स्त्रीका आकर कहना)

तु०स्त्री०- (श्यामसुन्दरसे) भइया राम राम।

श्याम०—राम राम बहिन, कहो तुम तो अच्छी हो, जीजाजी कोई बातसे तकलीफ तो नहीं देते हैं ?

स्त्री०—क्या अच्छी हैं, माता, पिताने, वो तुमलोगोने तो हमें एक दमसे बिसार ही दिया है, पर हां तुम्हारे जीजाजी सुख पूर्वक रखते हैं।

श्याम०—हमलोग क्या करें ? माता पिताने तो तुम्हे अपने समीपमें बुलानेके लिये कई मरतवे दाई नौकरोंको तुम्हे लेजानेके लिये पठाया रहा, पर जीजाजी कृपानिधानने नहीं भेजा, उन्हे खालीही लौटा दिया ?

स्त्री०—(श्रीतुलसीदाससे) क्यों स्वामी ? श्यामसुन्दर जो बात कह रहे है, क्या वह ठीक है ? क्या कभी मेरे नैहरसे कोई नौकर दाई मुझे बुलानेके लिये आया रहा (उनको आपने खाली लौटाया रहा)

श्रीतुल०—हां, असमंजससे ऐसा हुआ रहा ॥

स्त्री०—तो आपने मुझसे यह बात आजतक क्यों कही ?

श्रीतुल०—भजन करनेसे छुट्टी नही पाया इसीमें भुलाया, तुम्हें कहना याद नहीं आया, दूसरे तुम सुनके चिन्तित हो जाती, इसी डरसे भी नहीं बताया ।

स्त्री०—(श्यामसुन्दरसे) लो सुनो इन्होंने इस बातको मुझसे आजतक नहीं जनाया ? बल्कि जब जिकिर आता रहा तो उल्टे तुम्हीं लोगोंको कठोर बताकर मुझे रूलाया ? अच्छा अब यह कहो कि नैहरमें सब कोई बहुत राजी खुशी तो हैं ।

श्याम०—हाँ प्रभुको अनुग्रहसे, और आपलोगके कृपासे सब कोई बहुत राजी खुशी हीसे हैं, पर अब तुम अपना जो कुछ हाल हो उसको बयान करो ।

स्त्री०—हमलोगोंका जो हाल है वह देखनेसे नज़र ही आता है पर मेरा जी माता पितासे मिलनेके लिये बहुत घबड़ाता है ।

श्याम०—उनलोगोंका भी तो यही हाल है, पर क्या किया जाय जीजाजी खुशी होकर राजीसे भेजें तबतो ले चला जाय ?

श्रीतुल०—(श्यामसुन्दरसे) अच्छा अब आप यह कहिये कि कहांसे आ रहे है वो किधरको जा रहे हो ?

श्याम०—मकान होसे आ रहे हैं, कुछ कार्य्यके लिये, सो रास्तेमें आपका मकान जानके ठहर गये, अब बहुत शीघ्र जायंगे।

श्रीतुल०—बहुत अच्छा किया जो ठहर गये, ऐसी जानेकी कौन सी जरूरत पड़ी है, रोज २ तो आप आते नहीं, जब आगये हैं तो दो चार रोज तो भला हमारे समीपमें रहिये।

श्याम०—अच्छा जैसा आप कहियेगा सोही करेंगे, आपको नाराज करके नहीं जायंगे, जब आप एक दो रोज में कहियेगा तभी सही।

श्रीतुल०—अच्छा अब यह कहिये, कि आपको भोजन करनेका क्या प्रबन्ध किया जाय, जो दिलमें रूचि हो उसे सँकोचको त्याग कर कह दिया जाय।

श्याम०—आप मेरे लिये कोई चिन्ता न कीजिये, जो कुछ आप श्री ठाकुरजीका भोग लगाकर पायंगे उसमेंसे ही हम भी कुछ खायंगे, पर हां, आप बाजार जाईये, और मेरे लिये जानेको कोई सवारी ठीक कर आईये।

श्रीतुल०—बहुत अच्छा एक जरुरीका काम है सो मैं बाजार जाता हूं, सब बात शीघ्र ही ठीक करे आता हूं, तुमलोग बहुत खुशीके साथ रहना घबड़ाना नहीं ?

श्याम०—बहुत अच्छा आप जाईये हमलोग नहीं घबड़ायेंगे॥

(श्री तुलसीदासजीका प्रस्थान)

(श्यामसुन्दरका अपने वहिनसे कहना)

श्याम०—बहिन इस समय भाग चलनेका यह अच्छा मौका है सो मेरे साथ भाग चलो, क्योंकि वह राजीसे तो कभी नहीं जानेदेंगे ?

स्त्री०—हां भाई वह राजीसे तो कभी नहीं भेजेगे, क्योंकि मेरे ऊपर उनका स्नेह वहुत रहता है, अच्छा चलो।

श्याम— (श्री तुलसीदासके पड़ोसोसे कहना) भाई तुमलोग श्री तुलसीदासजी महाराजसे यह बात कह देना कि तुम्हारा साला अपने बहिनको साथ लेकरके अपने मकानको गया।

पड़ोसी०—बहुत अच्छा।

[श्यामसुन्दरका अपने बहिनको साथ लेकर प्रस्थान]

श्रीतुल०—(स्वयं) कोई हितू अपने घरपर आवे तो यथा योग्य उसका सत्कार भला कैसे किया जावे ? इसी लिये वाजारमें जाकर अच्छे अच्छे भोजनका सामान लाया हूं, अब रसोई स्त्रीसे बनवाकर श्री ठाकुरजीका भोग लगाउंगा वो प्रसाद श्यामसुन्दरको दिवाउंगा वो हरखाउंगा (मकानके भीतर जा) हैं यह क्या इसमें तो कोई नहीं है ? हाय अब मैं उन्हें कहा खोजनेके लिये जाऊं ? किससे पता लगाऊं ? कैसे पाऊं ?

(चिन्तित हो जाना)

पड़ोसी०—(श्रीतुलसीदासजीका व्याकुल देखकर कहना) आपका साला अपनी बहिनको साथ लेकर अपने मकानको गया।

श्रीतुल०—क्या आप यह सत्य कहते हैं ?

पड़ोसी—जी हां, हमलोगोंको झूठ बोलनेसे क्या नफा है जो हम लोग झूठ बोलेंगे बलिक आपका साला यह बात जाते मरतबे आपसे कहनेके लिये कह गया है इसीसे हम जानते भी हैं।

श्रीतुल०—क्या कहें भाई, सालेने तो अच्छी प्रीतिकी रीति दिखलाई ? आप भी गया, वो स्त्रीको भी साथ लेगया, हमसे पहिले कुछ भी कहा नहीं ? वो बूझा तक नहीं ? स्त्रीने भी बड़ी नालायकीकी जो मेरी विना आज्ञा लिये हुये ही चली गई यही सब कलि कालका धर्म है, जो संत गुरूसे बिमुख है उनका सब प्रकारसे बिगड़ा हुआ कर्म्म है जो अवारे हो गये हैं क्या उन्हें शर्म है ?

ड़ो०—अब आप चिन्ताको त्यागिये, धीरज धर अपने सुकार्य्यमें लगिये।

तुल०—अच्छा, भाई, तुमलोग कुछ मेरी करो? भलाई।

ड़ो०—कहिये क्या कहते हैं, हमसे होने लायक कहोगे वह अवश्य करेंगे ? पर क्या कोई नई बात आपके दिलमें समाई ?

तुल०—नई समझो, या पुरानी, हमारा आपलोगसे यह कहना है, कि एक तो मेरे घरके तरफ निगाह रखना, और दूसरे श्री ठाकुरजी महाराजकी सेवा पूजा कर देना।

ड़ो०—तो क्या आप कहीं जाते हैं ?

तुल०—जी हाँ स्त्रीके बिना अकेले घबराते हैं ?

पड़ो०—तो आप घवड़ाहटको ही, यत्नकर क्यों नहीं हटाते हैं ?

श्रीतुल०—हां इसीका ही इन्तजाम करने जाते हैं ?

पड़ोसी०—कहां ?

श्रीतुल०—ससुरार जायंगे, स्त्रीको साथ लेकर आयंगे तब आराम पायंगे।

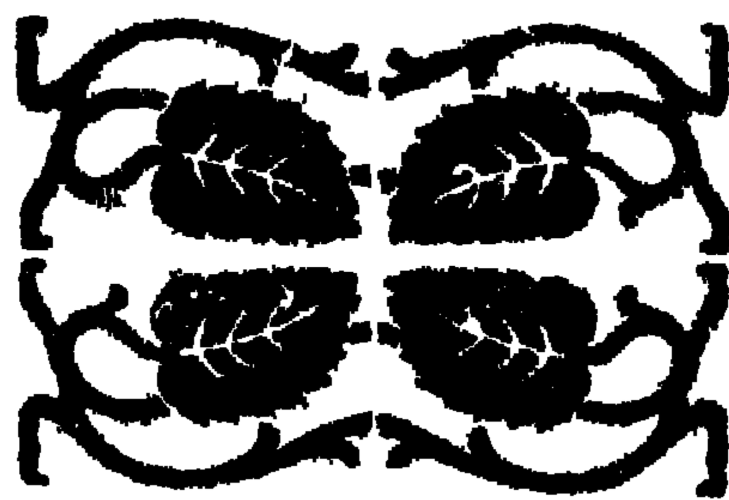
पड़ो०—पर अभी अभी आप काहेको जाइयेगा ? क्योंकि अभी तो वे लोग वहां पहुंचे भी नहीं होंगे, यदि आपको ऐसी ही जल्दी हो तो, दस पन्द्रह दिन बाद चले जाइयेगा, बोल आइयेगा।

श्रीतुल०—किसका दस पन्द्रह दिन ? मुझे तो अब पल भी उस स्त्रीके बिना वर्षके सामान जना रहा है, जी भी बहुत कष्ट पा रहा है, मैं तो अब वहीं जाकर धीर धरूंगा.? उसे देखूंगा तभी स्नान वो भोजन करूंगा ?

पड़ो०—अच्छा जब आपका यह हाल है तो, जाइये, परन्तु देर न लगाकरके शीघ्र ही आइये ? वहां जाकर आप ससुरारके लोगोंकी मोहब्बतमें फंस न जाईये ?

श्रीतुल०—नहीं, मैं फंसूंगा नहीं, बहुत ही शीघ्र आऊंगा।

(घबड़ाये हुए श्री तुलसीदासजीका प्रस्थान करना)



चौथा दृश्य

—:*:—

(स्थान दीनबन्धुका मकान)

[तहाँ दीनबन्धुका बैठे नजर आना और श्यामसुन्दरका अपने बहिनको साथ लिये हुए प्रवेश करना।]

—पिताजी ! प्रणाम करता हूं। (हाथ जोड़ना)

-चिरंजीव रहो पुत्र।

—देखिये जो मैंने कहा, वह कर दिखाया, अपनी बहिनको साथमें ले ही आया।

-हाँ, ठीक है, पर यह कहो कि राजीसे लाये, या कोई दूसरी तरकीब करके लाने पाये ?

—भला वह राजीसे कब भेजनेवाले रहे, जब हमारे कहनेसे वह बाजारको गये, तब हम अपनी बहिनको साथ लेकर इधर आये ?

-तब तो वह बाजारसे आये होंगे, तो बहुत ही घबड़ाये होंगे, कहां तुमलोगोंको खोजने जायंगे, जो पायंगे ?

—पर इसीके लिये आते समय हमने उनके पड़ोसियोंसे इस बातको खूब अच्छी तरहसे जना दिया है वह लोग उन्हें कह देंगे।

-खैर तुमने यह बहुत अच्छा किया, जो उनके पड़ोसियोंसे समझाकर कह दिया।

(नौकर दाईका प्रवेश)

नौ० दा०—(श्यामसुन्दरसे) आपने यह बहुत ही अच्छा किया जो मौका देखकर अपनी बहिनको साथ लेकरके अपना रास्ता लिया ।

श्याम०—ऐसा जो नहीं करते तो लाने ही नहीं पाते, तुम लोगों-की तरह हम भी पछताते हुए खाली ही लौट आते ।

(नौकर, दाई, श्यामसुन्दरका प्रस्थान)

(श्री तुलसीदासजीका घबड़ाये हुए प्रवेश करना)

श्रीतुल०—(दीनबन्धुसे) मैं आपको प्रणाम करता हूं !

दीन०—आनन्द रहिये, पर आप ऐसे घबड़ाये हुए क्यों हैं सो कहिये ?

श्रीतुल०—घबड़ानेकी बात है इस लिये घबड़ाया हुआ हूं, आपके पुत्र श्यामसुन्दरका सताया हुआ हूं ?

दीन०—क्या ? उसने आपके साथमें कुछ अनीति किया है ? या आपको किसी तरहसे कष्ट दिया है ?

श्रीतुल०—जीहाँ सुनिये, नहीं मालूम कि उसने अपनी बहिनको साथलेकर कहाँका रास्ता लिया, मैं आपके पुत्र वो पुत्री-को अपने मकानमें छोड़कर बाजारको गया पर बाजारसे लौटकर आया तो उन लोगोंको मकानमें नहीं पाया ? इसी से बहुत घबड़ाया हूं, और पता लगानेके लिये यहां आया हूं ? ।

दीन०—तो क्या आपके पड़ोसियोंने आपसे नही बताया ?

—जीहाँ, खुलासा सारा हाल तो नहीं सुनाया ?

(श्यामसुन्दरका प्रवेश)

[दीनबन्धुका प्रस्थान]

-[श्रीतुलसी०] नमस्कार जीजाजी। [सर झुकाकर हाथ जोड़ना।]

—नमस्कार ? क्यों जी तुमने तो हमें खूब छकाया ?

-क्या छकाया, हम तो आपके पड़ोसीसे कहकर आये।

—भला आपही बताइये कि क्या यह उचित बात है ? जो साहूकार होकर चोरोंकी तरह भाग आये, हमसे कुछ भी नहीं कहा, हमें सतानेसे तुमने अपना क्या लाभ माना ?

-खैर जो बात हो गई वह चिन्ता करनेसे फिरती लौटकर नहीं आवेगी, इस लिये हम आपसे विनय करके कहते हैं, कि अब आप अपनी तबियतको सम्हालिये, वो हैरानी जो हुई हो उसे पानी लेकरके धो डारिये ? [पानी लाकर] लीजिये।

—अच्छा मेरी बातको ख्याल करिये, कि यदि आपको अपनी बहिनको साथ ही लाना रहा, तो आप थोड़ी देर ठहर जाते, जब हम बाजारसे आते तो खुशीके साथ आपके संग ही पठाते, इसमें आपका क्या हर्ज रहा ?

—जी हाँ यह तो आपका कहना सही है, पर यदि ऐसी आपसे कुछ भी उम्मेद पाई जाती ?· तब भला इस तरहसे भागने और भगालानेकी तकलीफ क्यों उठाई जाती ?

श्रीतुल०—क्यों यह बात आपने कैसे कही ? क्या कभी आपने मुझे अजमाया रहा ? जो मैंने इनकार करके आपको खाली लौटाया रहा ?

श्याम०—जी हां सुनिये, हमको नहीं तो, कई मरतबे हमारे दाई वो नौकरोंको तो आपने विमुख फिराया रहा ?

श्रीतुल०—पर जो हो, ऐसा आपको विलकुल करना उचित नही रहा ।

श्याम०—(लज्जित हो हाथ जोड़) अच्छा जो अपराध हो चुका उसे, अब क्षमा कीजिये, फिर ऐसा कभी नहीं होने पायेगा, रात्रि बहुत विशेष व्यतीत हो गई सो चल करके प्रसाद पाईये, और आरामसे सो जाईये और जो कुछ बाकी यदि रह गया होय तो कल सबेरे उठकर उसे निपटा लीजियेगा, जो कुछ आपका नुकसान हुआ हो उसका हमें दण्ड दीजियेगा ?

श्रीतुल०—(हंसकर) अच्छा यहां ही प्रसाद पाकर आराम किया जायगा ।

श्याम०—बहुत अच्छा यहीं ही मंगवाता हूं (नौकरको पुकारना) अरे रामलगन यहांपर ही श्री तुलसीदासजी महाराजके लिये प्रसाद पानेके लिये ला ।

(श्रीतुलसीदासजीके प्रसाद पानेके लिये थारीमें लिये हुए रामलगन नौकरका प्रवेश करके उनके सम्मुख धरना ।]

(श्रीतुलसीदासजीका प्रसाद पाना)

श्रीतुल०—(श्यामसुन्दरसे) जाइये अब आप भी प्रसाद सेवन-करके शयन कीजिये।

श्याम०—बहुत खूब मैं जाऊंगा पर प्रथम आपके शयन करनेका प्रबन्ध ठीक करा दूं।

(नौकरसे चारपाई मंगाकर विछौन बिछाना श्रीतुलसीदासजीका चारपाईपर लेटना परस्पर प्रणाम करके श्यामसुन्दरका प्रस्थान)

(श्रीतुलसीदासजीका उठकर)

श्रीतुल०—(स्वयं) मेरे नेत्रोंमें निद्रा कहाँ? जिसको ले जानेके लिये ऐसी ऐसी कठिनाइयां झेलकरके यहां तक आया, पर उसको ले जाना तो दूर ही रहा, उसके शरीरको भी नहीं देख पाया अब तलाश करके उसके पास जरूर जाना चाहिये, और अपने प्रेमको उसे दिखलाना चाहिये, पर प्रथम यह देख लेना अति आवश्यक है कि सब सो गये या नहीं? (डरते डरते चारो तरफ देखकर) मालूम तो यही होता है कि सब सो गये, अब मैं अपना काम बनाऊं [स्त्रीको खोजना एक कोठरीके कपाटको खोलकर जाना और स्त्रीको घोर निद्रामें सोई हुई पाना और कहना] इस समय यह तो घोर निद्रामें सो रही है, कैसे जगाऊं? तो क्या बिना प्रेम दिखलाये ही चला जाऊं? यदि जगाऊं

तो कहीं चोर चोर कह करके हल्ला तो नहीं मचायगी ! इसी बातका भय लगता है । जो ऐसा हुआ तो बहुत ही शर्माना पड़ेगा ? अब जो कुछ हो पर जगाना तो बहुत ही जरुरी है अस्तु धीरेसे जगाता हूं । (धीरेसे शरीरको छूकर) प्यारी ! नहीं उठी गहरी निद्रामें है, (जोरसे हिलाकर) प्यारी !

स्त्री०—(सोये सोये डरते हुए) हैं ! इस कुसमय, अन्धेरी रात्रिमें मेरे पासमें कौन आया ? जो मीठा प्यारीका शब्द सुनाया ?

श्रीतुल०—प्यारी मैं तुलसीदास हूं ।

स्त्री०—(उठकर) आप, इस कुसमयमें मेरे पास कैसे, और किस लिये आये ?

श्रीतुल०—क्या, कहूँ प्यारी तुम्हारा प्रेम बरबस खींच लाया ?

स्त्री०—क्यों जी ? क्या मेरे बिना आपसे दस रोज भी नहीं रहा जाता है ?

श्रीतुल०—किसे दस रोज आता है ? मुझे तो तुम्हें बिना देखे एक पल भी कल्प सम जाता है, और भोजन भी नहीं भाता है, दिल बे चैन होकर हरदम घबराता है ?

स्त्री०—आपने तो, मुझे एकदमसे बेहया बना दिया ! विचारिये तो सही कि भला कोई सुनेगा सो क्या कहेगा ?

श्रीतुल०—क्यों प्यारी कहना सुनना क्या पड़ा है, हम तुम राजी तो क्या करेंगे पाजी ? क्या किसीकी चोरी थोड़ी ही करी है ?

स्त्री०—भला चोरी नहीं तो यह कौन साहूकारी है? जो सबको सोये हुए देखकर चुपकेसे डरते हुए घरमें घुस आना और अपनेको साहूकार बना स्त्रियोंके काम करके क्या कोई हुआ है मरदाना ?

श्रीतुल०—प्यारी! आज तुम इतनी रुखाईसे क्यों बाते बनाती हो, जो प्रेम करनेके ऐवजमें खराब शब्दोंको सुनाती हो मेरे प्यारकी तरफ क्यों नहीं नजर उठाती हो हमें अपने हृदयसे काहे नही लगाती हो! (प्यारसे हाथ पकड़ना)

स्त्री०—(झटका दे हाथ छुड़ा) बस, अब आप यह बतलाइये कि मेरे यहांपर चले आनेका पता पाया या नहीं, पड़ोसियोंने आपसे बतलाया या नहीं ?

श्रीतुल०—हाँ पड़ोसियोंने सब साफ साफ कहकर बतलाया, यहाँपर ऐसी जल्दी न आनेकी राय देकर भी समझाया।

स्त्री०—तब ऐसे घबड़ाये हुए आनेकी भला क्या जरूरत रही ?

श्रीतुल०—पर हृदयमें तो तुम्हारी मूरत रही, यह मोहनी मूरत रही और क्या कहें, बस तुम्हें छोड़कर, हम अकेले मकान-में कैसे और क्यों रहें।

स्त्री०—क्या आप मनुष्य हैं ?

श्रीतुल०—हां हैं तो मनुष्य ही, पर तुम्हें क्या दिखाते हैं ?

स्त्री०—और क्या कुछ पढ़े लिखे भी हैं ?

श्रीतुल०—हाँ पढ़ा लिखा भी हूं। पर क्या तुम नहीं जानती हो

स्त्री०—अच्छा, तो अब आप सोचिये और समझिये, बुद्धिके द्वारा

मनको सुधार करके ध्यानमें लाइये कि, आपका क्या कर्त्तव्य है और क्या कर रहे हैं और क्या करना चाहिये ।

श्रीतुल०—प्यारी ! हमें क्या कहती हो, हम क्या करें क्योंकि हमारी बुद्धी और विचार तो तुम्हारी सुन्दरताईने सब हरण कर लिया है, उसीने अपना फन्दा डालकर अपने वस किया है और सुनो ।

बिन देखे धीरज नहीं अति से जिय अकुलाय ।
काह करूं कुछ बस नहीं लियो तुमन उरझाय ।
अस मोहि जतन बताय तुम रहो सदा हम पास ।
चाहे मेरो और स - सर्वस होवे नास ॥

श्री०—प्यारे तुम यह कैसी निकम्मी बातें करते हो ? अच्छा सुनो खाना, पीना, विषय करना, तो देखिये सभी चौरासी लाखकी योनियोंमें बर्तमान है, जिसमें जायगा, तिसमें ही पायगा पर क्या यह मनुष्यका शरीर जो एक अमूल्य रत्नसे बहुत बढ़कर है, क्या बार वार आयगा, क्योंकि प्रभू जब बड़ी भारी अनुग्रह करते है तव यह शरीर प्राप्त होता है इसके लिये देवता लोग तरसते रहते है, सो इसलिये उस हितकारी अपने स्वामी श्रीजानकी बरजीको अवश्य ही जानना चाहिये, जरुर २ जैसे हो नेह नाता लगा करके पहिचानके मानना चाहिये दृढ़ हृदयमें आनना चाहिये, अपनी जन्म जन्मकी बिगड़ीहुई बातका सुधारना चाहिये, इसीमें मनुष्यका कार्य्य वो करामात है, जिससे

ऐसा नहीं बन पड़ा उस मनुष्यके तनकी समझो कि बाजी मात है।

शैर—ऐसा होने सेही जानो मनुष्यका उद्धार है।
नेह प्रभूसे नहीं किया उसे जानो भूमि भार है॥
श्री जानकी बर नामकाले नाहीं जगमें सार है।
जोलिया काहू तरह उनका ही बेड़ा पार है॥
व्यर्थ जगमें आ मरे हैं जो इन्हे पाया नहीं।
जिसने इनको पालिया उनका ही ठीक बिचार है॥

श्रीतुल०—प्यारी! मुझे यह क्या सिखा रही हो क्या पत्थरमे जोंक लगानेकी युक्तिको काममें लारही हो।

शैर—ऐसा कहीं हुआ नहीं न होने ही की आस है।
पिघलेगा नहीं पत्थर कलेजा मुझे दृढ़ बिश्वास है॥

स्त्री०—अच्छा देखिये, जैसी ममता आप मेरे इस हाड़, चाम, माँस वो रक्त, और जिसके भीतरमें, मल मूत्र बिष्ठा, थूक भरा हुआ है ऐसे शरीरपर करते हैं, वह भी नाशमान है सदा थिर रहने वाला नहीं, इस लिये मैं आपसे प्रार्थना करती हूं, कि आप अपने सुन्दर शरीरके आयु रूपी धनको व्यर्थ मत गवाँईये मेरा झूठा प्रेम दोही दिनका है। उसे भूल जाइये, जो नेह मुझपर है वह नेह आप भगवानसे लगाइये, और अपने लोक वो परलोक दोनोंको ही बनाइये यह मेरी सुन्दर शिक्षाको मानिये इसीमें अपना परम हित जानिये, इस कठिन दुःखके भवसागरसे पार जानेका यही रास्ता है?

गाना

समझाई हुई मम मानो हाँ मानो हाँ मानो हाँ मानो।
अब प्रभुके नेह मार्ग आवो झूठोसे निज मनहिं हटावो॥
जैसेहो तैसे दृढ़ हिये लाओ श्रीजानकीवर जानो।
हाँ जानो हाँ जानो हाँ जानो॥

[स्त्रीका प्रस्थान]

[श्री तुलसीदासजीके नेत्र खुलकर उनको ज्ञान होना]

श्रीतुल०—हाय हाय, आजतक मैंने बड़ी भूलकी मैंने अपनी आयुको झूठे जगतके झगड़ोमें फंसाकर व्यर्थ ही खो दिया? इसी लिये इतनी अवस्थाको बिताया पर प्रभूसे बिमुख होकरके क्या पाया।

भूल करके फंस रहा था अवलो यह माया जाल में।
जानता था नेकी नहीं की हूं पड़ा दुःख गाल में॥
हे बिधाता तूं बता कि क्या लिखा मम भाल में।
आयु धन बहु खोय करके हो रहा कंगाल में॥
हाय कहां अब प्रभुको जिससे मन थिर हो मेरा।
क्या करूँ हे हरी बता दो जानलो मैं अब तेरा॥

(स्त्रीका प्रवेश करके कहना)

स्त्री०—अब आप चिन्ताको त्याग दीजिये, सत्संगकी राह लीजिये।

श्रीतुल०—तुम धन्य हो प्यारी! जो मुझे मोह रूपी निद्रासे सोते हुएको जगा दिया और सुखके मार्गको समझाकर बता दिया।

स्त्री०—अच्छा अब आप यहांसे शीघ्र जाइयें, देर न लगाइये।

श्रीतुल०—बहुत अच्छा प्यारी! जाता हूं, पर प्यारी अब तुम दया करके मेरे सन्मुखसे चली जाओ, अपने झूठे स्नेहमें मुझे नही फंसाओ।

स्त्री०—अच्छा, लो जाती हूं। (स्त्रीका प्रस्थान)

श्रीतुल०—(स्वयं हाथ जोड़कर) हे प्रभु, मुझे अब अपना बनाइये! क्योंकि मैं दीन हूं, और आप दीना नाथ हैं, और आप मेरे हरदम ही साथ हैं, फिर भी मैं दुःख पाऊं क्या यह बात ठीक है और अब मैं आपसे स्वामीका द्वार छोड़ करके भला कहाँ जाऊं! अब यह बतलाइये कि कौनसा यत्न करके आपको हृदयमें लाऊं।

(गाना)

मैं हरी पतित पावन सुने।
मै पतित तुम पतित पावन दोऊ वानक बने॥
व्याध गणिका गज अज़ामिल साखि निगमन भने।
और पतित अनेक तारे जात कापै गिने॥
जानी नाम अजानि लीन्हें नर्क यमपुर मने।
दास तुलसी शरण आये राखिये अपने॥

[श्रीतुलसीदासजीका प्रस्थान]

पांचवां दृश्य

—*:*:*—

[स्थान सहर श्रीकाशीपुरी]

[तहां पण्डोका परस्पर बकते हुए नजर आना]

प्रथम०—(गाकर) माई अन्नपूर्णाजी भेजो जजमान।

दूसरा०—भेजो जजमान ऐसा हो भाग्यमान।

तीसरा०—हो भाग्यमान हमें देवें खूब दान।

प्रथम०—भंग लड्डू से हम सबका खूब हो सनमान। (माई अन्न०।)

(वार्ता) पै गुरूजी कोई अभी लौ तो आया नहीं

दूस०—तो क्या कल तुमने कुछ पाया नहीं

प्रथम०—अजी कलकी बात तो कल गई, पर आज तो कुछ पाया नही?

तीसरा०—वह देखो सामान लिये हुए सामनेसे कोई जजमान आरहा हैं?

[श्रीतुलसीदासजीका गठड़ी लिये हुए प्रवेश करके पण्डोंको प्रणाम करना]

पण्डा०—आनन्द रहो, जजमान, चलके करिये अस्नान, वो हमको मिले जिसमें कुछ दक्षिणा वो दान।

श्री०—हां, भाई पहले ठहरनेका तो होने दो सामान, कोई दिलावो कम किराये पर अच्छा सा मकान। जिसमें पूरा हो दिलका अरमान।

पण्डा०—क्या आपकी यहांपर किसीसे नही है जान पहिचान?

श्रीतुल०—जी नहीं, इस तरफका यह पहिले ही आनेका मुझे
आया है ध्यान।

पण्डा०—क्या कुछ रोजतक यहाँपर रहके करियेगा प्रस्थान ?

श्रीतुल०—जीहाँ, कुछ कालतक होगा ठहरान।

पण्डा०—अच्छा तब चलिये

श्रीतुल०—हाँ चलिये।

[पण्डोंके साथ श्रीतुलसीदासजीका प्रस्थान]

[पण्डाका लेजाकर किरायेका एक मकान दिख-
लाना श्रीतुलसीदासजीको पसन्द आना किराया
ठीक करके उसीमें आसन लगाना]

पण्डा०—चलिये अब श्री गंगा स्नान करि आईये।

श्रीतुल०—बहुत अच्छा चलिये। (पण्डाके साथ प्रस्थान)

[दृश्य श्री गंगाजीका लहर लेते हुए नजर आना]

[पण्डाके साथ श्रीतुलसी दासजीका प्रवेशकर
स्नान करके फूल चढ़ाना और हाथ जोड़कर
प्रार्थना करना]

श्रीतुल०—हे गंगा माई करो सहाई, क्योंकि अब हम आपके
शरणमें आये हैं सो ख्याल करिये, मुझे अपना लघु बालक
जानकर सदा सम्हाल करिये, वो दया लाकर प्रतिपाल
करिये और भी सुनो;

प्रभुका मुझको दरश हो ऐसा मुझे बरदान दो।
नेह हो हरदम बढ़े येही सक्ति देकर ज्ञान दो॥

यह हरी पास रही तब जल पिऊं ऐसा मुझे स्थान दो।
अर्ज मेरी मानकर आपहु दरश मोहि आन दो।

[श्रीगंगाजीका प्रकट हो कहना]

श्रीगंगा०—एवमस्तु मैंने तुम्हारे रूचिके अनुकूल तुम्हें सब दिया, धीरे धीरे करके सब आपको प्राप्त हो जायगा।

सब०—बोलो श्री गंगामाई को जै।

[श्रीगंगाजीके जलमें हो जाना]

[श्रीतुलसीदासजीका पण्डोंके साथ प्रस्थान]

[स्थान श्री विश्वनाथजीका मंदिर तहां श्री विश्वनाथजीका बैठे हुए नजर आना]

[पण्डोंको साथ लिये हुए श्रीतुलसीदासजीका प्रवेश]

श्री विश्वनाथजीपर श्रीतुलसीदासजीका गंगाजल और पुष्प चढ़ाना और हाथ जोड़कर प्रार्थना करना

श्रीतुल०—हे श्री शंकरजी महाराज, आप औघड़ दानी हैं सबके घट घटके वासी हैं और अतिशय दानी है, इसी लिये मैं आपकी श्रीकाशीपुरीमें आया हूं, सो हमारी रक्षा करिये;

प्रसन्न हो करके मुझे अपने सरिस बनाईये।
दीजिये सियाराम भक्ति विमुख मत लौटाईये॥
रखिये हमें निज शरणमें प्रभु चरण दर्श कराईये।
सब दोष दुःख मम हरण करके अब हमें हरखाईये॥

[मूर्तीमेंसे अवाज आना]

घबरावो नहीं धीर धरो, धीरे धीरे तुम्हारा
सब मनोरथ भगवानजी, परिपूर्ण करेंगे,
दुःसहक्लेशोंको अवश्यही हरेंगे।

सब०—बोलो श्री शंकरजी महाराजकी जय।

श्रीतुल०—(पण्डोंको दान दक्षिणा देकर) महाराज अब आपलोग जाइये, क्यों कि मैं भी अब शौच क्रिया आदिको जाऊंगा।

पण्डा०—बहुत अच्छा जाते हैं, आपकी सदा जय जयकार हो, आपपर हितकारी श्रीजानकी वरजीका प्यार हो, यह हमलोग सच्चे हृदयसे आपको आशीर्वाद देते हैं।

[पण्डोंका प्रस्थान]

[श्रीतुलसीदासजीका प्रस्थान]

[स्थान जङ्गल जिसमें पेड़]

[लोटा लेकर श्रीतुलसीदासजीका शौच क्रिया आदिको जाना शौच क्रिया आदिसे बचा हुआ जल एक पेड़मेंसे डालना और एक भूतका प्रगट होना]

श्रीतुल०—[डरते हुए] भाई तुम कौन हो ?

भूत०—आप डरिये नहीं, मैं भूत हूं, भूत, आपने मेरे पेड़में जल दिया है, मुझे अतिशय सन्तुष्ट किया है, उससे मेरी पियास बुझी है, इस लिये मैं प्रसन्न हूं आप जो मांगिये वही देनेको तय्यार हूं।

श्रीतुल०—अच्छा तो तुम मुझे श्रीरघुनन्दन स्वामीके दर्शन करादो, और मेरी यह लालसाको पूरा करो।

भूत०—महाराज ऐसी सामर्थ्य तो मैंने नहीं पाई है, इसलिये ऐसा करनेसे लाचार हूं, मुझसे होनेके लायक जो कुछ हो वह सब आपकी आज्ञा मानकर मैं करनेके लिये हर प्रकारसे तैयार हूं ।

श्रीतुल०—अच्छा तो बता कि तू क्या कर सकता है और कहाँ तक तेरा जोर है ।

भूत०—सुनिये, मैं श्री हनुमानजीका पता बता सकता हूं, बल्कि श्री अयोध्यापुरीमें भी पहुंचा सकता हूं ।

श्रीतुल०—अच्छा तो प्रथम श्रीहनुमानजीको बताओ साफ साफ फिर श्रीअयोध्यामें मुझे शीघ्र पहुंचाओ ।

भूत०—बहुत अच्छा सुनिये, श्री अयोध्याजीमें श्री राम घाटपर नित्य सायंकालको एक पण्डित श्री सीतारामजीके अनन्य भक्त श्रीराम कथाको बड़े प्रेमपूर्वक कहते हैं, मानों वह सबके दुःखोंको हरते हैं उसी कथामें सबसे प्रथम कुष्ट रूपमें श्री हनुमानजी आकर सबसे अलग हटकरएक कोनेमें बैठकर कथा श्रवण करते हैं और सबके पीछे जाते हैं सो आप जान लेना रंग रूपदेखकरके पहिचान लेना !

[दोनोंका अलोप होना]



छटवां दृश्य

—:-*-:—

[स्थान श्री अयोध्या पुरी]

[जहाँ पर संतोका श्री सीताराम नाम प्रेम पूर्वक रटते हुए नज़र आना और भूतका श्री तुलसीदासजीको लिये हुए आसमानसे उतरकर कहना]

भूत०—महाराज, यही श्री अयोध्यापुरी है।

श्रीतुल०—क्या श्री अयोध्या पुरीमें इतने शीघ्र पहुंच गये ?

भूत०—जी हाँ, अच्छा, अब मैं जाता हूं, फिर जब आपको मुझसे कोई काम कराना हो तो आप मुझे याद कीजियेगा।

श्रीतुल०—बहुत अच्छा जा, फिर मैं बुलाऊं तो आना।

भूत०—ठीक है मुझे मंजूर है, पर उसी पेड़में मैं रहता हूं, सो मेरे पास खबर भेजना, या दयाकर खुद आप आनेका कष्ट उठाना।

[भूतका अदृश होना]

(श्री तुलसीदासजी अयोध्यापुरीकी शोभा देख कर)

श्रीतुल०—अहा हा, क्या ही सुन्दर और रमणीय स्थान है ? चारो तरफ कैसी अपूर्व बहार छाई है। इसको देख करके अतयन्त हृदयको प्रसन्नता होती है।

[गायन]

क्या भूमि सोहावन है मनको सब विधि हरखावन है।

ठौर ठौरमें नाम सुअङ्कित प्रभुके चित मन भावन है ॥
॥ मनको सब बिधि० ॥
उत्तर दिशि सोहें श्री सरयू घाट जिया ललचावन है।
संतन भीर पीर लखि भागें श्रीजानकीबर गुण गावन है ॥
॥ मनको सब विधि० ॥
सुन्दर हाट बाटकी शोभा बरनत हिये अरूझावन है।
सुमिरत नाम हरत सब बाधा प्रेम प्रभा पुर छावन है ॥
॥ मनको सब बिधि० ॥
श्री अवधकी महिमा सकै कौन कह तन धरि प्रभु जहां आवन है।
पुरुषोत्तम प्रभु अवश्य मिलेंगें जो यही थल रह जावन है ॥
॥ मनको सब बिधि० ॥

[श्री तुलसीदासजीका प्रस्थान]

(स्थान राम घाटका मंदिर)

[जहाँ सबसे प्रथम एक कोढ़ीका आकर अलग हटकर बैठना फिर कथा कहने वाले पण्डितका आकर बैठना उसके बाद सब श्रोतागणोंका आकर बैठना पंडितका कथा बाँचकर अर्थ कहना उसी समय तुलसीदासजीका प्रवेश कर चारों तरफ देखकर कोढ़ीके रुपमें श्री हनुमानजीके समीप बैठना]

(मनमें प्रणाम करके)

श्रीपंडित०— (श्लोक) कल्याणानाँ निधानं कलिमल मथनं पावनं

पावनानं पाथेयं यन्मु मुक्षोः सपेद् पर प्रास्य प्रेस्थि तस्य बिश्राम स्थानमें कविबर वचसाँ जीवनं सज्जनानं बीजं धर्म्म द्रु मस्य प्रभवतु भवताँ भुतये राम नाम ॥

(अर्थ) कैसे हैं श्री राम नाम सो सुनो। सब बिशेषण श्री राम नामका है, समस्त कल्याणके दिब्य स्थान है और कलियुगके पाप तापको नाश करने हारे हैं। पावन जो गंगादिक तीर्थ तिन सबको भी पवित्र करने हारे हैं। पुनः कैसे हैं, मुक्तो जो परम धाम, तिनके प्रातकी इच्छा वालनको, शीघ्रतर, परम पद प्राप्तके निमित, परम पुष्ट मुष्ट राह खरच है, परन्तु दृढ़ होयके यात्रा किये होय। पुनि कैसे हैं श्री राम नाम कवि जो बालमीकादिक, तथा समस्त वक्तनके, वचनोक्त मनको, बिश्राम देनेको विशद धाम है। अभिप्राय यह कि बिना श्रीनामावलम्ब किये किसीको बिश्राम नहीं। पुनि कैसे हैं श्री राम नाम सब सज्जनको परम जीवन हैं। अभिप्राय यह कि बिना नाम जपे सज्जन बिवेकी अपनेको मृतक मानते हैं। जीवन साँचो तब ही है जब नाम रटन होय। पुनि कैसे हैं श्रीरामनाम समस्त सामान्य विशेष धर्मनको बीज है। कहिये। तो कारण दो प्रकारके होते हैं। उपदान निमित्त उपदान,। जैसे घटको मृतिका निमित कुलाल है। ऐसे ही श्री राम नाम सब धर्म्म मय हैं, और सब धर्मके कर्ता भी हैं, सर्वोपर परत्व श्री राम नामका है, पुनि कैसे हैं

कि कल्याण पद करिके जो ज्ञान वैराग्यादिक समस्त शुभ साधन साध्य समेत समझना भजन सतसंग करनेसे धीरे धीरे सब समझ पड़ेगा।

[बोलिये श्री सीता रामजी महाराजा धिराजकी जय।]

सब०—श्री सिता राम महाराजा धिराजा की जय, जय कहकर श्रो पण्डितजीको प्रणाम करके जाते हुए नजर आना, पण्डितका प्रस्थान उसके बाद कुष्ट रूपमें श्री हनुमानजीका उठकर चलना थोड़ी दूर उनके पीछे श्री तुलसीदासजीका जाकर उनके पैर पकड़ना]

श्रीतुल०—(सिर नवा) स्वामी अब अनुग्रह करिये ?

श्रीहनु०—छोड़, छोड़, छोड़, दूर, दूर, दूर, मुझे छू करके अपनेको क्यों अशुद्ध बनाते हो ?

श्री तुल०—क्या ऐसे डरा करके मुझे हटाते हो ? मैं आपको खूब अच्छी तरहसे जान गया हूं कुष्ट रूपमें आप श्री हनुमानजी है, यह पहचान गया हूं।

श्री हनु०—अच्छा तो बताइये कि आप क्या चाहते हैं।

श्री तुल—बस, आप श्री रघुनन्दनजी स्वामीके दर्शन करा दीजिये इस मेरी रूचिको दया करके पूरा कीजिए।

श्रीहनु०—अच्छा आप चित्रकूटमें जाइये, कुछ कालतक सनेम रहिये सत्संग, भजनमें मन लगाइये, और उस जगहके सब तीर्थोंको अवलोकन करके कुछ दिन बिताइये, फिर श्री रघुनन्दन स्वामीका दर्शन पाइयेगा और हृदयको हरषाइयेगा।

श्रीतुल०—बहुत अच्छा जो आज्ञा।

[श्री तुलसीदासजीका सिर झुका हाथ जोड़ना और श्री हनुमानजीका आशीर्वाद देकर अन्तरध्यान होना]

[श्री तुलसीदासजीका गाते हुए प्रस्थान]

[गायन]

हाय कौन विधि दर्शन पाऊं कैसे जिया हरषाऊं।
याही लिये मैं भटकत डोलूं देवी देव मनाऊं॥
वही अन्तरयामी स्वामीको मैं केहि भाति रिझाऊं।
घट घटकी सब जानि रहे प्रभुताको काह जनाऊं॥
करिहैं अनुग्रह वोर हेरी जो बार बार सिर नाऊं।
पुरुषोत्तम प्रभुहीका भरोसा राखि शरण गोहराऊं॥

[प्रस्थान]

सातवां दृश्य

—:—*—:—

[स्थान चित्रकूट]

[जहां एक पाखण्डी वेषधारीका आकर स्वयं कहना।]

वेष०—(चारोंतरफ देखकर) वाह वाह मेरा क्या कहना, मुझसे तो अहा हा सब राजी क्या राजा क्या पाजी। जिसे जैसा देखा, तिसके साथ तैसा ही बात बनाया, फुसलाकर, रिझाकर, बुझाकर, फंसाया। और अपना काम

चलाया, सांचको तो जूतियोंसे मारकर अपनेसे दूर भगाया, जानता हूं तो कुछ भी नहीं, पर आकरके जो कोई जो कुछ पूछता है उसे सब बताता हूं, अट सट कह करके सिद्धाई दिखाता हूं समझाता हूं, पासमें तो इस समय कुछ भी नहीं हैं। पर जो कोई जोही कुछ मांगेगा उसको जवान हींसे सब कुछ दूंगा, उसके ऐवजमें जो उसके पास होगा, वह सब ले लूंगा, रुपैया और अन्न कपड़ोंका, तथा गहनोंका तो ढेर लगा हुआ हैं क्यों कि बहुत पाया है सन्तोषको नशाया लोभसे मित्रता की है, आज कलके समयमें जो सच्चाईकी दुम लगाये फिरते है वह भूखों मरते हैं जहां तहां अपने खाने हीके वास्ते टहला करते हैं। मेरे ऐसे खूब पेट भी भरते हैं और ले जाकर बहुतसा घरमें भी धरते हैं।

ऐसे कलिकालमें सच्चोंकी बूझ नहीं, झूठ फरेव करके बहुतेरे अन्धे हो रहे हैं इसी लिये उनकी पूंछ नहीं! पर क्या बात है जो कोई आज मेरे पासमें नहीं आया है?

[सामने देखकर] हाँ सामनेसे एक मनुष्य आ तो रहा है, अब मैं अपना ध्यान लगाऊं तो मैं भी अपने शिकारको बगुलाकी तरह अपने फन्देमें उरुझाऊं उससे कुछ कमाऊं तो आप पाऊं।

[ध्यान लगा कर बैठना]

[श्री सीताराम २ कहते हुए श्री तुलसीदासजीका प्रवेश]

श्रीतुल०— (श्री चित्रकूटकी बहार देख) [स्वयं] अहाहा! क्या ही बनकी शोभा निराली है। मानों प्रभुने निज करोंसे इन पेड़ोंकी सींची डाली है, वाह वाह भूमि कैसी सुहावनी दृष्टी आती है, जो देखनेहीसे रोम रोमको हरषाती है और हृदयमें प्रेमको अधिक बढ़ाती है!

यह चित्रकूटकी लखि शोभा अपार हैं।
आनन्द देने वाली ची ' बेशुमार है॥
मंदाकिनीकी छटा देखि वढ़ता प्यार है।
अवलोकिये चहुं ओरसे बहारी बहार हैं॥

अब मैं प्रथम जाऊं, और यहांके सब तीर्थोंके दर्शन करिके आऊं तो कोई निवास करनेका स्थान बनाऊं।

[प्रस्थान]

भेषधारी०—हैं क्या चला गया ? मुझसे बात भी नहीं किया ! हाँ ठीक है समझा, यह जाना कि ध्यानमें हैं, अच्छा अब मैं भी आँखे वन्द करके श्री सीताराम २ कहता हूं।

[आँखे वन्द कर श्री सीताराम २ कहना]

[एक बनियाँका प्रवेश कर स्वयं कहना]

बनि०—यह तो वड़ा अच्छा संत मालूम होता है, जो अपने मुखसे श्रीसीतारामनामको कहकर हृदयकी मैल धोता हैं। इससे जरुर प्रेम करना उचित है। (पासमें जाकरके) [संतसे] संतराज मैं आपको सर झुकाके प्रणाम करता हूं।

[सर झुका हाथ जोड़ना]

भेष०—आनन्द रहो बच्चा, बनेरहो सच्चा, पक्के होकर कभी न होवो कच्चा।

बनिया०—महाराज! मुझसे आप अपनी कुछ सेवा लीजीये, करने की आज्ञा दीजीये?

भेष०—सुनो, बाबाके बच्चा, हमलोग तो पर उपकारी हैं, पर उपकारी, प्रथम जिसको कुछ दे देते हैं, उसीकी वस्तु लेते हैं, दूसरेकी नहीं।

बनिया०—अच्छा तब सुनिये, मुझे आपकी कृपासे और तो सब कुछ तैयार है।

भेष०—सुनो, सुनो हम कहते हैं, पर आपको द्रव्यकी दरकार है!

बनिया०—जी हाँ मेरे पास यह बहुत ही कम है, इसलिये यही चाहता हूं, कि मेरा यहाँ कपड़े और अन्नका कारोबार है।

भेष०—[जमीनसे धूर उठाकर] लो इस धूरको ले जाओ, इसके प्रतापसे सब श्री गुरू महाराज पूरा करेंगे, पर हमारे जैसे संतोका खूब तन मन धनसे सत्कार करना, उनसे जो बच जाय वही तुम अपने घरमें ले जाकर धरना, क्यों तुमने मेरा कहा हुआ समझ लिया?

बनिया०—जी हाँ, [भेषधारीको रुपैया देते हुए] इस समय यह तो आप ले लीजिये, फिर दूसरे वक्त और सेवामें हाजिर करूंगा।

भेष०—[रुपैया लेकर] क्या इस समय तुम्हारे पासमें और कुछ नहीं है?

बनियाँ०—जी कुछ और है

भेष०—तो जो हो वह सब दे दीजिये, क्यों कि मुझे बहुत उपकार करना है, बच्चा, यह शरीर मिथ्या है, सबको ही एक दिन अवश्य मरना है ॥

बनियां०—बहुत अच्छा, यह भी लीजिये [सब देना] मुझे आशीर्वाद दीजिये ॥

भेष०—(सब ले कर) सुखी रहो, जो कुछ पैदा प्राप्त हो वह सब हमें दे करके अपने दोष दुःख दहो, यह बातको मानों, इसीमें अपना हित जानो ॥

बनियाँ०—अच्छा, पर अब हमें आज्ञा मिले तो हम अपने घर जावें।

भेष०—पर फिर कब आओगे ?

बनियाँ०—जब आप कहिये

भेष०—अच्छा सुनो, जहाँतक हो सके शीघ्र ही आना, पर अबकी आते मरतबे साथमें हम जैसे संतोंके सत्कार करनेके लिये साथमें खूब अन्न, कपड़ोंको लाना, खबरदार भूल न जाना ?

बनियाँ०—बहुत अच्छा। [बनियांका सर झुका हाथ जोड़ना]

भेष०—आनन्द रहो, खुश रहो। [बनियांका प्रस्थान]

भेष०—[स्वयं खुश हो नाच कूदकर] वाहरे मैं! फिर तो मैं मैंही हूं। मेरा क्या कहना है! मेरी बराबरी इस संसारमें, दूसरा कौन कर सकता है। किसीके ठग लेना तो मेरे एक

हाथके बांये अंगुलीका काम है, इसी लिये मेरा झांसन-दास नाम बदनाम है। बापका भी फांसनदास नाम सर-नाम है, पर हमलोग सिर्फ एक लोभहीके गुलाम हैं। सदा ही यह हमलोगोंका कैसा अच्छा काम है।

[गाते हुए प्रस्थान]

मैंने ठगनेका फन्धा सीखा है सबको ठग ठगकर खाता हूं।
खूब तरक्की करके इसमें सार्टिफिकिट पाया हूं।
जो कोई मिलाजनाया बात जिस तरह हुआ लगाया घात
बिना लिये नहीं जाने देता अपने फन्द फंसाया हूं।
झूठ बोलते हरदम जात लोभहीसे है मेरा नात खाता
हलुआ मीठे भात कलिका दोस्त कहाया हूं।

[प्रस्थान]

[स्थान नदी मन्दाकिनि राम घाट तहां
चौकी बिछे चन्दन चकला कटोरी पानी
धरा हुआ नजर आना]

[तहांपर श्री तुलसीदासजीका श्री सीता राम
सीता राम रटते हुए आकरके चौकीपर बैठ-
करके चन्दन रगड़ना दो राजकुमारोंका प्रवेश]

बड़ेराज०—[श्रीतुलसीदाससे] महाराज हमलोग आपको प्रणाम करते है। [हाथ जोड़ना]

श्रीतुल०—(देखकर खुश हो) आनन्द रहिये, आपलोग कहां रहते हैं सो कहिये।

बड़े राज०—पासहोमें और बड़ी दूर।

श्रीतुल०—इसका क्या अर्थ है ?

बड़ेराज०—यहि कि इस समय आपके पासमें हैं, पर रहनेवाले बड़ी दूरके हैं।

श्रीतुल०—क्या आपलोगोंका दोनों जनेमें परस्पर कुछ नाता है।

बड़ेराज०—जीहाँ, [छोटेको नता] यह मेरा सगा छोटा भ्राता है।

श्रीतुल०—आपलोगोंका शुभ नाम क्या है ?

बड़ेराज०—मेरानाम तो, अन्तरयामी है (छोटेको बता) इसका नाम आज्ञा पलक अनुगामी है, अच्छा अब हमलोग आपको हाथ जोड़ते हैं।

[श्री तुलसीदासजीका आशिर्वाद देना
राजकुमारोंका हंसते हुए प्रस्थान]

श्रीतुल०—अहा ! कैसे सुन्दर राजकुमार थे, या कोई राजकुमारों-के भेषमें अवतार थे ! या संसार भरको अपनीसोभा देखा करके चकित करनेवाले मार थे ! ऐसी सोभा हमने तो आजतक कभी नेत्रोंसे नहीं देखी थी। वाह वाह मुखका मृदु बोल भी क्या ही प्यारा था ! इस लिये यह तो मै जरुर ही कहूंगा कि सबके मन वो चित्तको हरने हारे थे।

[श्री हनुमानजीका प्रवेश]

[देखकर श्री तुलसीदासजीका सास्टांग दण्डवत करना,]

श्रीहनु०—[उठाकर छातीसे लगा] आनन्द होकर रहो, कहो आपने श्री रघुनन्दनस्वामीका दर्शन तो पाया ?

श्रीतुल०—कहिये! कहिये, उनने कब दरश दिखाया।

श्रीहनु०—थोड़ी देर पहिले।

श्रीतुल०—कैसे मुझे तो श्रीरघुनन्दन स्वामी नजरमें नहीं आये।

श्रीहनु०—रघुनन्दन स्वामी तो राजकुमार है, सो राजकुमारके भेषमें आपको दर्शन कराया, अपने सुन्दर शब्द भी मुखारविन्दसे सुनाया ?

श्रीतुल०—क्या वहीं रहे ? वह श्रीरघुनन्दन स्वामी रहें।

श्रीहनु०—जीहां, प्रभु सरनामी, वो अन्तरयामी रहे।

श्रीतुल०—पर साथमें दूसरे कौन रहे ?

श्रीहनु०—वह श्री लक्ष्मण अनुगामी रहे।

श्रीतुल०—हाय हाय, तब तो मैंने बहुत ही भूल किया जो उन्हें पहिचाना नहीं, रंग वो रूप देख करके भी बोल चालके ढङ्गसे भी जाना नहीं।

[रोकर गाना]

लोचन रहे बैरी होय।
जानि बूझ अकाज कीन्हों गये भूमें गोय ॥
अब गति तेरी जो गति न जान्यों रह्यो जागत सोय।
सबै छविकी अवधमें हैं निकसी गे ढिग होय ॥
कर्म हीन मैं पाय हीरा दयो पलमें खोय।
दास तुलसी राम बिछुरे काहि कहिये रोय ॥

[व्याकुल होना]

श्रीहनु०—अब आप व्याकुलताको त्याग दीजिये संतोषसे काम

लीजिये। भला वह दयालु महाराज संत सिरताज अपने सेवककी बातको भला किस तरह नहीं पूरी करें। क्यों सुनिये।

भक्त बत्सल नाम जिनका सब जगह विख्यात हैं।
कैसे न करते भक्तकी फिर नाथ पूरी बात है॥
याद करते जो उन्हें तेहिं भूलते वह भी नहीं।
देखते हैं प्रेमको वह नहीं बिचारे जात हैं॥
भीलनी ऊंची भई श्री रामके सत्कारसे।
भील ऊंचा पद लहा श्री रामजीके प्यारसे॥

श्रीतुल०—आपका कहना सब ठीक है, पर हाय मुझे किस तरह-से सन्तोष आवे? अब इस शरीरसे क्या लाभ होनेबाला है? न मालूम मेरे इस कुटिल कर्म्ममें विधाताने क्या लिखा है। क्या करूं, कहांपर जाऊं, कैसे अपने उस हितकारी श्री रघुनन्दन स्वामीको पाऊं?

श्रीहनु०—अब आप मेरा कहना मानकर धीरज धरो, और उसी सुन्दर राजकुमारके स्वरुपका ध्यान करो।

श्रीतुल०—स्वामी! यह आपका कहना तो ठीक है, पर श्री रघु-नन्दन स्वामीके दर्शन बिना हुए अब तो मेरा जीना बेकार हैं यह शरीर व्यर्थका पृथ्वीपर भार है। क्योंकि मुझे प्रभुके दर्शनोंका ही सिर्फ एक आधार है। अब तो उनके बिना देखे ऐसे जीते रहनेपर कोटि कोटि धिक्कार है।

[नदीमें कूदनेको चाहना]

श्रीहनु०—(रोककर) अच्छा जब आपका यही विचार है, तो फिर भी श्री रघुनन्दन स्वामीको दर्शन देनेसे भला कब इनकार हैं । वह आपको दर्शन देकर आपकी सुधि लेवेंगे ।

श्रीतुल०—पर अब तो मुझे उनके बिना देखे पल मात्र भी चैन वो आराम नहीं आवेगा, बिना जलके मछलीके सदृश्य तड़प तड़पकर प्राण जावेगा ?

श्रीहनु०—अच्छा जब आपका ऐसा हाल है तो मैं प्रभुसे विनय सुनाता हूं, आपको दर्शन होनेके लिये अर्ज करता हूं ।

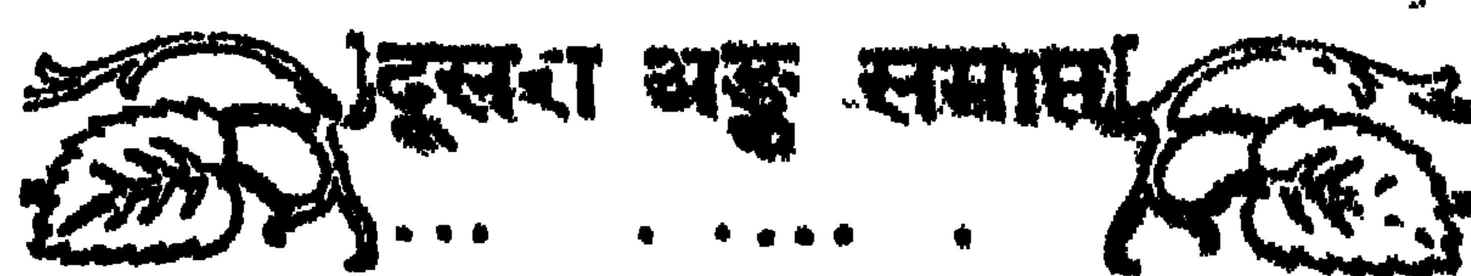
श्रीतुल०—(साष्टाँग चरणोंमें पड़कर) धन्य हो स्वामी !

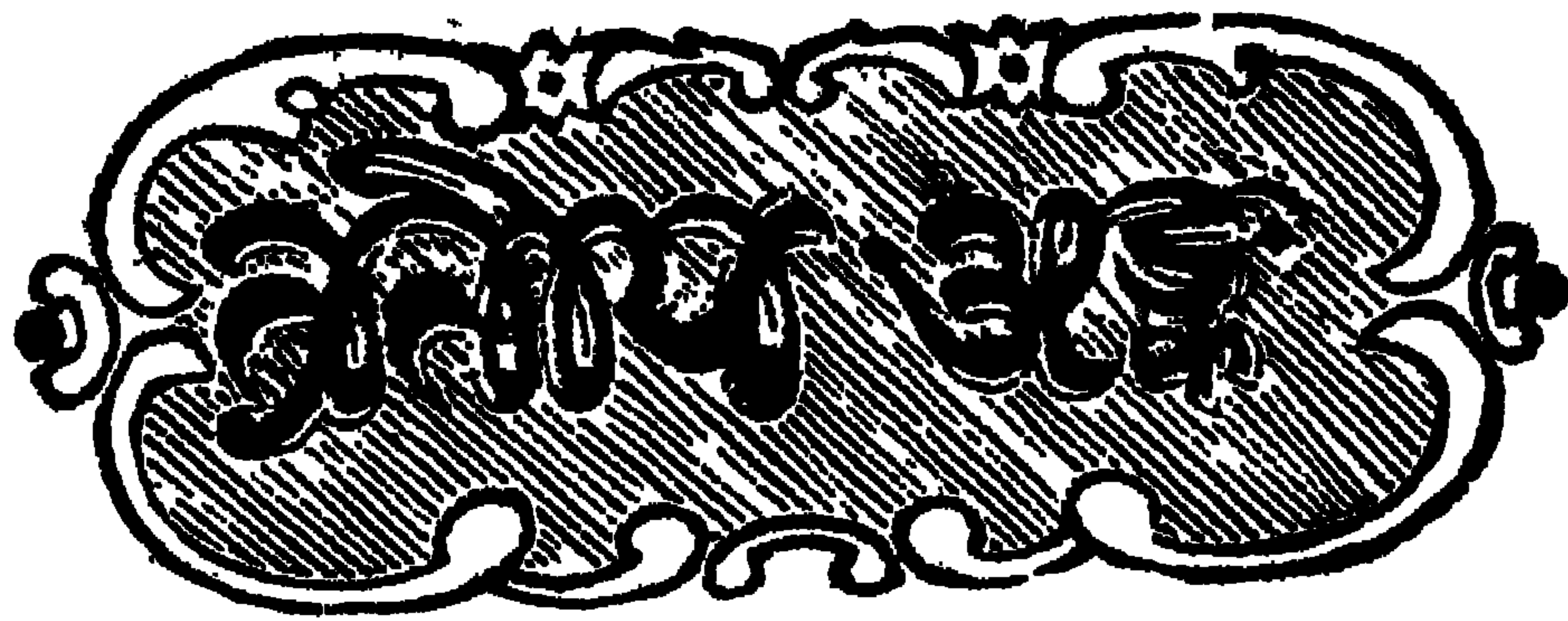
श्रीहनु०—(श्री तुलसीदासको उठाकर) अब आप देखिये ।

(हैं आरत हरण, हैं अशरण शरण, मेरी बिने सुनिये)

ख्यालकर निज कृपाको दर्शन प्रभु आ दीजिये ।
बहता हूं शोक समुद्रमें आ काढ़ जल्दी लीजिये ॥
मैं आपका सब तौरसे जगमाहिं सबसे कहा रहा ।
होगी हंसी तब डर मुझे आ करके क्यों न बचा रहा ॥

[जोरसे शब्दका होना श्री रघुनन्दन स्वामीका हाथमें धनुषबाण लिये सामने नजर आना देखकर श्री तुलसीदासजी वो श्रीहनुमानजीका साष्टाङ्ग दण्डवत करना प्रभूका उठाकर हृदयसे लगाना परदेका गिरना]





पहला दृश्य

—:*:—

[स्थान राज-दरबार]

—:-:—

[जहाँ बादशाह वज़ीर मुसाहेब, तानसेन वगैरहका अपने अपने कायदेसे बैठे हुए नजर आना गायकाओंका प्रवेशकर सर झुकाना इशारा पाकर पहिले नाचना फिर गाना]

[गायन]

यहफूली रही क्या फुलबारी हरगुलकी रंगत हैन्यारी।
कोई सुफेद है कोई काला है, कोई खिला हुआ कोई वाला
है, पै चमत्कारी है दिन चारी० ।
कोई गुलाव मोतिया कहलाया जिसको लखकर सब सुख
वही सुन्दर हरी जेहि उरधारी।
जो फुलवारीका स्वामी है पुरुषोत्तम, प्रभु अन्तर थामी है
क्या सींची है क्यारी क्यारी ॥

(दूसरा गाना)

कैसी प्यारी है प्यारी बहार खुशी दिल छाय रही है ।
एक तो मेरा जोबन आला दूजे पिया करे प्यार बहुत हर-
षाय रही है ॥
तीजे मिले प्रभु प्रेमका प्याला चौथे हरी ही मन भाय रही
है ।
पँचम पक्षी शब्द सुहावन छठम हरके गुण गाय रही है ॥
कैसी प्यारी है प्यारी बहार० ॥

[गायकाओंको बादशाहका ईनाम दिलवाना
गायकाओंका लेकर अदबके साथ
सर झुकाना और जाना]

[रहमान खांका प्रवेशकर बादशाहसे कहना हजूर-
को मैं आदाब अर्ज करता हूं, और खुदासे
हरहमेशे यह मनाया करता हूं, कि आपकी
यह जिन्दगानी सही सलामत सदा
बरकरार रहे, जो हम ऐसे गरीबोंकी
परवरिश हो]

बादशाह—कहिये रहमान खांजी आप खुश तो हैं ?
रह०—जी हाँ, हजूरके एकबालसे खुश हूं ।
बाद०—अच्छा आप अब कहिये, कि कहांसे तशरीफको लाते है ?
रह०—जी हजूर इस समय तो काशी शहरहीसे सीधे चले आते
हैं ।

बाद०—फरमाइये वहाँका क्या हाल है, सबका कैसा भला या बुरा ख्याल है, या किसीकी कोई भी क्या नई चाल है?

रह०—हुजूरवाला सुनिये, काशी शहर खूब आबाद है, सभी तरहके आदमी वहाँपर हैं, सब सात्विक दस्तूर ही काम है, पर वहाँपर एक करामाती फकीर आया है उसका श्रीतुलसीदास नाम है, यही एक नई खबर है जो आखोंसे देखकर आया हूं।

बाद०—अच्छा तो फरमाइये उनमें कौन सी करामात है।

रह०—वहमुर्देको जिन्दा कर देते हैं और भूले भटकोंको रास्तेपर लाते हैं।

बाद०—क्या आप यह सच और ठीक फर्माते हैं?

रह०—जी हां एकदम सही और दुरुस्त है।

बाद०—यदि तुम्हारी यह बात झूठ निकले तो?

रह०—तब आप जो मुनासिब समझियेगा दण्ड दीजियेगा।

बाद०—अच्छा यदि ऐसी बात है तो तुम्हारी कही हुई बातपर मेरा पूरा ख्याल है अब उन्हें किसी तरह यहाँपर लाना चाहिये और उनकी करामातकी आजमाइश करना चाहिये।

रह०—जी हाँ हुजूर मेरी भी यही राय है उनको सिपाही भेजकर बुलवाना चाहिये।

बाद०—अब आप यह काम कीजिये वहाँ जल्द आइये और उस करामाती फकीरको अपने साथ लाइये।

रह०—हुजूर क्या उनके पास हमें भी जाना होगा।

बाद०—हाँ इस कामको बनाना होगा। सिपाहियोंको साथमें ले जाकरके पहिचनवाना होगा क्यों समझे ?

रह०—बहुत अच्छा हुजूरके हुक्मसे मैं जाता हूं।

(सिपाहीको लेकर रहमान खाँका प्रस्थान।)

दृश्य दूसरा

[स्थान गङ्गातटका]

(गंगाजीमें गले २ पानीमें खड़े हुए श्री तुलसीदासजीका ध्यान करते दिखलाई देना)

[एक वैश्याका वहांपर आना और देखकर कहना]

वैश्या०—हैं, ऐसे जाड़ेके दिनोंमें यह ब्राह्मण जलमें खड़ा २ ध्यान लगा रहा है, इसको अपने शरीरका बिलकुल मोह नहीं है जो इतना कष्ट उठा रहा है अभीतक जलके बाहर नहीं निकला। तज्जुब है कि जरा भी नहीं घबड़ाता।

(श्रीतुलसीदासजीका इन शब्दोंको सुन जलसे बाहर निकलना और भीजी हुई धोतीके जलका एक छींटा जानकरकेवैश्याके शरीरपर डाल देना, छींटा पड़ते ही वैश्याको दिव्य दृष्टि प्राप्त होना और ज्ञान उत्पन्न होना उसका आश्चर्यचित हो कहना)

वैश्या०—है! यह क्या स्वर्ग। वाह वाह कैसा मनोहर और रमणीय हैं, कैसे कैसे सुख यहांपर उपस्थित हैं जो पुण्यात्मा पुरुष सब भोगकर रहे हैं, इसके बनानेवालेपर बार बार बलिहार हूं (दूसरी तरफ देखकर) हैं, यह क्या, नर्क। वह देखो पापी लोग कैसे कैसे कष्ट पा रहे हैं किस तरह विकल होकर चिल्ला रहे हैं। हे परमात्मा मुझे इन सब कठिन दुक्खोंसे बचाना नर्कमें नहीं डालना (पृथ्वीके नीचेकी तरफ देखकर) हैं यह पाताल है, वह देखो वलि महाराज राज सिंहासनपर विराजमान इधर उधर लोग खड़े हैं (आसमानकी ओर देखकर) हैं! यह क्या! पापी, जिसे यमराजके दूत अपनी गदासे मारते हुये घसीटकर जबरन लिये जा रहे हैं। हाय मैंने आज यह सब अपनी आखोंसे देखकर जाना कि धरमात्माको स्वर्ग है और पापियोंके लिये नर्क बना है सो पहिचाना अब हे श्री रघुनन्दन स्वामी मैंने इस झूठे लोभमें फंसकर बहुत पाप किया, हे प्रभु मुझे क्षमा करो क्षमा करो, और अपराधोंको क्षमा कर दया करो। मैं आजसे यह सत्य प्रतिज्ञाकर कहती हूं कि हे परमात्मा मैं सदा तेरी याद करुंगी पर मुझे यह ज्ञान कैसे प्राप्त हुआ? [सोचकर] हां जाना, यह सब इन्हीं ब्राह्मण देवताका अनुग्रह है [उनके चरणोंमें पड़कर] हे स्वामी! मेरी अब सहायता कीजिये और मेरी सारी मुसीबतोंको हर लीजिये।

श्रीतुल०—उठ ! श्रीराम भक्तिन उठ !! अबसे जागकर चेती अभी से सवेरा समझ अब हमेशाके लिये मोह रूपी निद्राको छोड़ और इस झूठी दुनियाँसे अपने रुखको मोड़ । श्री सीतारामको अपने हितू और स्वामी जानकर उनसे स्नेह पूर्वक अपने सब नातोंको जोड़ अबसे भी अपनी बिगड़ी सुधार श्री जानकीवरजीसे तन मन लगाकर खूब प्यार रख सदा उनकी सेवाको ही स्वीकार कर । इस बातको दृढ़ करके हृदयमें धर उनके गुण गानकर, तब वह अवश्य ही तेरी पुकार सुनेंगे और तब अवश्य ही तेरा इस भवसागरसे बेड़ा पार हो जायगा और सुनः—

श्री जानकीवर नाम रटके दुःख नशाय दे ।
बुद्धिसे मनको पकड़के इनमें लगाय दे ॥
इनसाँ और उद्धार जगमें है न दूसरा ।
जैसे बने तैसे सदा यही गुणको गाय दे ॥

वेश्या०—स्वामी आप धन्य हैं, धन्य, आपकी महिमा अपरमपार है । यह दासी आपपर बार बार बलिहार है 'आपने मुझे कृत्य कृत्य किया, जो ऐसा सुख मय सुन्दर उपदेश दिया, कृपाकर कुछ और कहिये ।

श्रीतुल०—जा आजसे हर रोज नियम पूर्वक श्री रामका गुण गानकर और आत्मासे परमात्मामें मिलकर ध्यान धर बुरे कर्मोंसे सदा डर, यही मेरा कहना है ।

वेश्या०—बहुत अच्छा ऐसा ही करूंगी ।

चरणोंमें पड़ना) (श्री तुलसीदासजीका आशिर्वाद देना वेश्याका उठकर गाते हुए प्रस्थान ।)

(गाना)

प्रभु भूली हुईको जनाय दई री ।
हां जनाय दई री समुझाय दई री ॥
चलत रही दिन दुखके मारग, सो
हरी सुखको सुझाई दई री ।
अधम उद्धारन जन सुख कारन,
अपनी डगरिया बताय दई री ॥
पुरुषोत्तम प्रभु गुरु ही मिलाके
बिगड़ीको मेरे बनाय दई री ॥ (प्रस्थान)

(श्री तुलसीदासजीका श्री सीताराम राम रटते हुए प्रस्थान)

दृश्य तीसरा

[स्थान एक कुटिया]

(तुलसीजीका एक स्थान जहाँ चारो तरफ श्री सीता राम नाम लिखा हुआ है सुन्दर सुन्दर भगवानके चित्र लगे दिखाई देते हैं, तुलसीदसजीका आना और प्रेम पूर्वक राम नाम रटना)

[चोरोंका प्रवेशकर तुलसीदासजीको हाथ जोड़ सिर झुकाना श्री तुलसीदासजीका आशिर्वाद देना]

चोर०—क्यों महाराज कोई सिपाही आपने पहिरेपर नौकर रख छोड़ा है ?

श्रीतुल—कैसा सिपाही ? कैसा पहिरेदार ? कैसा नौकर ?

चोर०—महाराज हमलोग आपसे यह पूछते हैं कि रातमें कोई आपके मकानकी रखवाली करता है ?

श्रीतुल०—हमी तो रहते हैं।

चोर०—और कोई श्याम रंगके दो सिपाही भी रहते हैं ?

श्रीतुल०—हैं श्याम रंगके दो सिपाही ? आपने कहाँ देखे ?

चोर०—महाराज हमने कल रातको मकानके चारों तरफ घूमकर पहिरा देते हुए और हाथमें धनुषबाण लिये हुए अपने आखोंसे देखा है।

श्रीतुल०—आप सब कौन हैं ? यह तो बड़े अचम्भेकी बात है।

चोर०—महाराज हमलोग चोर है, हमलोग कल रातको आपके मकानमें चोरी करने कई मरतबे आये पर उसी सिपाहीको पहिरा देते हुए पाया।

श्रीतुल०—हाय हाय बड़ा ही अनर्थ भया, जो इन तुच्छ वस्तुओंके लिये श्री रघुनन्दन स्वामीको मेरे मकानकी रखवाली करनेके लिये आना पड़ा, पहिरा देनेका कष्ट उठाना पड़ा

गाना

मैं जानी हरि पद रति नाहीं।

स्वप्नेहुं नाहिं विराज घन माहीं ॥
जो रघुवीर चरण अनुरागे ।
तिन्ह सब भोग रोग सब त्यागे ॥
काम भुजंगड़सत जव जाही ।
बिषै नीम कटु लगत न ताहीं ॥
असमंजस यह हृदय विचारी ।
बढ़त सोच नित नूतन भारी ॥
जब कब राम कृपा दुख जाई ।
तुलसीदास नहीं आन उपाई ॥
नौकरको पुकारना ।)

श्रीतुल०—अरे रामचरित्रदास जरा इधर तो आना !

(नौकरका प्रवेश)

राम०—कहिये स्वामी क्या आज्ञा है ।

श्रीतुल०—देख मेरे मकानमें रुपया, वस्त्र, गहना जो कुछ कीमती सामान है उस सबको ले जाकर दान कर दे भूखोंको देखकर उनको देकर उनका सन्मान कर दे ।

राम०—स्वामी ! ऐसा आप क्यों करते हैं ? क्या चोरोंसे डरते हैं ?

श्रीतुल०—ज्यादा बकवाद न कर, हम जो कहते हैं उसे समझ ।

राम०—बहुत अच्छा, पर क्या भगवानकी तसवीरोंको भी ले जांऊ ?

श्रीतुल०—नहीं और सुन, पुस्तक, पूजाके वर्तन, तसवीर भगवा-

नके वस्त्र, और प्रसाद बनानेके वर्तनोंको छोड़कर सब ले जाओ ।

राम०—बहुत अच्छा (रामचरित्रदासका चीज़ लेकर प्रस्थान)

(चोरोंका श्रीतुलसीदासजीके चरणोंमें पड़कर कहना ।)

चोर०—स्वामी ! अब हमलोगोंके उपर भी कृपा कीजिये, शिष्य बना गुरु मन्त्र दीजिये, (चोरोंके कानमें मन्त्र देकर)

श्रीतुल—जाओ आजसे तुमलोग सत्संग करो और अपनेसुधार होनेका ढंग करो, अबसे भूलकर भी किसीको दुख मत दो । जहाँतक तुमसे हो परोपकार करना । बुरे कर्म्मोंसे सदा खूबही डरना ।

श्री जानकीवर नामका हरदम ही लीजिये ।
जिससे सुख हो सबको ऐसा काम कीजिये ॥

चोर०—बहुत अच्छा जो आज्ञा (चोरोंका तुलसीदासजीको हाथ जोड़ना और आशिर्बाद पाना) (गाते हुए प्रस्थान)

गाना

दुनियाँको हमने जाना अबहीसे नेह लगावेंगे ।
क्रोध लोभ मद मोह दुखदको हरदम मार हटावेंगे ॥
अनजाने जो ठगे दुष्टोंने, अब नहिं जान ठगावेंगे ।
श्री जानकीवर नाम रटन करके इनके गुण गावेंगे ॥
हिम्मत करके द्रढ़ हिय धरके हित स्वामीही रिझावेंगे ।
पुरुषोत्तम प्रभुको पाकरके स्वप्नेहु नाहि भुलावेंगे ॥

(प्रस्थान)

श्रीतुल०—(स्वयं) हे प्रभू अबकर अनुग्रह दोष दुख सब हरण कर ।

विमल भक्ति दे मुझे अपने चरण हीमें शरणकर ।

(एक आडम्बरी भेषधारीका प्रवेश कर कहना)

आड़०—अलख बाबा खोल दे पलक देखले दुनियाँकी झलक (श्री तुलसीदासजीसे) महाराज हमें भिक्षा दीजिये और अलख नामको लीजिये यह अडम्बर जो करते है उसे मत कीजिए ।

श्रीतुल०—सुन तू यह क्या वकता है, श्री सीताराम नामको कहो तब आनन्दको प्राप्त करके रहो ।

आड०—(क्रोधसे) मैं कहता हूं उसे नही मानता है क्यों व्यर्थको अपना हठ ठानता है ।

श्रीतुल०—(क्रोधपूर्वक) तू ना समझ कुछ भी नहीं जानता है, जो उत्तम सार वस्तुको जो श्री सीतारामजीका नाम है उसे छोड़कर औरको हृदयमें स्थान देता है, गूदेको फेंक-छिलकेको क्यों बटोरता है? चिन्तामणीको त्यागकर पत्थरोंसे सिर फोड़ता है, जो मैंने कहा उसे अबसे भी खूब याद रख । इस सुन्दर शरीरको पाकर उस परमात्माको जान, अपनी आत्माको पहिचान, अपने जीवनको व्यर्थ वर्बाद मतकर । और सुन ।

हम लख हमहि हमार लख, हम हमारके वीच ।
तुलसी अलखहिको लखा राम नाम जपु नीच ॥

(इन सच्चे उपदेशोंको सुनकर आडम्बरी लज्जित हो त्राहि त्राहि करके श्री तुलसीदासजीके चरणोंमें पड़ कहने लगा)

आड०—महाराज! मेरे अपराधोको क्षमा करिये

श्रीतुल०—अच्छा उठ और यह बता कि तुझे किसने बहकाया जो सुगम मार्गका रास्ता छोड़ इस दुखद रास्तेमें फंसाया।

आड०—स्वामी! अब अपसे क्यों छिपाऊ यह तुच्छ मन्द बुद्धि आपकी परीक्षा लेनेके लिये आया आपकी जैसी प्रशंसा सुनता था उससे भी अधिक पाया और सुजान, सुशील, बुद्धिमान, ज्ञानी, एवं वैराग्यके ज्ञाता देखकर हृदय हरषाया। अब कृपा कीजिये और अज्ञानताको हटाकर सुबुद्धि दीजिये, कष्टको हरण कीजिये।

श्रीतुल०—अच्छा सुनो, अब तुम सदा श्री सीतारामजीके नामका जाप करो, दूर सब ताप करो इसीमें भलाई है, बहुतोंने गाई है और वेद पुराणोंमें गाई।

भलाईकी करो बाते इसीमें जान लो गुण है।
श्रीसीतारामको सब विधि हियेमें आन लो गुण है॥
सिखावे संत श्रीसद्गुर वही तुम जान लो गुन है।
प्रभुको सब तरह स्वामी हितु पहिचान लो गुन है॥

आड०—बहुत खूब ऐसा ही करूंगा।

(सिर नवा हाथ जोड़ प्रस्थान)

(एक भिखारीका श्री सीताराम प्रेम पूर्वक रटते

हुए प्रवेश, तुलसीदासजीका इसे देख उठ खड़े
होना और सर झुका हाथ जोड़कर आसन
दे विनय पूर्वक कहना।)

श्रीतुल०—आइये सन्तराज इस आसनपर विराजिये आज आपने मुझपर बड़ी कृपा की जो दीन समझ मेरी सुध ली और और अपने दर्शन दिये।

भिखा०—(सिर नवा हाथ जोड़) सन्तराज मैं इस आसनपर बैठने योग्य नहीं हूं।

श्रीतुल०—क्यों ? आपने यह बात किस तरहसे कही ?

भिखारी—कहना क्या है आप तो देख रहे हैं कि मैं सब तरहसे नंगा हूं और जातिका भी ठिकाना नहीं है जहां जो कुछ श्री ठाकुरजीके प्रसादके नामसे पाता हूं, वह खाता हूं इसलिये मैं गरीब भिखमंगा इस आसनके योग्य नहीं।

श्रीतुल०—आपने जो कहा वह मैं समझ गया अव मेरा कहा हुआ ध्यानमें लाइये कि जिसने अपने मुखसे श्री राम ऐसे नामको उच्चारा अहा। उसने अपने इक्कीस पीढ़ीको नर्कसे निकालकर तारा, जिसको उस परमात्माका ही है सहारा वो अधारा, वही है इस संसारमें सच्चा मित्र हमारा और प्राणोंसे भी प्यारा। इस जहानमें वही सबसे उत्तम और श्रेष्ठ है जो श्री सीता रामजीके नामको रटता है और इन्हीका हरदम ध्यान करता है।

तीर्थ और देवी देव उसने खुश किया भये रामके।

देख लो तुम गौरकर प्रताप है इसी नामके ॥
आज्ञा मुझे अब दीजिए सेवा टहल निज लीजिए।
स्वामीका सब विधि दास हूं वेही ही है सब वि
कामके

भिख०—धन्य हो महाराज, आप धन्य हो, जो बुद्धि द्वारा ऐस शुद्ध सत्य विचार पाया है (अपनेको संकेत कर) इ दुखियाको क्षुधाने सताया है इस लिये यह आपके पास प्रसाद पानेकी आशा लगाकर आया है।

श्रीतुल०—यह तो मेरा अहो भाग्य है जो आपने ऐसा कहा, मैं तो देखता हूं कि तुम्हारे पास कपड़ा भी नहीं है।

भिख०—जी हां सन्तजी इसीसे तो जाड़ेने भी सताया है और घबड़ाता हूं, परन्तु फिर भी धन्य उस परमात्माको जिसकी दयासे आपसे मेरी मुलाकात हुई।

श्रीतुल०—(मकानसे स्वदेशी कपड़ा निकालकर) लीजिये संत-राज यह उत्तम स्वदेशी वस्त्र यहांहीका बना हुआ है इसे धारणकर जाड़ा काटिए।

भिख०—(लेकर खुश होता है और उसे पहिनता है।

(श्रीतुलसीदासजीका प्रसाद लाना)

श्रीतुल०—आइये संतराज, मेरे साथमें बैठकर आनन्द पूर्वक प्रसादको खाइये, और अपनी क्षुधाको निवारणकर हृद-यको हरषाइये।

भिखा०—महाराज! मैं फिर भी कहता हूं कि मैं बड़ा पापी हूं मैं

आपके साथ प्रसाद पानेके योग्य कदापि नहीं; इस लिये कृपाकर मुझे अलग ही रहने दीजिए।

श्रीतुल०—ऐसे शब्द आप मेरे सम्मुख मत कहिए मेरे साथ बैठ कर प्रसादको पाईये और मेरा कहा हुआ सन्देह दूर कीजिए।

दोहा

तुलसी जिनके मुखनसे धोखेहु निकसत राम।
तिनके पगकी पगतरी मेरे तनकी चाम॥

भिख०—संत सरताज आपका यह कथन सत्य है परन्तु सुनिये मेरे साथमें बैठकर प्रसाद पानेसे आपके सिरपर आफतका बड़ा भारी सामान होगा इससे मैं आपके लिये डरता हूं

श्रीतुल०—आप मेरे लिये ब्राह्मणोंके डरसे न घबड़ाइये, अपने जी से सब चिन्ताको हटाइये जो कुछ होगा वह देखा जायगा जैसी जो करनी करेगा, वैसा फलभी पायगा, आपसे उत्तम दूसरा किसे पाऊंगा जिसको अपने साथमें बैठा करके प्रसा दिखलाऊंगा।

भिख०—बहुत अच्छा जब आपका दृढ़ विश्वास है तो आपकी आज्ञा मुझे सब तरहसे स्वीकार है।

[श्री तुलसीदासजीके साथ बैठकर भिख मंगेका प्रसाद पाना]

भिख०—(प्रसाद पा आनन्द हो) 'धन्य हो सन्तराज आपकी निष्ठापर बार बार बलिहार हूं

शेर

सियारामजीको मित्र प्राणाधार तुमही हो।
संसार शोक सागरसे पार तुम्हीं हो॥
मेरे ऐसे पापीको उद्धार तुम्ही हो।
सब तौरसे मैं देखा कि दिलदार तुम्हीं हो॥

अच्छा अब यदि आज्ञा पाऊं तो जाऊं।

श्रीतुल०—सन्तजी मैं अपने मुखसे आपको जानेके लिये कैसे कहूं, जैसी आपकी इच्छा हो वही कीजिए, परन्तु फिर भी दर्शन दीजियेगा।

भिख०—बहुत अच्छा सन्तराज! मुझे अपना लघु सेवक जान कर दया बनाये रखियेगा, मैं जहांतक होगा आपके दर्शन करनेके लिये बहुत ही जल्दी आऊंगा, भला आपको कैसे भुलाऊंगा।

[परस्पर गले मिलकर भिखमंगेका गाते हुए प्रस्थान]

भिख कब हमें मिलहैं सिया रघुराई प्रणत पाल रघुबंश शिरोमणि करि दया लहै उर लाई।
सबहि अधारे प्राण हमारे कलि मायासे प्रभु लो बचाई।
पुरुषोत्तम प्रभु अन्तरयामी कब रखिहो चरनन लपटाई॥

(शास्त्रियोंका प्रवेश)

शास्त्री०—(श्री तुलसीदाससे) क्या तुलसीदास आपका ही नाम है?

श्रीतुल०—जी हाँ हमे ही लोग तुलसीदास कहते हैं।

शास्त्री०—अच्छा तो अब आप यह बताइये कि भाषाकी कथाकी आपने इतनी धूम क्यों मचा रक्खी है, या तो आप इसका शीघ्र ही प्रमाण दीजिये और यदि प्रमाण नहीं देसकते तो आजसे इसे बन्द कीजिये।

श्रीतुल०—सुनिये हम प्रमाण वगैरह कुछ नही जानते सब कुछ उन्ही एक रघुनन्दन स्वामीको ही मानते हैं उनके गुणको जैसे हमारी रूचि होती है उसी तरह गाते हैं यह हमारी खुशी है चाहे श्लोकमें कहें चाहे भाषामें।

शास्त्री०—यदि प्रमाण नहीं जानते तो इस धन्दोंको त्याग करो।

श्रीतुल०—(जोर देकर) हम कभी नहीं छोड़ सकते। सुनो!

दोहा—हरि हर यश सुर नर गिरा वर्णहि संत सुजान।
हांड़ी हाटक चारु चिर राँधे स्वाद समान॥

शास्त्री०—(गुस्साकर) क्या आप हमलोगोंको जानते नही हैं? पहिचानते नहीं हैं? हम सब बड़े क्रोधी और त्रिकट शास्त्री हैं जैसे आप मानियेगा तैसे मनायगे आपको अपना जोर दिखायगें पर प्रथम हम सब अपने आचार्य्य श्री स्वामी मधुसूदनदासजीके पास जाते हैं उनसे सम्मति लेकर आते हैं।

श्रीतुल०—जाइये २ जो कुछ करना हो वह कर लीजियेगा, मैं इन मिथ्या धमकियोंसे डरने वाला नहीं।

(शास्त्रियोंका घूरते और दांत पीसते हुए प्रस्थान और कुछ ब्राह्मणोंका प्रवेश)।

श्रीतुल०—(ब्राह्मणोंको देख) सब विप्रोंको मैं हाथ जोड़ता ॥

(हाथ जोड़ना)

ब्राह्मण—(सुनो तुमने ऐसा अनुचित काम क्यों किया ?

श्रीतुल०—(प्रार्थनाकर) महाराज! मैंने क्या किसीको व दिया ?

ब्राह्मण०—सुनिये एक भिखमंगा जिसकी जातिका कुछ ठिकान नहीं क्या उसको आपने माना नहीं ?

श्रीतुल०—जी हां यह आपने सच बखाना, पर इसमें आपव क्या नुकसान हुआ ?

ब्राह्मण—क्या उसको साथमें बैठाकर आपने प्रसादको पाय नहीं ?

श्रीतुल—जीहां ठीक है मैंने उसे विमुख लौटाया नही।

ब्राह्मण—अब यह बताइये कि वह अपवित्रतासे भरा था सो किस प्रकार पवित्र भया, और उसके पाप दोष किस प्रकार नाश हुए ?

श्रीतुल०—क्या तुमलोगोंने अभीतक यह भी नहीं जाना ?

ब्राह्मण—(क्रोध पूर्वक) छोड़ दो इन सब बातोंका बनाना, साफ साफ कहो कैसे उस पापीका पाप नशाया।

श्रीतुल०—श्री सीतारामजीका नाम लेनेसे ही उसका सारा पाप नाश हो गया और वह पवित्र भया ?

ब्राह्मण०—भला आपके कहनेसे हम ऐसा सत्य क्यों मान ले।

श्रीतुल०—क्या आप लोग कुछ विद्या भी पढ़े हैं ?

ब्राह्मण०—तो क्या हमलोग मूर्ख हैं ?

श्रीतुल०— मूर्ख नहीं हो तो यह किसका काम है जो श्री सीता-राम नामके महात्मको नहीं जानते हों और अपनी आत्मा-को नहीं पहिचानते हो ।

ब्राह्मण०—(क्रोधसे) बस अब ज्यादा बाते न बनाइये, क्या तो हमलोगोंको समझाइये हम सब लोगोंका सन्देह मिटाइये नही तो आजसे आप अपनेको ब्राह्मण मत बतलाइये ।

श्रीतुल०—अच्छा यह बताओ कि तुम सबका सन्देह किस प्रकार-दूर होगा ?

ब्राह्मण०—जब उस अशुद्ध पापीके हाथका भोजन श्री विश्वनाथ जीका नांदी खायगा तब हमलोगोंको संतोष हो जायगा ।

श्रीतुल०—बहुत अच्छा मैं भोजन बनाता हूं आप सब उसको खोज करके लाइये ।

(ब्राम्हणोंका प्रस्थान योगियोंका प्रवेश)

योगी०—कहिये आप किसको मानते हैं ?

श्रीतुल०—आप लोग क्या जानते हैं ?

योगी०—हमलोग बेदान्तको ही सार वस्तु मानते हैं। और अपने हृदयमें मानते हैं, इसलिये आपसे भी यही कहते हैं कि जो कुछ हो वह इसके प्रमाणसे ही हो ।

श्रीतुल०—तो आप लोग इसके प्रमाणसे किसको मानना निश्चय करते हैं ?

योगी०—सुनिये मानना किसको ठहरा, एको अहं द्वतीयो नास्ती

अहं ब्रह्म यहीं वेद भी कहता है, सब जो कुछ है सो हमी है फिर दूसरेको झूठमूठ क्यों मानना।

श्रीतुल०—तब तो श्री सीताराम महाराजका स्वरूप लीला, धाम नाम यह चारों आपके जाननेमें कुछ नहीं ठहरा।

योगी०—अजी, कुछ नहीं, यह तो बालकोंका खिलवाड़ है खिलवाड़!

श्रीतुल०—अच्छा, जब तुमलोग स्वयं ब्रह्म बनते हो तो सुनो! ब्रह्मको तो दुःख और सुख कुछ भी नहीं होता है, यह बात सहीं है या नहीं?

योगी०—यह बात तो सत्य है, पर इससे आपको क्या काम है?

श्रीतुल—मेरा यह कहना है कि, तब तो तुमलोगोंको भी कभी कुछ दुःख, सुख नहीं होता होगा?

योगी०—आप ऐसी बे समझीकी बातें क्यों बनाते हैं। हमलोग-का कहा हुआ ठीक जानकर क्या नहीं हृदयमें लाते है व्यर्थ बात करके क्यों लड़ाई बढ़ाते हैं?

श्रीतुल०—[स क्रोध] बिना हमारे समझमें आये तुम सबकी बे शिर पैरकी बातोंको हम किस तरहसे मानलें। पहि-चानी हुई सुखकी वस्तुको त्यागकर, दुःखदाईको क्यों करके अपने हृदयमें आन ले। जाओ जाओ अपना काम करो, अपने नामको मत बदनाम करो और भी सुनलो

ब्रह्म बनत हो बातन ते निज करनी देखि लजावो जरा।
उमर बीत रही व्यर्थ तुम्हारी अब तो होशमें आवो जरा

सीताराम नामको रटकर बिगड़ी अपनी बनावो जरा।
सत्संगतको कर जानों हरीसे नेह लगाओ जरा।

गी०—[क्रोधसे] बस, खबरदार, अब रहना हुंशियार। तुम देखा करो कि तुम्हारे सिरपर आफत आने चाहती है, इस लिये हमलोग तुम्हें चि ते है सो अपना इन्तजाम करो! कष्टोंसे बचनेका सामान करो।

तुल०—जाओ, जाओ, तुम्हारे ऐसे मूर्ख, पाखण्डियोंसे क्या होनेवाला ऐसे ऐसे हमने बहुतेरोंको देखा भाला है!

[योगियोंका क्रोध करते हुए प्रस्थान, भिख-
मंगेका श्री सीताराम श्री सीताराम कहते
हुए ब्राह्मणोंके साथ प्रवेशकर कहना]

ख०—(श्री तुलसीदासजीसे) संतराज प्रणाम करता हूं। (हाथ जोड़ना)

तुल०—प्रणाम संतजी कहिये प्रसन्न तो हैं।

ख०—जी हां आपके अनुग्रहसे, पर यह कहिये कि क्यों याद किया?

तुल०—आपको मैं इस हेतु कष्ट दिया है कि, मैंने भोजन बनवाया है उसे ले चलकरके आप अपने निजकर कमलोंसे श्री विश्वनाथजीके नांदीको खवा दीजिये।

ख०—क्या वह मेरे हाथसे खावेगा?

तुल०—जी हां, वल्कि खाकरके खूब हरषावेगा।

ख०—परन्तु महाराज? मैं तो बड़ा दीन हूं, जातिकरके भी सब तरहसे हीन हूं।

श्रीतुल०—हमारी बात सुनो और तुम सब संशयको त्यागन करो, जिसने भूलसे भी श्री सीतारामजीके नामको मनाया, उसने अपने कोटिन कोट जन्मके पातकोंकोधो करके श्री गङ्गाजीमें वहाया और संसारमें उत्तम कहाया ।

शेर०—पाप धोकर सब तरह वह मोक्षका भागी हुआ ।
कैसेहुं जो जगतमें श्री राम अनुरागी हुआ ॥
सब जगह उसकी बड़ाई छायगी तिहुं लोकमें ।
पा यतन वही फल लहा मायासे नहीं दागी हुआ ॥

भिख०—जब आपका ऐसा कहना है ! तो फिर हमें क्या चाहना है, चलिये, मैं तैयार हूं ।

ब्राह्म०—चलिये चलिये देर न लगाइये, इस अद्भुद दृश्यको भी दिखाइये ।

श्रीतुल०—हां चलिये ।

(सबका प्रस्थान)

दृश्य चौथा

-:—*—:-

(स्थान श्री मधुशूदनाचारीका)

[जहां पर मधुशूदनचारीका बिराजे हुए नजर आना शास्त्रियोंका प्रवेश कर सिर झुका हाथ जोड़ना]

मधु०—आनन्द रहो खुशी रहो । कहो आज क्या है ! जो आप लोग मेरे पास एकट्ठे होकरके आये हो ?

शास्त्री०—श्री स्वामीजी। तुलसीदासजीने, भाषाकी कथाकी इतनी धूम मचाई है? कि जिसकरके हम सबकी प्रतिष्ठाको उनने धूरमें मिलाई है। इसमें आपसे यह सम्मति लेनेको आये हैं कि हम सबको क्या करना चाहिये।

श्रीमधु०—अच्छा, प्रथम तुम लोग यह कहो कि तुम लोगोंका क्या विचार है?

शास्त्री०—अच्छा सुनिये, जहां देखते हैं, तहां अब श्री तुलसीदासजीकी दोहाई है। घर २ में लोगोंने उनकी कृत भाषा श्री रामायण पधराई हैं। हम लोगोने श्रीतुलसीदासजीके पास जाके भाषाकी कथाका प्रमाण माँगा। तब उनने हम लोगों का अनादर किया! सो आप आज्ञा दीजिये तो उनके साथ मार करें! या उनके ऊपर हत्या देकरके अत्याचार करें, उनके द्वार पर जाकरके हमलोग मरें?

मधु०—नहीं ऐसा तुमलोग भूल करके भी मत करो, विचार वो बुद्धिसे समझ करके धीर धरो, अनीतिको छोड़कर नीतिसे काम लो, किसीको दुःख देनेका स्वप्नमें भी नाम मत लो! श्री तुलसीदासजी। धन्य हैं? और उनके माता, पिता, सद्गुरुको भी कोटिशः धन्यवाद है। जिन्होंने उनको ऐसा सुगम और उत्तम सुखका मार्ग बताया है, जिस करके उन्होंने सबके हृदयको प्रफुल्लित करनेके लिये भाषामें एक अमूल्य रत्न श्री रामायणको गाया है! उसे देखकर किसका जी नहीं हरषाया। तुमलोगोंने बड़ा

ही अनुचित किया जो कटु वचन शब्दोंको सुना करके उन्हें कष्ट दिया । बस अब जावो, जैसे हो विनय करके अपने अपने अपराधोंको क्षमा कराओ, प्रभुके भक्तको सताकर विपदको अपने सिरपर मत बुलावो । उनके गुण सुनो और हृदयमें लाओ ।

श्लोक—परमानन्द पत्रोयं जंगम स्तुल सीतरूः ।
कविता मंजरीयश्य रामं भ्रमर भूशितः ॥

शास्त्री०—(ठैरकर) अच्छा, हमलोग उनके पास शीघ्र जायंगे और अपने अपने अपराध क्षमा करानेके लिये उनसे बिनय अर्ज लगायंगे, पर इस श्लोकका अर्थ तो समझा दीजिये कृपा कीजिये ।

मधु०—अच्छा सुनो ।

दोहा— परमानन्द ही पत्र हैं तुलसी तरू गुण खान ।
तामें लागे कमल शुभ, राम भ्रमर लपटान ॥

सब-शास्त्री—वाह वाह वाह वाह ।

[सब शास्त्रियोंका दण्डवत करना श्री मधुसूदनचारीका आशिर्वाद देना सबका प्रस्थान]



पांचवां दृश्य

-*:*:*-

योगियोंका स्थान

तहांपर योगियोंका अपने मन्त्रबलसे सूबे-
दारको चारपाईके सहित उठाकर मंगाना

सूबेदार०—[डरसे थर थर काँपते हुए हाथ जोड़कर कहना] श्रीयोगीराज मुझे किस लिये बुलाया है, इस बन्देको क्या हुकुम होता है !

योगी०—तुम्हें यह हुक्म दिया जाता है कि काशीमें जितने वैष्णव भेष धारी है, उनकी सबकी, कंठी माला छीन करके, तिलकको धो डालो, वल्कि उनको जहानसे खो डालो, इसके करनेमें देर न करो, इसीमें तुम्हारे लिये भलाई है, यदि देर करोगे तो तुम्हारे हक्में बहुत बुराई है, वस इस बातको तुम ठीक जान लो ।

सूबे०—बहुत अच्छा योगीराज, आपने जो फरमाया वह सबकुछ करनेको मैं तैयार हूं, पर किसी वैष्णवको जानता नहीं हूं । इसी लिये अकेले जाकर यह काम करनेसे लाचार हूं ।

योगी०—[एक योगीको बताकर] अच्छा तुम इसे साथ ले जाओ, यह सबको जानता है। बस अब झट पट इस कामको बनावो देर न लगावो ।

सूबे०—अच्छा, पर आप इजाजत दीजिये तो मैं दो सिपाहियोंको अपने हुम राह लेलूं।

योगी०—हां लेलो, पर शीघ्रता करो॥

(सबका प्रस्थान)

[दृश्य श्री विश्वनाथजीका मन्दिर]

तहां पर श्री विश्वनाथजीके सन्मुख नांदीका विराजे हुए नजर आता वहाँ पर ब्राह्मण और भिख मंगा, श्री तुलसीदासजीका प्रवेश करना सबका मस्तकको झुकाकर हाथ जोड़ना।

श्रीतुल०—(भिखमंगासे) महाराज, भोजन श्री नाँदीजीकोखिलाइये! कोई तरहका सन्देह अपने जीमें नहीं लाइये॥

भिख०—बहुत अच्छा संतराज? [नाँदीसे हाथ जोड़कर कहना] हे श्री नाँदीं महाराज, जो श्री सीतारामजीके नाम कहनेसे मेरे पाप वो दोष सब नष्ट होगयें होय तो आप मेरें हाथसे इस भोजनको पाइये वो इन ब्राह्मणोंके संदेह भ्रमको दूर करके सबको हरषाइये वो श्री रामचन्द्र महाराजकी महिमाको बढ़ाइये।

[भोजन श्री नांदीके मुखसे लगा देना नांदोका सब खाकर कहना]

नांदी हे मुझे आनन्द पूर्वक भोजनको खवाने बाले संत! आज आपने खिलाकरके सब तरहसें मुझे संतुष्ट किया, बहुत सुखको दिया सुनो, तुम्हारे पाप, सब जल करके,तुम परम पवित्र

हो गये तुम्हारे शत्रु सब सोकर खोगये। तुमने मुझे त्रित करके सब प्रकारसे हरषाया है, इस हेतु मैं अतिशय तुम्हारे ऊपर प्रसन्न हूं, वो तुम्हे रोम रोमसे आशिर्वाद देताहूं कि हमारे स्वामी श्री विश्वनाथजी सब तुम्हारे मनोरथोंको भली भाँतिसे सदा परि पूर्ण करेंगे। आप प्रभूके प्यारे हो इसलिये हम तुम्हें प्रणाम करते हैं!

[यह सुनकर सब ब्राह्मणोका बिस्मित हो श्रीतुलसीदास जी वो भिखमंगेके चर्णोंमें पड़कर कहना]

ब्राह्म०—हे संतराज, हम सबके अपराधोंको क्षमा करिये, अपने अज्ञान बालक समझ करके इस अनुचित कार्य्य किये हुए पापोंको अनुग्र करके हरिये, हाय हाय हम लोगोंसे बहुत भूल हुई! अब सब प्रकारसे आपके शरण हैं जो रूचि हो वह दण्ड करिये।

[दोहा]

यह दारुण अपराध करि बहुत रहें पछताय।
कहिये स्वामी करि कृपा कैसे यह दुख जाय॥

श्रीतुल०—आप लोग यह अनुचित व्यवहार क्यों करते हैं, हमारे पैरोमें अपने सिरको किस लिये धरते हैं! मैं तों आपका दास हूं।

[दोहा]

होन हार होके रहे विना समझका फेर।
अब सीता वर नामको रटो करो मत देर॥

ब्राह्म०—धन्य हैं आप वो धन्य है आपकी बुद्धिको, अच्छा हमपर दया बनी रहे।

श्रीतुल०—हम आपलोगोंको प्रणाम करते हैं।

[श्री तुलसीदासजीका प्रस्थान]

[ब्राह्मणोंका सिर झुका हाथ जोड़ना सबका गाते हुए प्रस्थान]

[गाना]

धन्य श्रीतुलसी तन फल पायो। जो श्रीसीताराम रिझायो॥
हम सब भूले ही राह बतावन। श्रीसीतापति आप पठायो॥
पुरुषोत्तम प्रभु दाया कीन्हीं। तन धरि सन्त भूमी पै आयो॥

[प्रस्थान]

[स्थान श्री सीतारामजीका मन्दिर]

[तहाँपर चार बैष्णवका श्री राम नाम रटते हुए नजर आना वहाँ योगी, सिपाही, सूबेदारका प्रवेश]

योगी०—(योगी सूबेदारसे) देखिये, (बताकर) येही लोग हैं।

सूबेदार०—(बैष्णवोंसे) उतार दो कन्ठी, तोड़ दो माला, फोड़ दो कमण्डल धो दो तिलक, देखो जल्दी करो।

बैष्णव०—नहीं नही ऐसा मत कहिये! यह हमारा भेष है।

सूबे०—चुप रहो शीघ्रता करो, आफतसे डरो, मेरे क्रोधमें न पड़ो।

बैष्णव०—(आर्जूसे गिड़ गिड़ाकर) यह हमारे सद्गुरु महाराजका दिया हुआ बाना है इसीसे हमको भगवानके समीपमें जाना है।

सूबे०—(सिपाहीसे) खड़े खड़े देखते क्या हो, छीन लो सब कण्ठी माला, वो तिलकको धो डालो, ले लो कमण्डल झोली झण्डा वो ऐवजमें दे दो इनके हाथोंमें माटीका हण्डा।

[सिपाहीका सब छीनना वो योगी सूबेदार सिपाहीका प्रस्थान

वैष्णव०—हाय ईश्वर यह अचानक ऐसी बिपत कहांसे आई।

(पछताते हुए प्रस्थान)

[स्थान श्री तुलसीदासजीका]

[तहाँपर श्री तुलसीदासजीका श्री सीता-
राम नामको रटते हुए देख पड़ना वो
योगी, सूबेदार, सिपाहीका प्रवेश]

योगी०—(सूबेदारको श्री तुलसीदासजीको बताकर) देखिये, इन्हींने हम सबोंका अपमान किया है और दुःख दिया है ?

सूबेदार०—क्योंजी, तुमने योगियोंको किस लिये सताया ?

श्रीतुल०—जैसा करनी किया तैसा फल पाया।

सूबेदार०—(क्रोधसे) क्यों हमारे सामने अब भी बे अदबी करते हो ? हम सबसे नहीं डरते हो।

श्रीतुल०—हे श्री हनुमानजी महाराज धाईये, वेग आईये हमको इन दुष्टोंके हाथोंसे बचाइये !

(दोहा)

श्री स्वामी हनुमानजी करिये वेग सहाय।
अब देरी मत कीजिये दुःख सब देहु नशाय॥

सूबे०—क्यों हमें दुष्ट बताता है ! [मारनेको लठ्ठ ऊठाना] जोरसे

शब्दका होनाभयंकर रूपसे श्री हनुमानजीका प्रगट होकर लट्ठ पकड़कर सूबेदारको पटकना]

[श्री हनुमानजीको देखकर श्री तुलसीदासजीका चरणोंमें पड़ना उनका आशिर्वाद लेना]

श्री हनु०—[डपटकर] क्यों वे दुष्ट, हमारे प्रेमी वो भगवानके भक्तोंको सताते हो ? पापी चांडाल ऐसे निडर हो गये हो जो बैष्णवोंको कल्पाते हो ! वो रूलाते हो, उनके प्रबल सहायकोंको ख्यालमें नहीं लाते हो ! मुझे अपने कालके समान नहीं जानते हो ! अच्छा मैं अब तुम लोगोंको ठीक बनाता हूं। (सोटा देखकर) इसीसे (मारनेके लिये सोटा उठाना और सबका चिल्लाना।)

सब०—दोहाई है, स्वामी तुलसीदासजी महाराजकी ! दोहाई है त्राह त्राह अब हमारे प्राण बचाईये, नहीं तो सोटाके लगते हो मर जायंगे !

श्रीतुल०—फिर तो ऐसा काम नही करोगे ?

सब०—(डरसे थरथराते हुए) नही बाबा नहीं, इस मार्गमें स्वप्नमें भी पैर नही धरेंगे ? हाय हाय, हमारे जानकी रक्षा कीजिये।

श्रीतुल०—अच्छा तो यह कहो, कि जिन बैष्णवोंकी कन्ठी माला वगैरह छीनकर लाये हो ? वह सब उनलोगोंके पास बिनय करके पहुंचाओगे या नहीं अर्ज करके उनसे अपने अपराधोंका क्षमा करावोगे या नहीं ?

सब०—हाँ, दादा जान बक्स पावेंगे तो सब कुछ करेंगे, कहियेगा तो आपके जूतोंको भी हजार वार अपने सरपर धरेंगे! वैष्णवोंकी सब वस्तुओंको उन्हें आजूं करके दे आवोगे, देर नहीं लगावेंगे।

श्रीतुल०—[श्री तुलसीदासजीका श्री हनुमानजीके चरणोंमें पड़कर कहना] स्वामी अब इनके अपराधोंको क्षमा करिये।

श्रीहनु०—बहुत अच्छा तुम आनन्द रहो [अन्तर्ध्यान होना]

सब०—(हाथ जोड़) महाराज ? अब आप हमारे सब अपराधोंको क्षमा करिये।

श्रीतुल०—अच्छा जाइये, फिर किसी वैष्णवको भूलसे भी मत सताइयेगा।

सब०—अच्छा ऐसाही होगा।

(सबका प्रणामकर प्रस्थान)

[शास्त्रियोंका प्रवेशकर मस्तक झुकाना
और हाथ जोड़ अर्ज लगाना]

शास्त्री०—संतराज! हमलोगोंसे आज्ञातमें वड़ी भारी भूल हुई! जो आपको कठोर बचन कहा। और आपके हृदयको दुःखोंसे दहा। अब इस पापसे कैसे छुटकारा पावें यह आप ही अनुग्रह करके बतावें।

(दोहा)

स्वामी तुजसीदासजी कहो हमें समुझाय।
पाप प्रबल जो हो चुका किस विधिसे सो जाय॥

श्रीतुल०—[प्रणाम करके] सुनिये, हम तो आप लोगोंपर रंच मात्र भी रंज नहीं हैं, क्योकि, यह संसारका व्यबहार ही ऐसा है कि जो खुश होता है वह तो प्रसंशा करता है, जो नाराज होता है वह दोष धरकर निन्दा करता है, तब आप ही विचारिये कि किस किसपर हम नाराज वो प्रसन्न हुआ करें सुनिये।

[कवित]

कोऊ कहै करत कुसाज दगावाज बड़ो, कोऊ कहै रामको गुलाम खरो खूब है। साधु जानै महा साधु खल जानैं महा खलवानी झूठौ साँची कोटि उठत हबूब है। चहतन काहु सो कहतन काहुकी कछु सबकी सहत ऊर अन्तरन ऊब है, तुलसीको भलो पोच हाथ रघुनाथ हीके रामकी भक्ती भूसी मेरी मती दूब है॥

शास्त्री०—धन्य हो श्री तुलसीदासज, आप धन्य हो!

(छन्द छप्पै)

धन्य श्री तुलसीदास आप प्रभुजन सुख दाई।
प्रगटे हो जग माहि करनको सबहि भलाई॥
शील सुजान महान सकल गुण है अधिकाई।
शेषन पावहि पार करै केहि भाँति बड़ाई॥
अब हम सबपर करि कृपा चरण शरण रखि लीजिये।
जैसे हो सिखलाय सब सियावर सम्मुख कीजिये॥

श्रीतुल०-अच्छा सुनिये, आजसे आप लोग जहांतक हो सके परम-

हितकारी श्री सीतारामजी महाराजके नामको उच्चारण करें। अपनो भलाई जान परम प्रबल मन्त्र मानकर दृढ़ हृदयमें धारण करें यही मेरी शिक्षा है।

परस्पर नेम प्रेम दण्डवत प्रणाम हो करके शास्त्रियोंका प्रस्थान और अकबर बादशाहके नौकरोंका प्रवेश]

नौक०—औलिया साहब, अदाब अर्ज है।

श्रीतुल०—जै श्री सीतारामजी महाराजकी, कहिये आपलोग कहाँसे आये हैं और कौन हैं, वो क्या चाहते हैं?

रहमान०—हमलोग अकबरशाह बादशाहके मुलाजिम हैं, और देहली शहरसे आये हैं, बादशाहने हमको भेजा है, और आपको बुलाया है।

श्रीतुल०—क्या मुझसे कोई काम है।

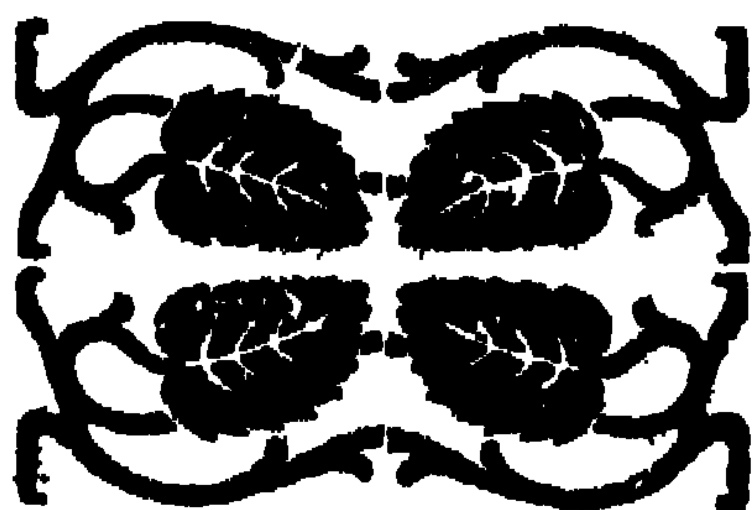
रह०—जीहाँ, आपका सबसे बड़े फकीरोंमें नाम है।

श्रीतुल०—अच्छा तो जो काम हो उसे कहिये!

रहमान०—बादशाहको आपके दीदारका ख्वाहिस भया है, इस वास्ते आपको याद किया।

श्रीतुल०—अच्छा चलो मैं चलनेको तैयार हूं।

[सबका प्रस्थान]



छटवां दृश्य

—:-*-:—

[स्थान दरवारका]

[दर्बारमें अकवर बादशाहका मय अपने दरवारियोंके साथ कायदेसे बैठे हुए नजर आना]

बाद०—(तानसेनसे) आज तो आप कोई अपने मजहबके भक्ति पक्षका हिन्दू गाना गजल मुझे सुनाईये, और जरा दिल खोलकरके तान लगाईये ?

तान०—बहुत अच्छा, हुजूर सुनिये ॥

गजल

सिया राम मेरी ओर अब तो आना चाहिये ।
मुख चन्द अपना प्यारे मोहि दिखाना चाहिये ॥
तव नाम पतित पावन सब जगमें विदित है ।
तब मोहि पतितको ढिगहु बसाना चाहिये ॥
पुरुषोत्तम प्रभु कहायहु क्या मोहि भुलाओगे ।
जैसे समझिये तैसे मोही उर लाना चाहिये ॥

[सुनकर खुश होकर बादशाहका तानसेनको इनाम देना तानसेनका अदबसे सरझुकाकर लेना]

[रहमानखाँ वो सिपाहीके साथ श्रीतुलसीदासजीका प्रवेश]

रह०—(बादशाहसे) हजूरको मैं आदाव अर्ज करता हूं ।

बाद०—कहिये रहमानखाँजी क्या हाल है ?

रह०—[श्री तुलसीदासको बताकर] हुजूर वह यही करामाती

फकीर हैं, जिसका हमने तारीफ किया था, काशी सहरके रहनेवाले हैं, और इन्हींका नाम श्री तुलसीदास है ॥

बाद०—इन्हीके लानेके वास्ते ही तो मैंने तुमलोगोंको भेजा रहा !

रह०—जी हाँ हुजूर, वह येही हैं।

बाद०—[श्री तुलसीदाससे] क्या आप यह जानते हैं कि मैंने आपको किस लिये याद किया है ?

श्रीतुल०—जी नहीं।

बाद०—अच्छा तो सुनिये, मैंने आपकी बड़ी तारीफ सुन पाई है, इसलिये बुलाया है। सो आप मुझे अपनी करामातको दिखलाईये। वो इनाम खूब लेकरके खुश हो जाईये।

छटवां दृश्य

—:-*-:—

[स्थान दरबारका]

[दर्बारमें अकबर बादशाहका मय अपने दरबारियोंके साथ कायदेसे बैठे हुए नजर आना]

बाद०—(तानसेनसे) आज तो आप कोई अपने मजहबके भक्ति पक्षका हिन्दू गाना गजल मुझे सुनाईये, और जरा दिल खोलकरके तान लगाईये ?

तान०—बहुत अच्छा,हुजूर सुनिये ॥

गजल

सिया राम मेरी ओर अब तो आना चाहिये ।
मुख चन्द अपना प्यारे मोहि दिखाना चाहिये ॥
तव नाम पतित पावन सब जगमें बिदित है ।
तब मोहि पतितको ढिगहु बसाना चाहिये ॥
पुरुषोत्तम प्रभु कहायहु क्या मोहि भुलाओगे ।
जैसे समझिये तैसे मोही उर लाना चाहिये ॥

[सुनकर खुश होकर बादशाहका तानसेनको इनाम देना तानसेनका अदबसे सरझुकाकर लेना]

[रहमानखाँ वो सिपाहीके साथ श्रीतुलसीदासजीका प्रवेश]

रह०—(बादशाहसे) हजूरको मैं आदाब अर्ज करता हूं ।

बाद०—कहिये रहमानखाँजी क्या हाल है ?

रह०—[श्री तुलसीदासको बताकर] हुजूर वह यही करामाती

फकीर हैं, जिसका हमने तारीफ किया था, काशी सहरके रहनेवाले हैं, और इन्हींका नाम श्री तुलसीदास है ॥

बाद०—इन्हींके लानेके वास्ते ही तो मैंने तुमलोगोंको भेजा रहा!

रह०—जी हाँ हुजूर, वह येही हैं।

बाद०—[श्री तुलसीदाससे] क्या आप यह जानते हैं कि मैंने आपको किस लिये याद किया है?

श्रीतुल०—जी नहीं।

बाद०—अच्छा तो सुनिये, मैंने आपकी बड़ी तारीफ सुन पाई है, इसलिये बुलाया है। सो आप मुझे अपनी करामातको दिखलाईये। वो इनाम खूब लेकरके खुश हो जाईये।

श्रीतुल०—मैं तो, करामात कुछ भी नहीं जानता हूं, सब कुछ एक श्री रघुनन्दन स्वामी, और उनके नामहीको मानता हूं।

बाद०—अच्छा तो, आप हमें श्री रघुनन्दन स्वामीके दर्शन ही कराईये।

श्रीतुल०—यह काम मुझसे नहीं हो सकता है, ऐसी सामर्थ्य मैंने नहीं पाई है।

बाद०—सामर्थ्य पाई है या नहीं पाई है, यह मैं कुछ नहीं सुनना चाहता हूं!

श्रीतुल०—तब।

बाद०—तब क्या, यह काम आपको करना होगा, मेरे दिलको भरना होगा!

श्रीतुल०—परन्तु यह काम मुझसे होने वाला नहीं है।

बाद०—तो क्यों ? क्या मेरे हुक्मको नहीं मानोगे ?

श्रीतुल०—आपका हुक्म तो माननेको मैं सब प्रकारसे तैयार हूं, लेकिन जो काम मुझसे नहीं हो सकता है, उसे किस तरहसे कर दूं।

बाद०—तो क्या जेलमें जाना मंजूर है ?

श्रीतुल०—हाँ यदि कसूर है, तो जाना जरूर है।

बाद०—तो क्या मेरा हुक्म अदूली करना कसूर नही है ?

श्रीतुल०—जी हाँ है, पर जिस बातके करनेमें यह लाचार है तब भला कैसे कसूर वार है।

बाद०—पर मुर्दसे जिन्दा बनानेका जिसका अखतियार है, क्या वह लाचार है, यह सब बहाना है हमने ठीक जाना है।

श्रीतुल०—वह परमात्माके हुक्मका ईशारा था, जो कि जिन्दा होनेको हाथसे हमारे था।

बाद०—तो क्या सीधी तरहसे नहीं मानोगे ?

वजीर०—(सिरझुकाकर) हुजूर इन्हे हम मनायंगे, समझा करके सीधे रास्तेपर लायंगे।

बाद०—बहुत अच्छा, मेरे सन्मुखसे ले जाओ जैसे हो काम बनाओ।

(बादशाहका प्रस्थान)

वजीर०—बहुत अच्छा [श्री तुलसीदाससे] महाराज, क्यों जेलमें दुःख उठानेके वास्ते जाते हैं सीधे रास्तेपर क्यों नहीं आते हैं ?

श्रीतुल०—आप क्या जानते हैं ।

वजीर—हम यह कहते हैं कि आप अपनी करामातको बादशाहको दिखाइये, और उनको अपने ऊपर मेहरवान बनाइये ?

श्रीतुल०—यह तो आप सत्य कहते हैं, पर जो काम मुझसे होने वाला नही है उसे भला मैं किस प्रकारसे कर दूं क्या ऊंटके पेटको एक जीरा डालकर भर दूं !

वजी०—महाराज, अब ज्यादे बातोंको मत बनाइये । मेरा कहा हुआ मान जाइये ! अपनी करामातको प्रगट कीजिये, मत छिपाइये ?

श्रीतुल०—क्यों व्यर्थ बकबाद करते हों, जाओ, हमारा माथा न खाओ ।

वजी०—महाराज, आप अपने हीं हांथोसे अपने पैरोमें कुल्हाड़ी मार रहे हैं, जो ऐसे कटुबचन उचार रहे हैं ?

श्रीतुल०—बस, बहुत हो चुका हमारे भजनका समय बहुत खो चुका अब इस बकबादको बन्द करो, खुदाके कहरसे भी डरो !

(एक सिपाहीका प्रवेश)

सिपाही—(वजीरसे) बादशाह साहबने यह फरमाया है कि यदि वह करामाती फकीर आपके कहनेको मान गये हों तब तों हमारे पासमें ले करके आइये, और नहीं माने हों तो जेलकी हवा खिलवाइय ।

वजी०—बादशाह कहाँ हैं ?

सिपाही—वह हमें ऐसा हुक्म दे करके महलके अन्दर चले गये।
वज़ी०—अच्छा तो ले चलो इन्हें जेलमें दिया जावे॥

(श्री तुलसीदासको लिये हुए सबका प्रस्थान)

[स्थान कारागार]

[तहाँ दरोगा सिपाहीका पहरा देते हुए नजर आना वो श्रीतुलसीदासजी को लिये हुए वजीर सिपाहीका प्रवेशकर श्री तुलसीजीको जेलमें रखकर सबका प्रस्थान]

[श्रीतुलसीदासजीका हाथ जोड़कर श्रीहनुमानजीसे विनय करना]

श्रीतुल०—हे श्रीहनुमानजी महाराज ? हमने भला आप ही विचारिये कि किसे सताया जो यह कष्ट हमारे सिरपर आया।

[गाना]

ऐसी तुम्हें न बूझिये हनुमान हठीले।
साहेब कहूंन रामसे तोसे न वसीले॥
तेरे देखत सिंहके शिशु मेंढ़क लीले।
जानत हौं कलि तेरे ऊर मह गुण गण कीले॥
हाँक सुनत दशकन्धके भये बन्धन ढ़ीले।
सो बल गयो किधौं भये अब गर्व गहिले॥
सेवकको पर्दा फटै तुम समरथ सीले।
अधिक आपुते आपुनो सुनिमान सहीले॥
शासति तुलसीदासकी सुनि सुयस तुहींले।
तिहूं काल तिनको भलो जे राम रंगीले॥

[विनय सुनकर श्री हनुमानजीका प्रकट होना देखकर श्री तुलसीदासजीका चरणोंमें पड़ना]

[श्री हनुमानजीका ऊठाकर छातीसे लगाकर कहना]

श्रीहनु०—प्रिय भक्तराज ? कहो क्या चाहते हो जो आज्ञा दो वह कामको करूं। कहो तो कालसे भी लरूं ! जीते दमतक कभी नहीं टरूं ? पीछे पैर भूलकर भी नहीं धरूं ? जल्दी बताओ देर न लगावो।

[दोहा]

क्रोध महान भयो मोहि आवत नेकन धीर।
वेग हमें बतलाय दो हे प्यारे रघुबीर॥

श्रीतुल०—स्वामी ? मैं आपसे क्या कहूं ? आप तो सब कुछ जान रहे हैं। अब जो आपको उचित समझमें आवे, वही कीजिये।

श्रीहनु०—बहुत अच्छा, मैं जाता हूं, बादशाहको इस कर्त्तव्यका मजा चखाता हूं।

(प्रस्थान)

[स्थान बादशाहका शयन भवन]

[तहाँ बादशाहका शयन करते हुए नजर आना]

वहाँपर बानरी सेना लिये हुए गदाके सहित भयंकर रूप धारण किये श्रीहनुमानजीका प्रगट हो और बादशाहको चारपाईके सहित उलट देना वानरोका तोड़ना, फोड़ना, गिराना वो किल किलाना, बादशाहका चिल्लाना वो चरो तरफ भागना पर राह नहीं पाना।

बाद०—अरे कोई दौड़ो! दौड़ो! हमारे प्राण बचावो।

[वजीरके सहित बहुत मनुष्योंका प्रवेश]

वाद०—वजीर तुम खड़े २ देखी ही रहे हो वो हम तकलीफें उठावें चिल्लावें! जान गवावें, कुछ तो भला सहायता करो?

वजी०—हुजूर, आपको तो रहमानखांने प्रथम हीं बता दिया रहा कि, वह करामाती फकीर हैं! यह जान करके भी आपने उन्हे सताया। उसीसे यह आफत नजर आया! जिसको सब कोई जानता हैं, क्या उसमें परमात्माका अंश प्रत्यक्ष नहीं है,? उन्हे दुखाना है, सोही अपने सिर पर कष्टको बुलाना हैं?

प्रहलादको जब दुःख दिया हरनाकुश मारा गया।
बिभीषनहींके प्रकोपसे रावण संघारा गया॥
अम्बरीषको श्रापदे दुर्वासहु व्याकुल हुआ।
भगवान हैं रक्षक जेहि उसका न प्रण हारा गया॥

बाद०—हां, यह वात तुमने बहुत हीं दुरुस्त कही, पर अब कोई ऐसी तरकीब बताओ कि जिससे यह आफते टल जाय?

वजी०—वस इस आफतसे वचनेका सिर्फ एक यही उपाय है कि जैसे हो तैसे उन फकीरको प्रसन्न करिये, चलके उनके पैरो पर सिर धरिये।

जाके कहिये अर्जकर सब तौरसे लाचार हो।
बखश देवैं खताको तब जानोंकी उबार हो॥
उम्मीद है फकीर हैं उनको दया आजाय गी।
खुश होते ही उनके यह सारी आफते टल जायगी॥

बाद०—अच्छा चलो। [वजीर, बादशाहका श्री हनुमानजीको साथमें जाना]

[स्थान कारागार]

[जहां दरोगा सिपाहीको पहरा देते हुए नजर आना बाद वजीरका प्रवेश कर जेहलमेंसे श्री तुलसीदासजीको निकलवाना वो बादशाहका चरणोंमें पड़कर कहना]

बाद०—औलिया साहेब, मैंने इस बुलन्द रुतवेको नहीं पहिचाना, जिहसे अज्ञानके बस होकरके हठ ठाना ? इसकी सजाको खूब अच्छी तरहसे पाया, अब मेरी खताको मुआफ फरमाइये, मुझे इस आफतसे बचा करके अपना तावेदार बनाइये !

श्रीतुल०— सुनो, तुम श्री रघुनन्दन स्वामीके दर्शन करना चाहते थे, इस लिये उनने प्रथम अपनी सेनाको भेजा है, पीछेसे आप भी आते होंगे, सो तुम देख लेना ?

बाद०—नहीं महाराज, मैं तो सेनाहीको देख करके घवड़ाया हूं। अपनी करनीका फल पाया हूं ! अब आप मेरे कसूरको दिलसे भुलाये, जो इच्छा हो वह खजानेसे ले जाइये।

श्रीतुल०—नही हमें कुछ नहीं चाहिये, पर यह नगर श्री रघुनाथजीका हुआ, क्यों कि उनकी सेनाने यहां दखल कर लिया इस लिये तुम इस जगहको छोड़कर और जगहमें जाकर निवास करो॥

बाद०—जो हुकुम, मैं मंजूर करता हूं सर आंखो पर धरता हूं,

ऐसाही होगा पर अब आप अपनी कुछ खिद्मत लीजिये,
इस तावेदारको करनेकी इजाजत दीजिये !

श्रीतुल०—इस समय यह नही होगा [श्री हनुमानजीके चरणोंमें पड़कर] स्वामी अब बादशाहके अपराधको क्षमा करिये ।

श्रीहनु०—अच्छा तुम आनन्द रहो । [अन्तरध्यान होना]

बाद०—अब मुझे क्या हुकुम होता है ।

श्रीतुल०—तुम्हे यह कह करके चिताया जाता है कि आजसे किसी फकीरफुकराको न सताओ । उन पर अपनी हुकूमतको न चलाओ, दुष्ट कर्म करनेसे बाज आओ, यह बातको दृढ़ता पूर्वक ध्यानमें लाओ, फिर जाओ ! और सुनो ?

राम वो रहीम दो को एक जानना ।
हिन्दू और मुसलमानहुंको एकसा मानना ॥

बाद०—बहुत खूब, परकुछ तो इस समय भी अपनी सेवा लीजिये ।

इस लिये कहता हूं जिसमें मेरा बेड़ा पार हो ।
कहता हूं कर जोड़ कर हरदम तुम्हारा प्यार हो ॥

श्रीतुल०—अच्छा जब आपकी ऐसी आग्रह है तो सुनिये, मुझे शीघ्र श्री काशीं पुरीमें पहुंचाइये, अपनी सवारीका रथ मंगाइये ।

बाद०—बहुत खूब, [वजीरसे] जल्द हमारी सवारी वा रथ तैयार करवाके लाओ उसीपर चढ़ाकर इन फकीर साहेबको काशी पहुंचाओ ।

वजी०—जो हुकुम। [सिर नाय वजीरका प्रस्थान]

बाद०—क्यों आपने मुझे अपना बनाया! मेरे अपराधोंको भुलाया!

श्रीतुल०—हां तुम्हारा कष्ट देख करके मुझे दया आई इसीसे मेरा क्रोध सब दूर हुआ!

बाद०—अब आप काशीजीसे फिर कब आवेंगे?

श्रीतुल०—जब श्री रघुनन्दन स्वामी लावेंगे!

बाद०—क्या फिर भी कभी आप मुझे अपने दर्शन करावेंगे?

श्रीतुल०—हाँ जब खुदाको आप अपने उपर मेहरबान बनावेंगे!

बाद०—क्या कभी हम भी खुदाका दीदार पावेंगे?

श्रीतुल०—जरूर, जब आप सच्चे दिलसे उसके राहमें मुहब्बतसे जावेंगे!

[बादशाहके सवारीके रथ आना उस पर श्री तुलसीदास-जीका सवार होना बादशाह वजीर सिपाही सबका उनको सर झुका कर हाथ जोड़ना श्री तुलसीदासजीका सबको आशीर्वाद देना रथका तेजीसे काशीजीके तरफ़ प्रस्थान]

वजीर—[बादशाहसे] हुजूर, जो मैंने कहाथा कि फकीर दयालु होते हैं, वह बात आपने पाया! सही देखनेमें आया?

बाद०—जीहाँ, वाकई तुम्हारा कहना दुरुस्त वो सही देखा।

[दोनोंका प्रस्थान]

सातवां दृश्य

—::※::※::—

[स्थान काशी पुरी]

[तहाँ रथपर चढ़े हुए श्री तुलसीदासजीका पहुंचना और रथवालेको इनाम देकर विदा करना रथ वालेका रथ लेकरके प्रस्थान करना]

श्रीतुल०—(हाथ जोड़) हे प्रभु ? अब मेरी हीन अवस्थापर नजर डालिये । आकरके शीघ्र मुझे सम्हालिये ?

बुलाता हुं दुःखी होकर हसी तुम्हरी जो नहीं ऐहो ।
बता देना यह पूछत हूं रूलाकर हमको क्या पैहो ॥
दीन अरू हीन हूं सब तरहसे देख लो तुमहीं ।
तब हमें भूलकरके कैसे दीनानाथ कहलैहो ।

[विनय सुनते ही श्रीरामचन्द्रजी भगवानका हाथमें धनुष और बाण लिये हुए श्री तुलसीदासजीके सन्मुख प्रगट होना, देखकर श्रीतुलसीदासजीका साष्टाँग उनके चरणोंमें पड़ जाना श्रीरामचन्द्रजीका उठाकर हृदयसे लगाकरके कहना]

श्रीराम०—प्रिय भक्तराज ? तुम आरत होकरके पुकारो, और मैं नहीं आऊं ? यह भला किस प्रकारसे हो सकता है ? सुनो ।

प्रेमी कहे तो होनीको अनहोनीकर देखलाय दूं ।
रंकको राजा पलहीमें राजाको रंक बनाय दू ॥

मुर्देको जिन्दा, जिन्दाको मुर्दाह पलमें कहाय दूं ।
बहु रुप धरके सेवकोंको सुखकी राह जनाय दूं ॥
सब तरहसे जान लो मैं भक्तोंके आधीन हूं ।
उनके हित को हरदम मनसे मैं लवलीन हूं ॥

श्रीतुल०—धन्य हो ? प्रभु आप धन्य है अब विना ऐसा हित सेवकोंका करनेवाला दूसरा कौन है ! उनके दुसह क्लेशोंको आप सिवाय हरनेवाला कौन हैं ?

तुम छाडि दूसरा है नहीं प्रभु हम शरिससे दीनको ।
जैसे अवधिसे सहारा एक जलका मीनको ॥
आपका सव विधीसे हूं मैं मोही सहारा आपका ।
और दूसरी गति नहीं तुलसी हो प्यारा आपका ॥

श्रीराम कहो अब आपको क्या दरकार है ? और आपकी कहां रहनेकी बिचार है ?

भक्तको देखे बिना बिश्राम मैं पाना नहीं ।
रहता हूं उनके पास में उन्हें छोड़ कही जाता नही ॥
इससे मैं कहता तुम्हें बतलाइये जो काम हो ।
सो कृपाकर लीजिये जिसमें तुम्हें आराम हो ॥

श्रीतुल०—दीजिये प्रभु कृपाकर तव भक्ति आठो याम हो ।
तुम्हरे भक्तोंमें प्रभुजी मेरा भी एक नामहो ॥

श्रीराम०—ऐसा ही हो वे सदा यह देता मैं वरदान हूं ।

श्रीतुल०—हें प्रभु ! कुछ और भी रूची रही ? पर शंकोचके वशमें होकरके नहीं कही ?

श्रीराम०—भक्तराज? शंकोच करनेका क्या काम है, तुमतो जानतेही हो कि मेरा भक्तवत्सल नाम है! जो रूची हो सो कहो।

श्रीतुल०—प्रभू आप मुझे गलेसे लगाइये और अपने धामको साथ ही ले चलिये!

श्रीराम०—बहुत अच्छा।

[श्रीरामजीका श्रीतुलसीदासजीको अपने गलेसे लगाना वो श्री तुलसीदासजीका हर्षित हो कर गाते हुए उनके साथ प्रस्थान]

[गाना]

देखोरे प्रेमी श्रीजानकीवर मैने पायो है।
रूची सब विधी पूरण भई हियेकी हरी गलसे लगायो है॥
नशे मोह त्रै ताप पराये हरी मृदु बचन सुनायो है।
अति शुन्दर झाकी यह करि करि नैनन लाभ कमायो है॥
पाप दोष सब मिटे ताहि छिन जब इनसे नेह लायो है।
पुरूषोत्तम प्रभु यही सुख दाता जासे मिलि हरषायो है॥

[गाते हुए पर्दाका गिरना]

तीसरा अङ्क समाप्त

यवनिका पतन